इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MSK-003

दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

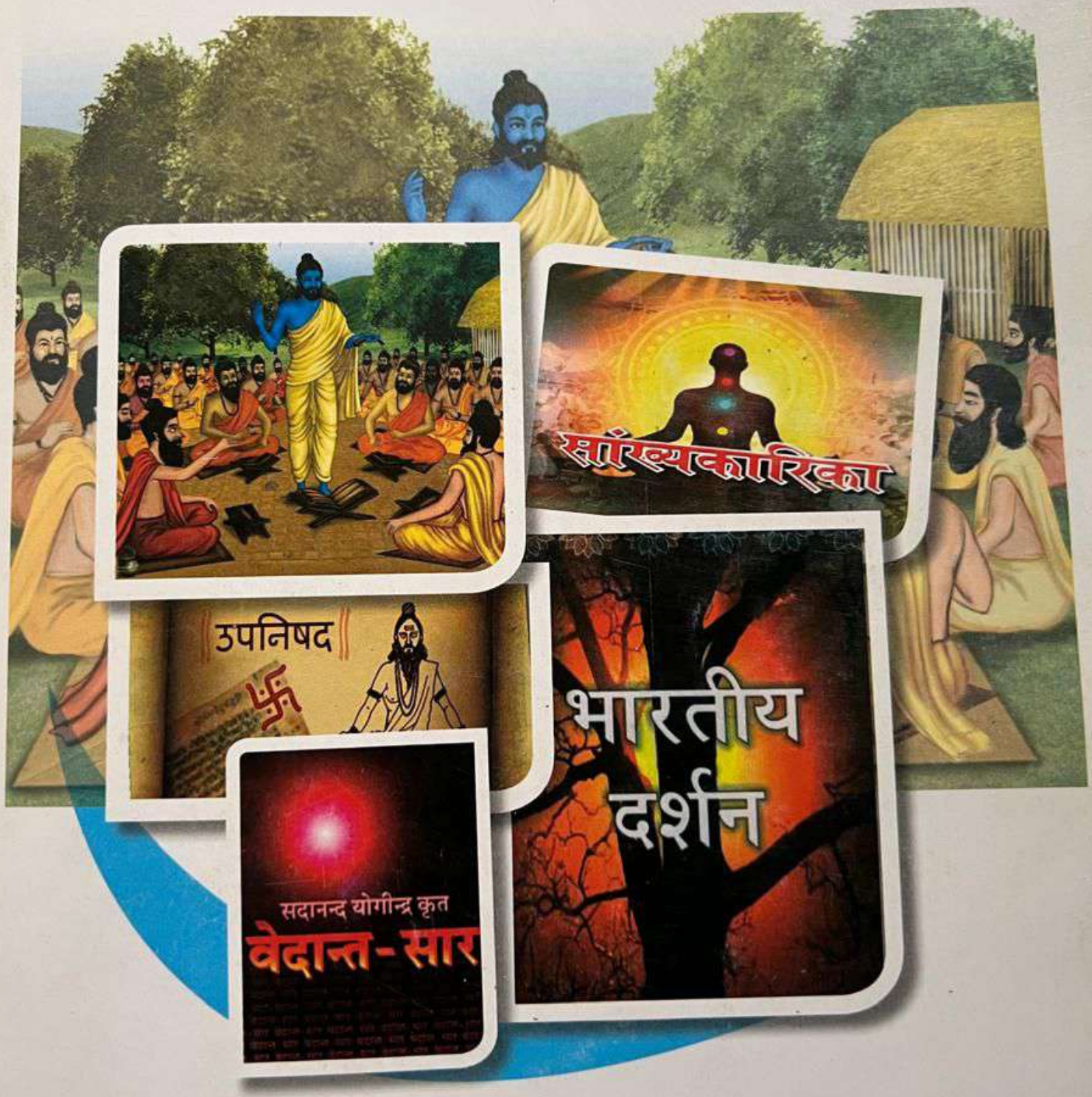

भाग–2

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MSK-003
दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

भाग 2

दर्शन : न्याय, वेदान्त, सांख्य और मीमांसा

खंड 4

सांख्यकारिका (ईश्वरकृष्ण) 3

खंड 5

अर्थसंग्रह (लौगाक्षिभास्कर) 131

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
भूतपूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।

प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी
भूतपूर्व कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

प्रो. दीप्ति त्रिपाठी
भूतपूर्व अध्यक्ष संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

प्रो. रमाकान्त पाण्डेय
प्रोफेसर, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

प्रो. सत्यकाम,
हिन्दी संकाय, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली।

कार्यक्रम संयोजक

प्रो. सत्यकाम,
प्रोफेसर, हिन्दी संकाय, मानविकी विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या
प्रो.मार्कण्डेय नाथ तिवारी प्रोफेसर, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।	16, 17, 19, 22
डॉ. अजय कुमार झा सहायक प्रोफेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	18, 21
डॉ. प्रमोद कुमार सिंह सहायक प्रोफेसर, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	20, 23
प्रो. शिवशंकर मिश्र प्रोफेसर, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।	24, 25, 26

पाठ्यकम संयोजक	पाठ्यक्रम सम्पादक
प्रो. सत्यकाम प्रो. जगदीश शर्मा	प्रो. जगदीश शर्मा प्रोफेसर, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज सहायक कुल सचिव (प्रकाशन) सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली	श्री यशपाल अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन) सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली

अक्टूबर, 2020

©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020

ISBN-978-93-90773-36-7

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर, C-206, A.F.Enclave-II, नई दिल्ली
मुद्रक : अरावली प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिषर्स प्रा. लि., डब्लू–30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–2, नई दिल्ली–110 020

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

Year : 2019 Month : Dec. Vol. 02

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Nani, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

प्रबन्ध-सम्पादक
विजय गुप्ता

अतिथि सम्पादक
डॉ. राजन कुमार गुप्ता

अतिथि सह-सम्पादक
डॉ. कृपाशंकर मिश्र

Year : 2019 Month : Dec. Vol. 02

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Nani, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 04, अंक : 02

प्रकाशन-मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष -
दिसम्बर 2019

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए. डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेल: vyutpatti12@gmail.com

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
* पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
* पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्तसदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (कुलपति)
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
- श्रीहरिकृष्ण शर्मा (पत्रकार)

विषय-विशेषज्ञपरीक्षकमण्डल

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय, जयपुर
- प्रो. हरेराम त्रिपाठी, दिल्ली
- प्रो. बिहारीलाल शर्मा, दिल्ली
- प्रो. जे. के. गोदियाल, श्रीनगर
- प्रो. धनञ्जय पाण्डेय, वाराणसी
- प्रो. विनय कुमार पाण्डेय, वाराणसी
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी, दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामविनय सिंह, देहरादून
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल, हरिद्वार
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी, दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा, कोटद्वार

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	आख्यानेषु पर्यावरणचिन्तनम्	प्रो. शिवशङ्करमिश्रः	01
2.	प्राकृतवाङ्मये आकाशद्रव्यस्य अवधारणा	डॉ० आनंद-कुमार-जैनः	05
3.	संस्कृतवाङ्मये वर्णितस्यायुर्वेदशास्त्रस्योपयोगिता	विजय गुप्ता	11
4.	संस्कृतसाहित्ये शैक्षिकतत्त्वचिन्तनम्	डॉ. जीवनकुमारभट्टराई	18
5.	पाणिनिव्याकरणे प्रक्रियामूलकश्चमत्कारः	राजू शर्मा	25
6.	शब्दतत्त्वनिर्वचनम्	जगत् ज्योति पात्रः	29
7.	विशिष्टाद्वैतप्रवर्तकः रामानुजाचार्यः	परमिन्दर कौर	37
8.	चार्वाक दर्शन में स्वीकृत मतों का....	कुमार त्रिवेदी	41
9.	भारतीय दर्शन में अन्तःकरण विमर्श	निराली	50
10.	यजुर्वेद में योग का स्वरूप	बलराम आर्य	56
11.	अथर्ववेद एवं आयुर्वेद सम्मत सर्पविष.....	खुशबू कुमारी	67
12.	श्रीमद्भगवद्गीता का सन्देश : निष्काम कर्मयोग	योगेश कुमार मिश्र	76
13.	आयुर्वेद की आचार्य परम्परा.....	सतीश कुमार	83

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

44 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाईमासाङ्कः) 2019

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः
शोधसहायकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
(राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए' श्रेण्या प्रत्यायितः, मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

हिन्दी विभाग

8.	संस्कृत कविता का प्राचीन एवं नवीन परिदृश्य	**प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र**	62-77
9.	भारतवर्ष में लेखनकला का उद्भव एवं विकास	**प्रो. शिवशङ्कर मिश्र**	78-85
10.	मम्मटीय काव्यप्रयोजन : एक समीक्षा	**डॉ. मुकेश कुमार मिश्र**	86-101
11.	वास्तु के वैदिक सिद्धान्त एवं वर्तमान में वास्तुकला की प्रासंगिकता	**डॉ. नीलम त्रिवेदी**	102-114
12.	अनेकान्तवाद : एक सापेक्षात्मक व्यावहारिक दृष्टिकोण	**डॉ. अनुभा जैन**	115-123
13.	आधुनिक संस्कृत कविताओं में स्त्री-जीवन	**डॉ. कमलेश रानी**	124-130
14.	आधुनिक संस्कृत कविताओं में लोकजीवन	**डॉ. राजमङ्गल यादव**	131-138

English Section

15.	Body is a Temple	**Dr. Sumitra Bhat & Smt. Uma K.N.**	139-144
16.	Bankimchandra Chattopadhyay and the Concept of Dharma	**Sujay Mondal**	145-152

UGC - CARE Listed
जुलाई-सितम्बर, 2019

शोधप्रभा
वर्ष : 44, तृतीयोऽङ्कः

भारतवर्ष में लेखनकला का उद्भव एवं विकास

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र*

सृष्टि की उत्पत्ति के बाद मनुष्यों की तर्कक्षमता जैसे-जैसे विकसित होती गयी अनेक प्रकार के प्रश्न उनके सामने आते गये। सृष्टि, जीव, जन्म, मृत्यु, मोक्ष, ईश्वरादि विषयक अनेक प्रकार की जिज्ञासायें उनके मन में उठीं तथा तद्विषयक अनेक खोज भी हुए। परिणामस्वरूप विविध ज्ञान उनकी बुद्धिगृह में संगृहीत होते गये। आचार्यों ने इस ज्ञानसम्पदा को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए शिष्यों-प्रशिष्यों को दिया तत्पश्चात् उन्होंने भी आगे आने वाले शिष्यों में स्थानान्तरण कर दिया इसी प्रकार क्रमशः आगे भी, लेकिन एक समय ऐसा भी आया जब यह परम्परा सुदृढ़ नहीं रही और धीरे-धीरे ज्ञान का क्षय होने लगा तो आचार्यों ने जिस माध्यम से इस ज्ञानसम्पदा का संरक्षण किया वह माध्यम ग्रन्थ लेखन एवं ग्रन्थ सम्पादन के रूप में सुप्रसिद्ध हुआ विभिन्न वस्तुओं से लेखन सामग्रियों का निर्माण किया तथा अपने ज्ञान का संरक्षण किया। लेखन की उत्पत्ति कब हुई? यह प्रश्न प्रायः प्रत्येक विद्वान् के अन्तर्मन में चलता रहता है। भारत में लेखन का उद्भव, विकास तथा इतिहास क्या रहा है? एतद् विषयक अनेक प्रश्न उठते हैं जिनका समाधान प्रस्तुत लेख का प्रतिपाद्य है।

शिशु के हाथ में जब कलम या पेन्सिल पकड़ायी जाता है तो वह टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ बनाता है जिसका कोई अर्थ नहीं, उसके हाथ रंग लग जाता है वह अनबुझ आकृतियाँ बनाता है, लेकिन जब उसका मस्तिष्क एवं शरीर की मांसपेशियाँ हृष्ट-पुष्ट हो जाती हैं तब वह समाज में व्यवहृत शब्दों की आकृति समझ पाता है एवं लिख भी लेता है। इससे ज्ञात होता है कि लेखन का विकास चित्रलिपि से ही हुआ है। अनेक गुफाओं में तत्कालीन विभिन्न संस्कृतियों के चित्र मिलते हैं जो अपनी भावनाओं को प्रदर्शित करने के एक अच्छे साधन थे। चित्रलिपि के बाद आरेखलिपि रही होगी जो कुछ रेखाओं से ही बन जाती थी ये भी चित्रलिपि की तरह विचार-भाव प्रदर्शन का एक साधन थी। वस्तुतः चित्रलिपि एवं आरेखलिपि एक ही हैं किन्तु विद्वद्गण अपनी इच्छानुसार इन्हें अलग-अलग भी मान लेते हैं। कालान्तर में आरेखलिपि ने ही शनैः-शनैः ब्राह्मीलिपि का रूप धारण कर लिया।

---

*शोधविभागाध्यक्ष,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

44 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबरमासाङ्कः) 2019

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्
(राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए' श्रेण्या प्रत्यायितः, मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

हिन्दी विभाग

10.	वैदिक एवं बौद्धकालीन स्त्रीशिक्षा की प्रासंगिकता	**प्रो. रमेश प्रसाद पाठक**	53-65
11.	आख्यान : स्वरूप एवं महत्त्व	**प्रो. शिवशङ्कर मिश्र**	66-73
12.	कैय्यट एवं प्रभाकर का भाषादर्शन को अवदान	**डॉ. ए. सुधा**	74-82
13.	मृच्छकटिक में वर्णित समाज	**डॉ. मुकेश कुमार मिश्र**	83-105
14.	रामायण में वर्णीत दैव-खण्डन एवं पुरुषार्थ	**डॉ. राजमंगल यादव**	106-112
15.	प्रमाणों में अर्थापत्ति की अवधारणा	**डॉ. निशा रानी**	113-118
16.	पातञ्जलयोगदर्शन में वर्णित योगाङ्गों में कार्यकारणभाव विमर्श	**श्री विजय गुप्ता**	119-125
17.	कालिदास की कृतियों में जीवनकला	**डॉ. बी. जी. पटेल**	126-130

English Section

18.	Methodology of textual Criticism of Sanskrit Manuscripts: A study	**Dr. Sachchidanand Snehi**	131-138
19.	Aryabhata - Outlines of Life And Contributions	**Shri V. Ramesh Babu**	139-150

UGC - CARE Listed
अक्टूबर-दिसम्बर, 2019

शोधप्रभा
वर्ष : 44, चतुर्थोऽङ्कः

आख्यान : स्वरूप एवं महत्त्व

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र *

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है, इसका अत्यन्त विपुल वाङ्मय है। यह देवगिरा, देववाणी, सुरभारती, दैवीवाक् आदि संज्ञाओं से सम्बोधित की जाती है। इसके सुरभारती होने का अर्थ यह है कि यह सर्वथा दोषरहित सुसंस्कृत भाषा है, इसकी शुद्धता पवित्रता इस सीमा तक है कि देवता भी इसी भाषा में व्यवहार करते हैं। महाकवि दण्डी ने संस्कृत की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया है-

संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः।[1]

What We Call Sanskrit is the divine language, as commented upon by the great sages.

संस्कृत सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान की जननी है इसमें सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, रामायण, महाभारत, अष्टादश पुराण, उपपुराण, षड्दर्शन, वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष) काव्य, नाटक, गद्य-पद्य, आख्यान, प्रहेलिका प्रभृति विद्याएँ सन्निहित हैं जो प्राचीनता के कलेवर में अत्यन्त आधुनातन एवं प्रासंगिक हैं।

हमारे ऋषियों एवं आचार्यों ने ज्ञान, विज्ञान, धर्म, अध्यात्म, संस्कृति, दर्शन एवं मानवीय मूल्यों की शिक्षा हेतु तथा ज्ञान की दृढ़ता हेतु विभिन्न शिक्षिण पद्धतियों का आविष्कार किया था, जो जीवन के लिए अनिवार्य आचरणीय तत्त्व रहे हैं जिन्हे धर्म से जोड़कर जीवन के लिए अपरिहार्य तत्त्व के रूप में प्रतिष्ठित किया। इसी प्रकार किसी दुरूह विषय को सरलतम शब्दों में समझाने के लिए कहानी पद्धति (Story Mathod) का आविष्कार किया। यह कहानी पद्धति ही आख्यान, आख्यायिका, कथा आदि शब्दों से प्रतिपाद्य है। आख्यानों का उपदेश मानवजाति के समग्र कल्याण तथा विश्वमंगल की अभिवृद्धि के निमित्त है।

''आख्यान'' शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मण में ''शुनः शेप आख्यान'' के प्रसंग में आता है। यहाँ प्रयुक्त ''आख्यानविद्'' शब्द आख्यान की सत्ता को प्रमाणित

---

*शोध विभागाध्यक्ष, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली-110016

1. काव्यादर्श 1/32

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

45 वर्षे प्रथमोऽङ्कः (जनवरीमासाङ्कः) 2020

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

संस्कृतं भारतस्य जीवातुभूतं तत्त्वम्। अस्यां भाषायां विराजते विपुलं ज्ञानवैभवम्। अस्मिन् वाङ्मयेऽनुस्यूतं सकलमपि जीवनमूल्यं, निखिलमपि व्यवहारतत्त्वम्। कथं वयं जीवाम:? कथं वयमाचराम:? कथं वयं व्यवहराम:? किमस्त्यस्माकं लक्ष्यम्? किं कर्म? किमकर्म? किं हानम्? किमुपादेयमेतत् सर्वं सम्यगुपदिशति सुरभारती देववाणीसंस्कृतम्।

पुरा अस्माकं देशस्यासीत् किमप्यपूर्वं गौरवमिह जगति। तत्र हेतुरासीत् जनमानसे संस्कृतस्य व्यापकत्वेन प्रभाव:। एतत्प्रभावादेव मौलिभूतं स्थानमासीदस्माकमिहावनितले। ऋषीणां वैशिष्ट्यं, मुनीनां महत्त्वं, गुरूणां गुरुत्वम्, आचार्यणामाचार्यत्वमेतत्प्रभावादेव प्रसिद्धयति। संस्कृतमन्तरा क्व संस्कृति:? क्व संस्कार:? क्व सदाचार:? क्व च शुचिता इति?

संस्कृतस्य गुरुत्वादेवासीदास्माकं गौरवम्। इयमस्मान् प्रतिपदं संस्करोति शिक्षयति च कथं पितृभ्यां सह प्रभवाम:? आचार्येण सह कथमाचराम:? भ्रातृभि: भगिनीभिश्च सह कथं भवाम:? तरुगुल्मलताकीटपतङ्गप्रभृतिप्राणिभिस्सह कथं वर्तामहे? एतत्सर्वमत्यन्तं सारल्येन मृदुवचनेन चोद्बोधयति। भारतीयानां जीवने प्रतिपदं संस्कृतस्य महानुपकार:। इयं विद्या कल. पतलतेवास्माकं जीवने सर्वमभीष्टं संसाधयति। वसुधैव कटुम्बकम्, संगच्छध्वं संवदध्वम्, सर्वे भवन्तु सुखिन:, मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु इत्यादिवचनपुञ्जैर्विज्ञापिताया: विश्ववन्धुत्वभावनाया: चिन्तनमेतस्या: सर्वातिशयत्वं द्योतयति।

अत: सर्वैरपि मानवै: आत्मगौरवाय, विश्वकल्याणाय, सुखाय, शान्त्यै, समृद्ध्यै च संस्कृतं सततं पठनीयं, चिन्तनीयं, मननीयम्, आश्रयणीयञ्च।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुर-शास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका ''शोधप्रभा''। इयं विगतेभ्य: द्वि चत्वारिंशद्वर्षेभ्य: नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसंन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तनप्रकर्षप्रकाशनाय अनुद्घाटितज्ञानवैभवस्योद्घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वास:।

शोधप्रभाया: प्रकृतेऽस्मिन्ङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिता: अष्टादशशोधनिबन्धा: प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नै: नदीष्णै: सुधीभि: अनुसंन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्चान्वेषणमनुष्ठितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसंन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभाया: 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयानोऽहं निकषधिषणापूरित-विषयवस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् सुमनस: मनीषिण:।

प्रो. शिवशङ्करमिश्र:
शोधविभागाध्यक्ष:

विषयानुक्रमणिका

संस्कृतविभागः

1.	महाभारतान्तर्गतवेदान्ततत्त्वपरामर्शः	**डॉ. रा. सुब्रह्मण्य भिडे**	1-5
2.	छान्दाकग्योपषिद् ब्रह्मस्वरूपम्	**डॉ. संयोगिता**	6-10
3.	नैषधमहाकाव्ये सांख्ययोगतत्त्वविमर्शः	**डॉ. जीवनकुमार भट्टराई**	11-15
4.	'इत्थंभूतलक्षणे' इति सूत्रप्रवृत्तिविचारः	**डॉ. प्रदीपकुमारपाण्डेयः**	16-26
5.	श्रीमद्भागवते छन्दोविमर्शः	**प्रो.. मखलेशकुमारः**	27-36
6	आचार्याभिनवगुप्तस्य काव्यशास्त्रीयसिद्धान्तानां शास्त्रीयसन्दर्भाः	**श्रीरमेशचन्द्रनैलवालः**	37-40
7.	आयुर्वेद-ज्यौतिषशास्त्रदृष्ट्या हृद्रोगनिदानम्	**डॉ. सुभाषचन्द्रमिश्रः**	41-46
8.	श्रुतिनिगदितस्य सुसहसिद्धान्तस्य मानवश्रेयः साधनताया विमर्शः	**डॉ. अनुला मौर्या** **डॉ. दिव्या मिश्रा**	47-53
9.	समासान्तविषये प्राच्यनव्ययोः मतभेदविचारः	**डॉ. अरविन्दमहापात्रः**	54-59
10.	सूत्रभेदकोटिषु परिभाषावचनानि : एकमध्ययनम्	**डॉ. गिरीधारीपण्डा**	60-67
11.	आधुनिकसंस्कृतसाहित्ये परिलक्षिता : विश्वबन्धुत्व भावना	**डॉ. शिप्रा राय**	68-71
12.	कालिदासकृतिषु दीपशिखाचित्र-प्रयोग-समिक्षा	**डॉ. शुभश्री दासः**	72-81

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

45 वर्षे द्वितीयोऽङ्कः (अप्रैलमासाङ्कः) 2020

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

संस्कृतं भारतीयसंस्कृतेः आत्मतत्त्वम्। संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः। एतत्प्रभावादेव निखिलेऽस्मिन् जगति प्रतिष्ठतास्माकं भारतीया संस्कृतिः। भारतीयसंस्कृतेः वैभवाद् कृत्स्नेऽपि नभसि भारतस्य गौरवपताका दोधूयमाना विराजते। इयं च संस्कृतिः संस्कृतं विना सर्वथा निष्प्राणभूता। अतो भारतस्य ज्ञानवैभवम्, भारतस्य गुणगणगौरवम्, भारतस्य विपुलमैतिह्यम्, भारतीयं जीवनं, चरित्रं, शस्त्रं, शास्त्राञ्चावबोद्धुमेकमेव यत् श्रेष्ठतमं साधनं वरीवर्ति, तदस्ति संस्कृतम्।

संस्कृतमाध्यमेनैव भारतस्य विस्तरेण परिचयः प्राप्तुं शक्यते। भारतं यैर्गुणनिचयैः स्वस्मिन् माहात्म्यमवधारयति, विश्वेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमावहति तत्सर्वमत्र देववाणीतः समागतम्। किं बहुना भारतस्य व्याख्या परिभाषा च संस्कृतेनैव व्याख्यातुं पार्यते नान्यथा, अतएवोच्यते-

संस्कृतेनैव सुसम्पुष्टं भारतं भारतमुच्यते। संस्कृतेन विना देशः केवलं चेण्डियोच्यते॥
उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

संस्कृतमस्मासु संस्कारं जनयति, ऐक्यं सम्पादयति, विश्वबन्धुत्वं स्थापयति, मित्रभावं परिष्करोति संगच्छध्वं संवदध्वम् इति भावं दृढ़ीकरोति, सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु इत्यौदार्यं सन्दिशति किमधिकं सर्वत्र शान्तिसंस्थापनाय, अहिंसा-सत्य-अस्त्येय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहभावानां विस्ताराय, शौच-सन्तोष-तपः- स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानाय भारते संस्कृतमेवानितर-साधारणसाधनं सम्भवति। इयमत्यन्तं लोकोपकारिका, अमृतसमा, माधुर्यसंवाहिका, कर्णौ सुखं ददती आत्मन्याह्लादं जनयति, लोकं ददाति लोकोत्तरञ्च संसाधयति अतएवोद्घोषितं केनचित् कविना- **अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं हि ततोऽधिकम्।**

देवभोग्यमिदं तस्माद्देवभाषेति कथ्यते॥

सम्प्रति भारतसर्वकारः संस्कृतस्य संरक्षणाय संवर्धनाय च बद्धपरिकरो दृश्यते। अचिरमेव भारतसर्वकारेण सम्पूर्णेऽस्मिन् विश्वपटले संस्कृतगर्भे विद्यमानानां योगा युर्वेदादिविद्यानाम् अमूल्यनिधेश्च प्रकाशनाय वैश्विकप्रचाराय च 5122 युगाब्दे 2077 तमे प्रमादी नाम विक्रमसंवत्सरे चैत्रमासि शुभे शुक्ले पक्षे प्रतिपत्तिथौ विशिष्य भारतीयनववर्षस्यादिमे दिवसे दिल्लस्थं श्री लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, देहलीस्थं राष्ट्रीयसंस्कृत संस्थानम्, तिरुपतिस्थं राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठौमति त्रयोऽपि मानितविश्वविद्यालयः केन्द्रीयसंस्कृत-विश्वविद्यालयानेन पष्टिकृताः। कथं संस्कृतस्य वातावरणं सर्वत्र सम्भवेत्? कथं संस्कृतं जनभाषा भवेत्? कथं संस्कृतसम्भाषणे सामान्योऽपि जनः दक्षो भवेत्? इति विषये निरन्तरं चिन्तयन्ती संस्कृतभारती अहर्निशं कार्यं करोति। तस्य प्रभावोऽपि समाजे दरीदृश्यते जनाः अल्पाभ्यासेनापि अत्यन्तं सारल्येन संस्कृतसम्भाषणे दक्षाः भवन्ति। सन्देशोऽयं मनः आत्मानञ्च नितरां सन्तोषयति।

डॉ. शिवशङ्करमिश्रः,
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमणिका

संस्कृतविभागः

1.	अर्थनिर्धारणे वैदिकस्वराणां वैशिष्ट्यम्	**प्रो. रामानुज उपाध्यायः**	1-4
2.	आइ.ए.रिचर्ड्सप्रतिपादितानां काव्यशास्त्रीयसिद्धान्तानां विमर्शः	**प्रो. सुमनकुमारझाः**	5-15
3.	न्यायवैशेषिकदर्शनयोः लौकिकन्यायानां शिक्षणप्रविधिरूपेण प्रयोगः	**डॉ. अनीता राजपालः**	16-24
4.	मेघदूते स्त्रीवाचकपदानां वैशिष्टयम्	**डॉ. बी. बी. त्रिपाठी**	25-30
5.	श्रीमद्वाल्मीकिरामायणे राजपोषितानि वनान्युपवनानि च	**डॉ. गोपालकुमारझा**	31-37
6.	सहशब्दशक्तिनिर्णयः व्युत्पत्तिवाददिशा	**डॉ. बालमुरुगुन् रविचन्द्रः**	38-45
7.	वेदविज्ञाने षोडशकलः	**डॉ. लक्ष्मीकान्तविमलः**	46-55
8.	पुराणवाङ्मये वर्णितानां सदाचाराणां विश्लेषणम्	**श्रीमतिः प्रियंवदा काफ्ले**	56-72
9.	प्रमाणमञ्जर्यामिन्द्रियाणां स्वरूपविमर्शः	**श्रीनवीनकुमारः**	73-77

e-mail:sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

जनवरी, 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि0' की मासिक पत्रिका

लोकसभा में सर्वसम्मति से विधेयक पारित केन्द्रीय 'संस्कृत विश्वविद्यालय'

एक ऐतिहासिक निर्णय

वर्ष : 6 अंक : 8 (68)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 लोकसभा में सर्वसम्मति से विधेयक पारित केन्द्रीय 'संस्कृत विश्वविद्यालय' एक ऐतिहासिक निर्णय

संस्कृतविद्वत्सम्मानसमारोहे पुरस्कृताः भविष्यन्ति देशस्य ख्यातिलब्धाः विद्वांसः 04

07 यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्
विजय गुप्ता

अकालपुरुष शब्दविचार 10
डॉ० दिनेशकुमारगर्गः

12 आचार्य मम्मट कृत काव्यभेद समीक्षा
डॉ० जीवन कुमार भट्टराई

सम्पादकीयम्

अचिरमेव नूनतख्रिष्टाब्दः आरभ्यते। समागतेऽस्मिन् नूतने वर्षे संस्कृतसेवार्थं संस्कृतस्य संरक्षणाय विकासाय च वयं संस्कृतसेवकाः संकल्पवद्धा भवेम। संस्कृतस्य विकासदृष्ट्या वर्तमानवर्षः अतीवोत्तमः आसीत्। वर्षेऽस्मिन् अखिलभारतीय-संस्कृतसाहित्यसम्मेलनेन संस्कृतसेवनपराः अनेके विशिष्ट-कार्यक्रमाः समायोजिताः। यथावसरं विदुषां विशिष्टं व्याख्यानं, संस्कृतसप्ताहस्यायोजनम्, अवसरविशेषे अन्येऽपि कार्यक्रमाः सञ्चालिताः। वर्तमानवर्षस्येका इयमप्युपलब्धिः यद् संस्कृतभारतीसंगठनेन नवदेहल्यां संस्कृतभारतीविश्वसम्मेलनं समायोजितं, यत्र पञ्चसहस्रशोऽप्यधिकाः प्रतिभागिनः देशेभ्यः विदेशेभ्यश्च समागत्य संस्कृतप्रचाराय प्रसाराय च परस्परं चर्चामकुर्वन्। अयं कार्यक्रमः संस्कृतसमुपासकानां कृते अत्यन्तं प्रेरणाप्रदः आसीत्। वर्षस्यावसाने दिसम्बरमासे भारतसर्वकारेणापि द्वादशदिनाङ्के संस्कृतस्योन्नयनाय श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रिय-संस्कृतविद्यापीठम्, नवदेहली, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली, तिरुपतिस्थराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् एतेषां त्रयाणां मानितविश्व-विद्यालयानां केन्द्रीयविश्वविद्यालयरूपेण प्रतिष्ठापनार्थं लोकसभायां प्रस्तावः ध्वनिमतेन पारितः। प्रसङ्गोऽयं समेषां संस्कृतज्ञानां संस्कृतानुयायिनां संस्कृतसपर्यासमर्पितानां जनानां कृते अत्यन्तं मोदावहः। सर्वकारस्यायं निर्णयः वस्तुतः ऐतिहासिको विद्यते यतोहि सम्प्रति समस्तेऽपि विश्वे विभिन्नेषु विश्वविद्यालयेषु संस्कृतस्याध्ययनमध्यापनञ्च प्रचलति परञ्चास्माकं देशे यत्र संस्कृतस्य देवभाषारूपेण समादरः, ''संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः'' इत्यादि वचनं यत्र सुप्रसिद्धं तत्र एतावता एकोऽपि संस्कृतविश्वविद्यालयः केन्द्रसर्वकारेण केन्द्रीय-संस्कृतविश्वविद्यालयत्वेन न संस्थापितः अतः सर्वकारस्याय-मैतिहासिको निर्णयः समेषां कृते महते प्रमोदाय प्रकल्प्यते, सर्वेषु संस्कृतप्रियेषु अस्ति महान् प्रमोदः प्रवहति च सर्वत्र विद्वत्सु प्रमोदकरी प्रेमानन्दलहरी।

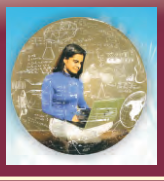

15 मनस् चिकित्सा विज्ञान में आयुर्वेद का योगदान
निराली

वर्तमान में गीता की प्रासंगिता 19
रामजीत यादव

वार्ताः 22

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

e-mail:sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

फरवरी, 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि0' की मासिक पत्रिका

सरस्वति नमस्तुभ्यम्
वरदे कामरूपिणि ...
विद्यारम्भं करिष्यामि
सिद्धिर्भवतु मे सदा ...

वर्ष : 6 अंक : 9 (69)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 संस्कृतसाहित्यस्य अनितरसाधारणवैशिष्ट्यम्
राजूशर्मा :

काव्यप्रकाशस्थगुणी-भूतव्यंग्यभेदोपजीव्यत्वम् 08
रविकान्तो भारद्वाजः

13 भगवानेव गुरुः (भगवान ही गुरु हैं)
डॉ0 दिनेश कुमार गर्ग

दशावतारचरितम् महाकाव्य का दार्शनिक वैशिष्ट्य 15
मधु राजपूत

सम्पादकीयम्

सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणि।
विद्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा॥

अस्माकं भारतीयज्ञानपरम्परायां 'वसन्तपञ्चमी' तिथिः भगवत्याः वाग्देव्याः सरस्वत्याः जन्मतिथिरूपेण अभिमन्यते। अस्मिन् वसन्तपर्वणि विद्याध्ययनतत्पराः विद्योपासकाः छात्राः विद्याप्राप्तिकामनया भगवतीं भारतीं नूनं समर्चयन्ति। ऋग्वेदे इयं देवतानां साम्राज्ञी इति रूपेण वर्णिता। अस्याः वर्णनं न केवलं ऋग्वेदेऽपितु यजुर्वेदे, उपनिषत्सु, पुराणेषु, अन्येषु च धर्मग्रन्थेषु बहुधा सम्प्राप्यते। उपनिषत्सु मातुः सरस्वत्याः वाग्तत्वेन सहैक्यप्रतिपादनपुरस्सरं मधुरवाक्तत्वप्राप्तये प्रार्थना परिकल्पिता।

भगवतीं भारतीमभिलक्ष्य नैकैः कविभिरत्यन्तं मधुरं दिव्यञ्च वर्णनं कृतम्। तत्रात्यन्तं सुप्रसिद्धौ अमूश्लोकौ

- या कुन्देन्दु तुषारहारधवला .....।
- शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमां .....॥

पुनश्चायमपि श्लोकः भगवत्याः समर्चने अत्यन्तं सुप्रसिद्धः -

करेण वीणा परिवादयन्तीं
तथा जपन्तीमपरेण माला।
मरालपृष्ठासनसन्निविष्टां
सरस्वतीं तां शिरसा नामामि॥

भगवत्याः वाग्देव्याः वीणावादनं (संगीतकलाकौशलं द्योतयति) मालाधारणं (जपः तपश्च वैशिष्ट्यं विवेचयति) तपः विना न कल्याणसिद्धिरित्युपदिशति, पुस्तकधारणं (ज्ञानस्य महत्त्वं मण्डयति), ऋते ज्ञानान्नमुक्तिरिति मतं दृढ़ीकरोति, मरालपृष्ठासनं (सदसद्विवेकं बोधयति), यतोहि हंसः सारं (तत्त्वं) गृह्णति, तस्य नीरक्षीरविवेकात्मकं वैदग्ध्यं सर्वत्र सुप्रसिद्धम् -

- यत्सारभूतं तदुपासनीयं हंसो यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।
- न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः।

मातुर्हस्ते कमण्डलुः विराजते (अयं प्रतीकः अपरिग्रहस्य) अर्थात् परिग्रहेण मोहः, परिग्रहस्य च संरक्षणे क्लेशः अतः सुखाय, शान्तये चापरिग्रहः परमावश्यकः। एवमेव मातुर्स्वरूपवर्णने तस्याः शुभ्रवर्णः, शुभ्रवस्त्रधारणं पवित्रतायाः, शुद्धतायाः, विद्यायाः, शान्तेश्च प्रतीकभूतम्।

एवं दिव्यगुणगणैरन्विता मा भगवती सरस्वती स्वकीयेन श्रृंगारवैभवेन सकलान् जीवान् सन्दिशति यत् समेषां मानवानां जीवनं, शुद्धं, पवित्रं, सङ्गीतमयं, कलामयं, जपतपमयं, अपरिग्रहमयं निरन्तरं ज्ञानमयञ्च भवत्विति भावः।

18 आधुनिक संस्कृत साहित्य और अवसाद (डिप्रेशन) का समाधान
हेमलता रानी

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

e-mail:sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

मार्च, 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि0' की मासिक पत्रिका

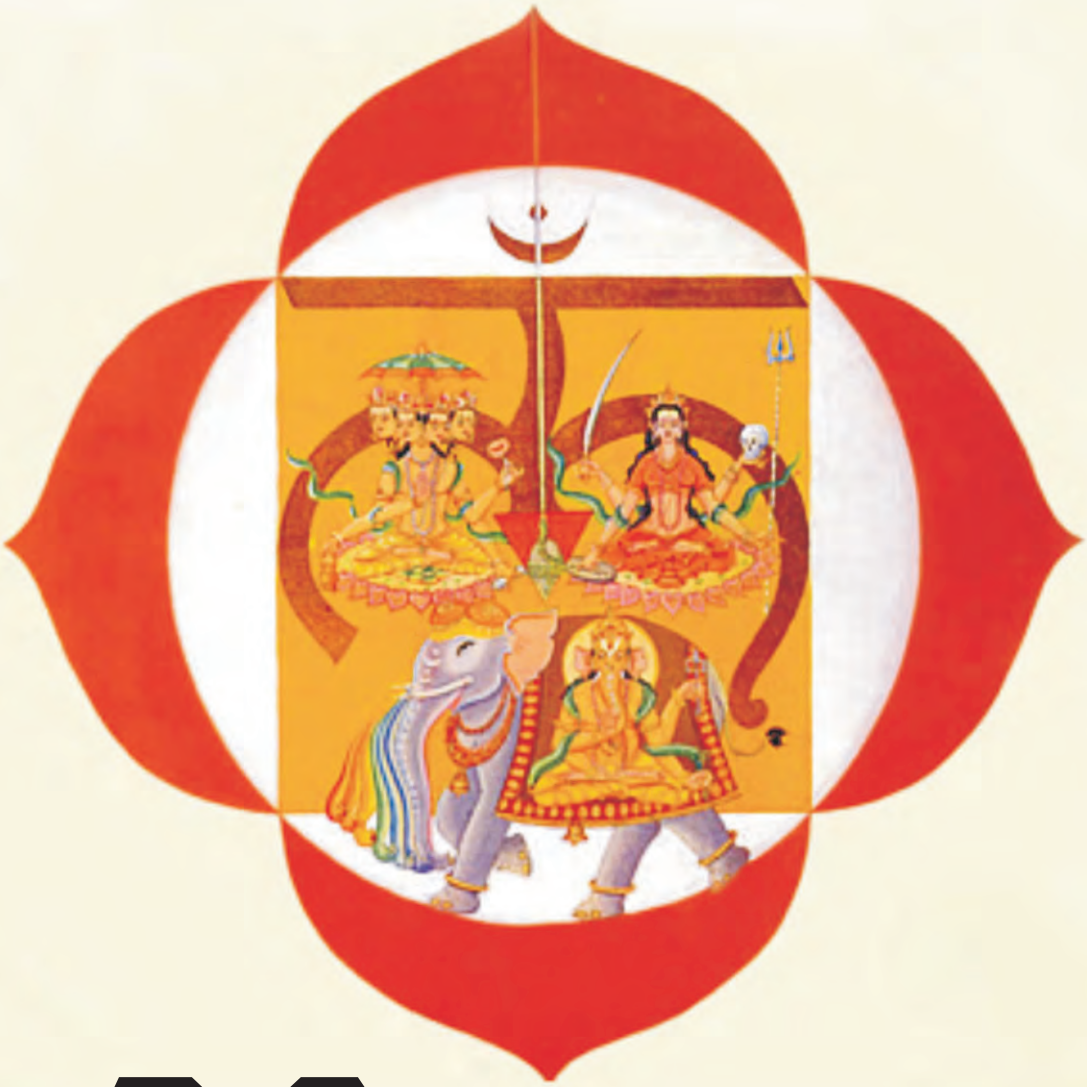

Mantra

वर्ष : 6 अंक : 10 (70)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 वेदार्थप्रतिपादन में मीमांसाशास्त्र की भूमिका
विद्यावाचस्पति डॉ. सुन्दरनारायणझा

संस्कृतभाषा की जीवन्तता एवं प्रासंगिकता 06
डॉ. छोटू कुमार मिश्र

09 मानस में भरत महिमा
योगेश कुमार मिश्र

पुराणों में श्रीकृष्ण लीला 11
डॉ. जगदीश भारद्वाज 'सम्राट'

सम्पादकीयम्

'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते' इति वचनं प्रतिवर्षं प्रमाणयति अखिलभारतीयसंस्कृतसाहित्य-सम्मेलनम्। समग्रेऽस्मिन् देशे यत्र कुत्रापि संस्कृतमातुः समर्चने समर्पितमानसाः मनीषिणः विद्यन्ते तानन्विष्य सम्मेलनमिदं सश्रद्धं सम्मानयति। अस्मिन्नपि वर्षे विद्वन्निर्णायकैः विदुषां समग्रं संस्कृतसेवनवृत्तं विलोक्य पुरस्कारार्थं येषां नामानि स्वीकृतानि तेषु गोस्वामी-गिरिधारीलाल 'संस्कृतगौरव' पुरस्काराय ज्योतिष-वास्तुक्षेत्रे महान्तं कार्यं कुर्वाणाः उत्तराखण्डसंस्कृतविश्व-विद्यालयस्य कुलपतयः प्रो. देवीप्रसादत्रिपाठिमहोदयाः, श्रीमतीशीलादीक्षित 'संस्कृतश्रीः' सम्मानाय व्याकरणशास्त्रे नवीनं योगदानं विहितवत्यः राष्ट्रपतिसम्मानेन सम्मानिताः प्रो. पुष्पादीक्षितमहोदयाः, संस्कृतभूषणपुरस्काराय च व्याकरणशास्त्रे राजशास्त्रे काव्यसर्जने च नितान्तं दक्षाः विनयशीलसम्पन्नाः युवानः प्रो. दिनेशकुमारगर्ग-महोदयाश्च विद्यन्ते।

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठस्य अथ च अखिलभारतीयसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनस्य संयुक्तायासेन समायोजिते स्वर्णजयन्तीसदनस्य सभागारे विद्वन्महोत्सवे श्रीमन्तः मानवसंसाधनविकासमन्त्रिणः डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' महोदयाः समागत्य विदुषः अभिनन्दनपूर्वकं ससम्मानेन सभाजितवन्तः। अवसरेऽस्मिन् दिल्लीसंस्कृतसंस्थानां प्रमुखाः संस्कृतविभागानां प्रमुखाश्च संस्कृतसंवर्धनार्थं संरक्षणार्थं च समर्पितधियां मन्त्रिमहोदयानाम् अभिनन्दनं विदुषां सम्माननञ्च सम्पाद्य कार्यक्रमस्य गौरवं वर्धितवन्तः। कार्यक्रमोऽयं निष्प्रत्यूहतया सुसम्पन्न इति निवेदयन् निश्चप्रचं हर्षमनुभवति सम्मेलनपरिवारः।

सम्पादकः

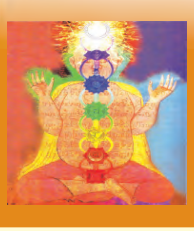

15 Mantra
Pt. R.K. Sharma

19 वार्ताः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

Year : 2020 Vol. 01-02 Month : Jul & Dec.

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह–सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

प्रबन्ध–सम्पादक
विजय गुप्ता

अतिथि सम्पादक
डॉ. राजन कुमार गुप्ता

अतिथि सह–सम्पादक
डॉ. कृपाशंकर मिश्र

Year : 2020 Vol. 01-02 Month : Jul & Dec.

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 05, अंक : 01-02 (संयुक्ताङ्क)

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
दिसम्बर 2020

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. रामनारायण द्विवेदी

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेलः vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
* पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
* पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल
(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (कुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड
- श्रीहरिकिशन शर्मा (पत्रकार), इण्डियन एक्सप्रेस

शोधपत्र समीक्षा समिति
(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय,
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- प्रो. जे. के. गोदियाल,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग,
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा,
  राज. महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह,
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल,
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा,
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

व्युत्पत्ति

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	मिथिलायाः श्रौतयागपरम्परा	डॉ. सुन्दरनारायणझा	01
2.	आयुर्वेदग्रन्थेषु साङ्ख्यदृष्ट्या तत्त्वनिर्धारणम्	विजय गुप्ता	08
3.	कृषिकर्मणि वृक्षायुर्वेदस्य योगदानम्	श्रीखेमराजरेग्मी	14
4.	निर्दिश्यमानस्यादेशा भवन्तीति परिभाषार्थविमर्शः	रत्नेशकुमारत्रिवेदी	20
5.	विचारसागरदिशा मोक्षस्वरूपविमर्श	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र	23
6.	माघकाव्य में निहित योगतत्त्व का विवेचन	डॉ. जीवनकुमार भट्टराई	29
7.	उपनिषदों में योग का स्वरूप	डॉ.रमेश कुमार	36
8.	धात्वर्थ विवेचन : वैयाकरणभूषणसार.....	कुसुम लता	42
9.	श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित समरसता विमर्श	योगेश कुमार मिश्र	51
10.	यजुर्वेद में पर्यावरण-संरक्षण : वैज्ञानिक एवं...	मानसी	56
11.	अभिनवगुप्त के स्तोत्रों में प्रतिपादित शिवतत्त्व	रमेश चन्द्र नैलवाल	66
12.	भारतीय जनमानस में स्त्री : एक विमर्श	निराली	73
13.	ऋग्वैदिक सरस्वती : वाक् तत्त्व के रूप में	पवन	78
14.	स्मृतियों में प्रतिपादित स्त्रीधन एवं उसकी....	स्मिता यादव	83

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक
विजय गुप्ता

Year : 2021 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह–सम्पादक
विजय गुप्ता

Year : 2021 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 06, अंक : 01

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
जून 2021

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
श्री विजय गुप्ता

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेलः vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
* पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
* पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल
(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (कुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

शोधपत्र समीक्षा समिति
(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय,
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- प्रो. जे. के. गोदियाल,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग,
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा,
  राज. महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह,
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल,
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा,
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	तिङर्थविचार:	अनिलकुमारद्विवेदी	01
2.	गण्डान्तनक्षत्रविमर्श:	राकेश ममगाईं	06
3.	योगशिखोपनिषदि अद्वैतवेदान्तविमर्श:	सचिनद्विवेदी	11
4.	हस्तरेखामाध्यमेन रोगपरिज्ञानम्	वीरेन्द्रशर्मा	17
5.	वाल्मीकि रामायण का ऐतिह्य एवं प्रामाणिक...	डा. ममता पाण्डेय	31
6.	Global Warming In Uttarakhand....	Dr. Amit Kumar Jaiswal	37
7.	Role of Yoga in the Development.....	Lata Kaira	45
8.	Historical perspective of Indian school...	Kamal Chandra Gahtori Sunita Sukoti	52
9.	Human Trafficking: A Brief Introduction	Dr. Hemlata Saini	66
10.	Children in Tribal Communities: An	Dr. R.K. Saini	75

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

45 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाईमासाङ्कः) 2020

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

संस्कृतं भारतस्य जीवातुभूतं तत्त्वम्। अस्यां भाषायां विलसति विपुलं ज्ञानवैभवम्। अस्मिन् वाङ्मयेऽनुस्यूतं सकलमपि जीवनमूल्यं, निखिलमपि व्यवहारतत्त्वम्। कथं वयं जीवाम:? कथं वयमाचराम:? कथं वयं व्यवहराम:? किमस्त्यस्माकं लक्ष्यम्? किं कर्म? किमकर्म? किं हानम्? किमुपादेयमेतत् सर्वं सम्यगुपदिशति सुरभारती देववाणीसंस्कृतम्।

पुरा अस्माकं देशस्यासीत् किमप्यपूर्वं गौरवमिह जगति। तत्र हेतुरासीत् जनमानसे संस्कृतस्य व्यापकत्वेन प्रभाव:। एतत्प्रभावादेव मौलिभूतं स्थानमासीदस्माकमिहावनितले। ऋषीणां वैशिष्ट्यं, मुनीनां महत्त्वं, गुरूणां गुरुत्वम्, आचार्यणामाचार्यत्वमेतत्प्रभावादेव प्रसिद्ध्यति। संस्कृतमन्तरा क्व संस्कृति:? क्व संस्कार:? क्व सदाचार:? क्व च शुचिता इति?

संस्कृतस्य गुरुत्वादेवासीदास्माकं गौरवम् अधिगतञ्चास्माभि: विश्वगुरुत्वम् इयमस्मान् प्रतिपदं संस्करोति शिक्षयति च कथं पितृभ्यां सह प्रभवाम:? आचार्येण सह कथमाचराम:? भ्रातृभि: भगिनीभिश्च सह कथं भवाम:? तरुगुल्मलताकीटपतङ्गप्रभृतिप्राणिभिस्सह कथं वर्तामहे? एतत्सर्वमत्यन्तं सारल्येन मृदुवचनेन चोद्बोधयति। भारतीयानां जीवने प्रतिपदं संस्कृतस्य महानुपकार:। इयं विद्या कल्पतलतेवास्माकं जीवने सर्वमभीष्टं संसाधयति। **वसुधैव कटुम्बकम्, संगच्छध्वं संवदध्वम्, सर्वे भवन्तु सुखिन:, मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु** इत्यादिवचनपुञ्जैर्विज्ञापिताया: विश्ववन्धुत्वभावनाया: चिन्तनमेतस्या: सर्वातिशयत्वं द्योतयति।

अत: सर्वैरपि मानवै: आत्मगौरवाय, विश्वकल्याणाय, सुखाय, शान्त्यै, समृद्ध्यै च संस्कृतं सततं पठनीयं, चिन्तनीयं, मननीयम्, आश्रयणीयञ्च।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुर-शास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका "शोध-प्रभा"। इयं विगतेभ्य: पञ्चचत्वारिंशद्वर्षेभ्य: नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तनप्रकर्षप्रकाशनाय अनुद्घाटितज्ञानवैभवस्योद्घाटनाय च महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वास:।

शोधप्रभाया: प्रकृतेऽस्मिन्ङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिता: षोडशशोधनिबन्धा: प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नै: नदीष्णै: सुधीभि: अनुसंन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्चान्वेषणमनुष्ठितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभाया: 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरित-विषयवस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् विद्याविनयविभूषितान् विशिष्टान् विदुष:।

प्रो. शिवशङ्करमिश्र:
शोधविभागाध्यक्ष:

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. औत्कलीय-तान्त्रिकसाहित्यस्य काश्मीरान् प्रति आधमर्ण्यम्	-	डॉ. गयाचरणत्रिपाठी	1-12
2. करणत्वविचारः	-	डॉ. चक्रपाणिपोखेलः	13-16
3. व्युत्पत्तिवाददिशा नव्यनैयायिकानां धात्वर्थमीमांसा	-	श्रीश्यामसुन्दरशर्मा	17-30
4. कालिदासीया चित्रकला	-	डॉ. शोभा मिश्रा	31-38
5. वैदिकवाङ्मये यमनियमयोः स्वरूपम्	-	ज्योत्सना	39-45
6. वैदिकवाङ्मये वाग्-विज्ञानम्	-	डॉ. बी. बी. त्रिपाठी	46-51
7. बौद्धधर्मे ध्यानस्य स्वरूपम्	-	प्रो. मारकण्डेयनाथ तिवारी	52-59
8. विष्णुपुराणे पुरुषः, प्रकृति एवं सृष्टितत्त्वम्	-	डॉ. सायनिका गोस्वामी	60-67

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

45 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबरमासाङ्कः) 2020

प्रधानसम्पादकः
प्रो.रमेशकुमारपाण्डेयः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

संस्कृतं भारतीयसंस्कृतेः जीवातुभूतं तत्त्वम्। संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः। एतत्प्रभावादेव निखिलेऽस्मिन् जगति प्रतिष्ठतास्माकं भारतीया संस्कृतिः। भारतीयसंस्कृतेः वैभवाद् कृत्स्नेऽपि नभसि भारतस्य गौरवपताका दोधूयमाना विराजते। इयं च संस्कृतिः संस्कृतं विना सर्वथा निष्प्राणभूता। अतो भारतस्य ज्ञानवैभवम्, भारतस्य गुणगणगौरवम्, भारतस्य विपुलमैतिह्यम्, भारतीयं जीवनं, चरित्रं, शस्त्रं, शास्त्राञ्चावबोद्धुमेकमेव यत् श्रेष्ठतमं साधनं वरीवर्ति, तदस्ति संस्कृतम्।

संस्कृतमाध्यमेनैव भारतस्य विस्तरेण परिचयः प्राप्तुं शक्यते। भारतं यैर्गुणनिचयैः स्वस्मिन् माहात्म्यमवधारयति, विश्वेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमावहति तत्सर्वमत्र देववाणीतः समागतम्। किं बहुना भारतस्य व्याख्या परिभाषा च संस्कृतेनैव व्याख्यातुं पार्यते नान्यथा, अतएवोच्यते-

संस्कृतेनैव सुसम्पुष्टं भारतं भारतमुच्यते। संस्कृतेन विना देशः केवलं चेण्डियोच्यते॥
उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

संस्कृतमस्मासु संस्कारं जनयति, ऐक्यं सम्पादयति, विश्वबन्धुत्वं स्थापयति, मित्रभावं परिष्करोति, संगच्छध्वं संवदध्वम् इति भावं दृढ़ीकरोति, सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु इत्यौदार्यं सन्दिशति,किमधिकं सर्वत्र शान्तिसंस्थापनाय, अहिंसा-सत्य-अस्त्येय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहभावानां विस्ताराय, शौच-सन्तोष-तपः- स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानाय भारते संस्कृतमेवानितर-साधारणसाधनं सम्भवति। इयमत्यन्तं लोकोपकारिका, अमृतसमा, माधुर्यसंवाहिका, कर्णौ सुखं ददती आत्मन्याह्लादं जनयति, लोकं ददाति लोकोत्तरञ्च संसाधयति अतएवोद्घोषितं केनचित् कविना-

अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं हि ततोऽधिकम्।
देवभोग्यमिदं तस्माद्देवभाषेति कथ्यते॥

भारतीयज्ञानपरम्परायाः महत्त्वमुपस्थापनायैव नूतनशिक्षानीतौ (2020) भारतीयभाषाणां वैशिष्टयं प्रकाशितम्। भारतस्य यत् स्वीयं ज्ञानविज्ञानं विद्यते तद् भारतीयभाषास्वेव विराजते, यदि वयं भारतीयां भाषां न विद्मः तर्हि भारतस्य ज्ञानवैभवमपि ज्ञातुं न प्रभवामः। अतः भारते याः याः भाषाः विलसन्ति ताषां परिज्ञानं भारतीयनां कृते परममावश्यकम्।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्ङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः अष्टादशशोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभसम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्चान्वेषणमनुष्ठितम् अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरित-विषय-वस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् सुमनसः मनीषिणः।

प्रो.शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमणिका

संस्कृतविभागः

1.	भारतीयसंस्कृतेः सातत्यपूर्णपरम्परायाः संवाहकं पुराणसाहित्यम्	**प्रो. रमेशभारद्वाजः**	1-9
2.	निपातार्थसमीक्षणम्	**डॉ. अशोककुमारमिश्रः**	10-14
3.	दर्शनान्तरीयदिशा व्याकरणे शक्तिस्फोटयोर्विमर्शः	**डॉ. महेशकुमारद्विवेदी**	15-20
4.	समासान्तविषये प्राच्यनव्ययोः मतभेदविचारः	**डॉ. अरविन्दमहापात्रः**	21-26
5.	अधिकरणस्वरूपविमर्शः	**श्रीपीताम्बरनिराला**	27-33
6.	व्याकरणशास्त्रस्य इहामुष्मिकोभयफलप्रसाधकत्वम्	**डॉ. मनोजकुमारद्विवेदी**	34-38
7.	जैमिनीयं प्रजातन्त्रविधानम्	**डॉ. सङ्कल्पमिश्रः**	39-50
8.	न्याय-वैशेषिकजगति दार्शनिकः गोवर्धनमिश्रः	**खुशबू शुक्ला**	51-57

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

46 वर्षे प्रथमोऽङ्कः (जनवरीमासाङ्कः) 2021

प्रधानसम्पादकः
प्रो.मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

समस्तेऽपि जगति मानवानां परस्परं व्यवहारसम्पादनाय, परस्परं भावावबोधनाय, स्वीयविचारसम्प्रेषणाय च मानवैः यत् साधनं विनिर्मितं तद्भाषापदेन व्यपदिश्यते लोके। अनया भाषया एव जनैः स्वसुख-दुःख-हर्ष-विषादप्रभृतिचित्तभावानां परस्मै प्रकाशनं क्रियते। यद्यपि विश्वेऽस्मिन् सन्ति बह्व्यः भाषाः याभिः जनाः स्वकीयं जीवनं व्यवहरन्ति तथापि तासु तादृशं सामर्थ्यं, तादृशी व्यापकता, वैज्ञानिकता च नावलोक्यते यथा विराजते अस्माकं संस्कृतभाषायाम्। अस्याः भाषायाः वैज्ञानिकता, सरलता, सरसता, मधुरता, व्यापकता, सर्वभाषाजनकता च पदे-पद भाषाविद्भिः प्रतिपादिता भूरिशः प्रशंसिता च। संस्कृतभाषायाः एतद्वैभवं विलोक्य न केवलमस्माकं पूर्वजाः नतमस्तका अपितु वैदेशिका अपि अभिभूताः विलोक्यन्ते। अनेके पाश्चात्यकोविदः संस्कृतभाषायां व्याकरण-दर्शन- काव्यविषयमवलम्ब्य नैकग्रन्थाः प्रणीतवन्तः। वैदेशिकैः न केवलं ग्रन्थलेखनं कृतम् अपितु टीकाकार्यम्, अनुवादकार्यम्, समीक्षाकार्यम्, व्याख्याकार्यम्, सम्पादनकार्यञ्च विहितम्। न केवलमेतावदेव अपितु वेदोपनिषद्गीता-रामायण-महाभारत-व्याकरण-काव्य-दर्शनविषयेऽपि पाश्चात्य-चिन्तकैः सश्रद्धं लेखनं सम्पादनञ्च विहितम्। वैदेशिकाः संस्कृतं प्रति अतीवसमुत्सुकाः श्रद्धावन्तश्च दृश्यन्ते। संस्कृतं प्रति तेषां श्रद्धाविषये विल्सनमहोदयानां अनुष्टुपछन्देन विरचितमधोलिखितं पद्यद्वयं सर्वथा प्रमाणभूतम्। अनयोः पद्ययोः भावं संस्मरन् देवभाषा संस्कृतं प्रति हृदयेन नितान्तं गौरवमनुभवामि-

यावद् गङ्गा च गोदा च यावद्विन्ध्यहिमाचलौ।
यावद् भारतवर्षं स्याद् तावदेव हि संस्कृतम्॥
न जाने विद्यते किं तद् माधुर्यमत्र संस्कृते।
सर्वदैव समुन्मत्ता येन वैदेशिका वयम्।

46 वर्षे अङ्केस्मिन् विविधविषयविश्लेषणपराः पञ्चदशलेखाः प्रकाश्यन्ते। एवं प्रतिभाविशेषोद्भासितशोधपूर्णा संस्कृतसौरभं वितन्वतीयं विदुषां सन्तोषाय भविष्यतीति कामयमानोहं प्रमादादज्ञानाद्वा सञ्जातस्य दोषजातस्य प्रशमनार्थं निर्देशादिप्रदानैश्च उत्साहश्रियः संवर्धनार्थमभ्यर्थते सुमनसः विदुषः।

प्रो.शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमणिका

संस्कृतविभागः

1.	यदागमेत्यादिपरिभाषार्थविमर्शः	**प्रो. रामनारायणद्विवेदी**	1-6
2.	वेदेषु दैवीयापदस्तन्निरोधोपायाश्च	**विद्यावाचस्पतिः डॉ. सुन्दरनारायणझा**	7-13
3.	प्रातिशाख्यपाणिनीयव्याकरणयोर्दृष्ट्या स्वरितस्वरविमर्शः	**डॉ. सूर्यमणिभण्डारी**	14-23
4.	लोकमान्यालङ्कारस्य परिचयः	**डा. रत्नमोहनझाः**	24-35
5.	पुराणलक्षणसन्दर्भे श्रीमद्भागवतस्य दशलक्षणानि ग्रन्थस्वरूपे तेषां सङ्गतिश्च	**डॉ. नीरजनौटियालः**	36-48
6.	भोजराजसम्मतशृङ्गार-रसावियोगसंकल्पनयोः विश्लेषणम्	**डॉ.गोपालकुमारझा**	49-55
7.	जैनदर्शने प्रमाणविचारः	**प्रो. कुलदीपकुमार**	56-62

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

46 वर्षे द्वितीयोऽङ्कः (अप्रैलमासाङ्कः) 2021

प्रधानसम्पादकः
प्रो.मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो.शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः
डॉ.ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
केन्द्रीयविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

समस्तेऽपि जगति मानवानां परस्परं व्यवहारसम्पादनाय, परस्परं भावावबोधनाय, स्वीयविचारसम्प्रेषणाय च मानवैः यत् साधनं विनिर्मितं तद्भाषापदेन व्यपदिश्यते लोके। अनया भाषया एव जनैः स्वसुख-दुःख-हर्ष-विषादप्रभृतिचित्तभावानां परस्मै प्रकाशनं क्रियते। यद्यपि विश्वेऽस्मिन् सन्ति बह्व्यः भाषाः याभिः जनाः स्वकीयं जीवनं व्यवहरन्ति तथापि तासु तादृशं सामर्थ्यं, तादृशी व्यापकता, वैज्ञानिकता च नावलोक्यते यथा विराजते अस्माकं संस्कृतभाषायाम्। अस्याः भाषायाः वैज्ञानिकता, सरलता, सरसता, मधुरता, व्यापकता, सर्वभाषाजनकता च पदे-पद भाषाविद्भिः प्रतिपादिता भूरिशः प्रशंसिता च। संस्कृतभाषायाः एतद्वैभवं विलोक्य न केवलमस्माकं पूर्वजाः नतमस्तका अपितु वैदेशिका अपि अभिभूताः विलोक्यन्ते। अनेके पाश्चात्यकोविदः संस्कृतभाषायां व्याकरण-दर्शन- काव्यविषयमवलम्ब्य नैकग्रन्थाः प्रणीतवन्तः। वैदेशिकैः न केवलं ग्रन्थलेखनं कृतम् अपितु टीकाकार्यम्, अनुवादकार्यम्, समीक्षाकार्यम्, व्याख्याकार्यम्, सम्पादनकार्यञ्च विहितम्। न केवलमेतावदेव अपितु वेदोपनिषद्गीता-रामायण-महाभारत-व्याकरण-काव्य-दर्शनविषयेऽपि पाश्चात्य-चिन्तकैः सश्रद्धं लेखनं सम्पादनञ्च विहितम्। वैदेशिकाः संस्कृतं प्रति अतीवसमुत्सुकाः श्रद्धावन्तश्च दृश्यन्ते। संस्कृतं प्रति तेषां श्रद्धाविषये विल्सनमहोदयानां अनुष्टुपछन्देन विरचितमधोलिखितं पद्यद्वयं सर्वथा प्रमाणभूतम्। अनयोः पद्ययोः भावं संस्मरन् देवभाषा संस्कृतं प्रति हृदयेन नितान्तं गौरवमनुभवामि-

यावद् गङ्गा च गोदा च यावद्विन्ध्यहिमाचलौ।
यावद् भारतवर्षं स्याद् तावदेव हि संस्कृतम्॥
न जाने विद्यते किं तद् माधुर्यमत्र संस्कृते।
सर्वदैव समुन्मत्ता येन वैदेशिका वयम्।

46 वर्षे अङ्केस्मिन् विविधविषयविश्लेषणपराः सप्तदशलेखाः प्रकाश्यन्ते। एवं प्रतिभाविशेषोद्भासितशोधपूर्णा संस्कृतसौरभं वितन्वतीयं विदुषां सन्तोषाय भविष्यतीति कामयमानोहं प्रमादादज्ञानाद्वा सञ्जातस्य दोषजातस्य प्रशमनार्थं निर्देशादिप्रदानैश्च उत्साहश्रियः संवर्धनार्थमभ्यर्थते सुमनसः विदुषः।

प्रो.शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमणिका

संस्कृतविभागः

1.	वाक्यपदीयमहाभाष्ययोः सन्दर्भे ध्वनिपदार्थविश्लेषणम्	**डॉ. प्रमोदकुमारशर्मा**	1–11
2.	व्याकरणदर्शने शब्दस्वरूपम्	**डॉ. मोहिनी आर्या, तेज प्रकाशः**	12–19
3.	उपनिषत्सु समाहितानां मनोवैज्ञानिक-सूत्राणाम् आलोचनात्मकम् अध्ययनम्	**डॉ. श्रुतिकान्तपाण्डेयः**	20–26
4.	भारतीयपरम्परायां मानवाधिकारशिक्षा	**डॉ. परमेशकुमारशर्मा**	27–43
5.	वेदान्तसम्प्रदायभेदे प्रमाणमीमांसाः	**डॉ0 सरोजकुमारपाढ़ी**	44–49
6.	अधिकारसूत्राणि तन्महत्त्वञ्च	**डॉ. प्रज्ञा**	50–64
7.	कौटिल्यस्य राजचिन्तनं लोकतंत्रे एतस्य प्रासंगिकता च	**डॉ. विजयगर्गः**	65–69

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

अप्रैल–मई–जून–जुलाई 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

डॉ.गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित

फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक-बृहत्पाराशर-समीक्षा

वर्ष : 6 एवं 7, अंक : 11,12,01,02 (71,72,73,74)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 राज्यसभा ने केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक को दी मंजूरी

आधुनिकसंस्कृतसाहित्यक्षेत्रे प्रो.चौडूरि उपेन्द्रराव महोदयानां योगदानम् 05

डॉ. नृसिंहनाथगुरुः

09 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

वैदिक वाङ्मय में प्राण -विज्ञान 10

यशपाल शर्मा

14 श्रमणसंस्कृति के संवाहक : मुनिश्री तरुणसागर

डॉ. अनुभा जैन

सम्पादकीयम्

समग्रं विश्वमिदानीं कोरोनाव्याधिना पीडितो दृश्यते, लक्षशोऽप्यधिकाः जनाः अनया अकालेन कालकवलिताः। सर्वत्र अस्याः दुष्प्रभावो द्रष्टुं शक्यते, भारतेऽपि प्रतिदिनं संक्रमणं वर्धमानं दृश्यते। आधुनिकचिकित्सायां एतावता नास्ति कश्चन उपायः येनानया व्याधिना जीवनस्य रक्षणं भवेत्। एतस्याः संक्रमणमपि सद्यः न प्रतीयते प्रत्युत् शनैः-शनैः चतुर्दशदिवसानन्तरं लक्षणानि प्रकटीभवन्ति। अन्तरालेऽस्मिन् मानवानां परस्परं संसर्गेण नैके जनाः संक्रमिताः भवन्ति अतो विस्तरेण संक्रमणं मा भवत्विति धिया अस्माभिः एकान्तसेवनं परैरसंसर्गश्चकरणीयः। इयं व्याधिः जनान् न संक्रमेदेतदर्थं शरीरे रोगप्रतिरोधकक्षमतायाः दृढता अपेक्ष्यते यद्यस्माकं शरीरे रोगप्रतिरोधिका शक्तिः सुदृढा भविष्यति तर्हि निश्चप्रचमस्याः व्याधेः दुष्प्रभावोपि न भविष्यति।

रोगप्रतिरोधकक्षमताप्रवर्धने अस्माकमायुर्वेदचिकित्सा-पद्धतौ यथोपायाः विद्यन्ते तथाऽन्यचिकित्सापद्धतौ नोपलभ्यन्ते। किमधिकमस्माकं महानसे मातरो भगिन्यश्च औषधित्वेन अजानन्त्योऽपि बहून्यौषधानि प्रतिदिनं भोजनेन सहास्मान् भोजयन्ति, येषां सेवनेन अस्माकं शरीरं रोगनिवारणे व्याधिना सह संघर्षे च नितरां समर्थं सञ्जायते।

अस्मिन् कोरोनासंकटकाले एतत् तथ्यं निर्विवादरूपेण सर्वैरनुभूतं यदायुर्वेदस्य जीवने विद्यते विशिष्टप्रभावः रोगस्य समूलनिर्मूलने अस्य महत्त्वं सर्वैः भारतीयैः समनुभूतम्। आयुर्वेदमहिम्ना अनेके जनाः व्याधिमुक्ता अभवन् केषाञ्चिज्जीवने चास्याः दुष्प्रभावोऽपि न प्रादुर्भूतः। अतः समेषां नैरुज्यलाभाय, 'सर्वे सन्तु निरामयाः' इति शिवसंकल्पसाफल्याय सर्वेरपि भारतसन्ततिथिः आयुर्वेदं प्रति श्रद्धा करणीया सततं सेवनीया च।

प्रो० शिवशंकरमिश्रः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 18)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
अगस्त 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि0' की मासिक पत्रिका

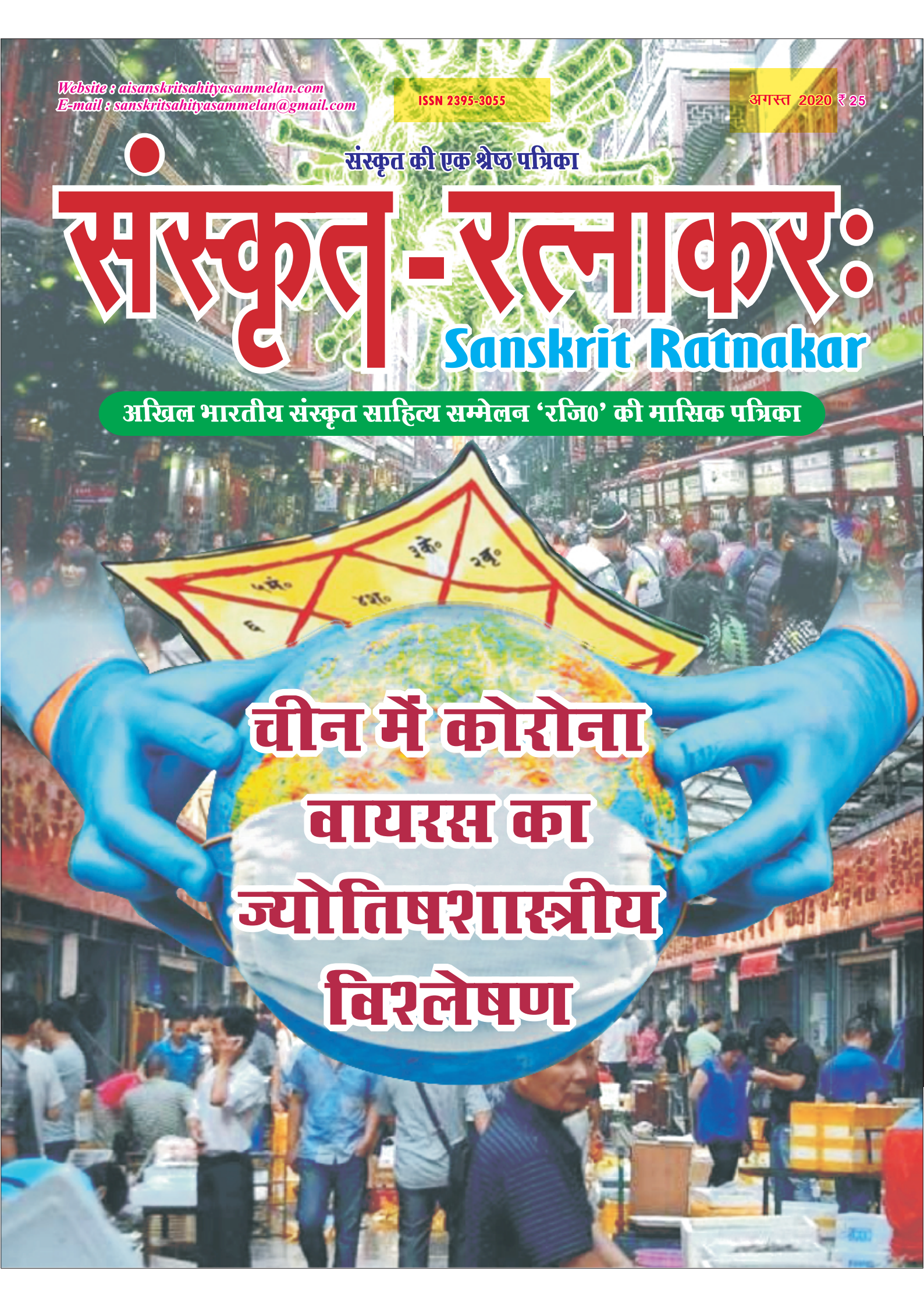

चीन में कोरोना वायरस का ज्योतिषशास्त्रीय विश्लेषण

वर्ष : 7 अंक : 03 (75)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 चीन में करोना वायरस का ज्योतिषशास्त्रीय विश्लेषण
मनमोहन शर्मा

भारते भारती दीव्यतां सर्वदा 07
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

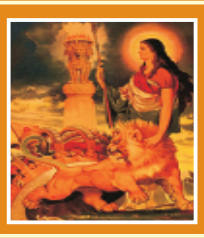

10 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित
फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

कोरोनाव्याधिनिवारण में योग का प्रभाव 11
विजय गुप्ता

14 कृष्णावतार का वैशिष्ट्य
डॉ. श्रीमती कृष्णा जैन

सम्पादकीयम्

सम्प्रति सकलं विश्वं कोरोनाव्याधिना समाकुलितं विद्यते, सर्वं कार्यमवरुद्धमिदानीम्। असंख्यजनाः वृत्तिविहीना जाताः, लक्षशोऽप्यधिकाः मानवाः अकालकालकवलिताः, व्यवसायाः विनष्टाः, जीवनयापनाय दैनिकवृत्तौ संलग्नाः श्रमिकाः सर्वथा वृत्तिशून्याः अभूवन्। विश्रान्तिनिलयानि अतिथिगृहाणि, (होटल) आहार-प्रदातृकेन्द्राणि, (रेस्टोरेंट) प्रायशः पिहितानि सन्ति। किमधिकं चिकित्सालयेषु, उद्योगालयेषु, शिक्षणसंस्थानेषु, कार्यालयेषु, पुस्तकालयेषु, धर्मशालासु, मन्दिरेषु, आपणेषु, गृहनिर्माणादिकार्येषु च सर्वत्र व्यवधानं दरीदृश्यते। देशात् देशान्तरगमनार्थं वायुयानं, रेलयानं वसयानमपि सारल्येन नास्ति सुलभम्। संक्षेपेण जीवनोपयोगि अपरिहार्यमपि साधनं ऋजुरीत्या नोपलभ्यते।

अस्यां विपरीतपरिस्थितावपि यथा चिकित्सकैः, आरक्षिजनैः, पत्रकारैश्च स्वकीयं दायित्वं उत्साहेन सम्पादितं तथैव ज्ञानप्रदातृभिः गुरुभिः (शिक्षकैः) सततं अध्यापनकार्यं समाचरितम्। "स्वाध्यायान्मा प्रमदः" इति श्रुतिवचनमनुपालयन्तः शिक्षकाः दिवानिशं गृहादेव आनलाईनमाध्यमेन अत्यन्तं निष्ठया करुणया च छात्रान् अध्यापितवन्तः, परीक्षादिकार्यमपि सम्पादितवन्तः। आचार्याणामेतत् कार्यकौशलं समर्पणञ्च अन्यानपि जनान् प्रेरणायै प्रकल्प्यते।

समाजे शिक्षा-संस्कार-संस्कृतिसंस्थापने शिक्षकाणां महती भूमिका भूयते। स्वाचरणेन, स्वव्यवहारेण, स्वकार्येण, स्वविचारेण, स्वचिन्तनेन, स्वनिर्देशनेन च शिक्षकाः छात्रेषु विशिष्टगुणवैभवं जनयन्ति। अतएव शिक्षकः नास्ति साधारणोऽपितु असाधारणः यथोक्तं महर्षिणा चाणक्येन-

"शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।"

अस्माकं जवीने अस्मान् यः प्रेरयति, यः सूचयति, यः दर्शयति, यः शिक्षयति यश्च बोधयति ते सर्वे गुरुपदवाच्याः भवन्ति-

प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा।
शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः॥

प्रो० शिवशंकरमिश्रः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 18)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

सितम्बर 2020 ₹ 25

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली–110067

वर्ष : 7 अंक : 04 (76)

संस्कृत की एक श्रेष्ठ पत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन 'रजि०' की मासिक पत्रिका

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

व्यवस्थापक मण्डल : ओ.पी. सर्राफ, आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
ओ.पी. जिन्दल, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 क्रियार्थकतद्धित- प्रत्ययपरिचयः
मनीषकुमारझा

जगत में उत्पातों के मुख्य कारण एवं समसामयिक करोना वायरस दिव्य संज्ञक उत्पात की वैदिकज्ञीयशान्ति विधि 08
मनमोहन शर्मा

12 कोरोनापञ्चाशिका
डॉ. राम विनय सिंह

वैदिककाले नैतिकशिक्षायाः प्रासङ्गिकता 15
दुर्गेश प्रकाश झा

17 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित
फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

सम्पादकीयम्

साम्प्रतं समग्रेऽस्मिन् विश्वे अध्ययनाध्यापनव्यवस्था आन्तर्जालिकमाध्यमेन प्रचाल्यमाना वर्तते। कक्षायामध्ययनं सर्वथाऽवरुद्धम्। प्राध्यापकाः आडियो-वीडियो-कान्फ्रेन्सिंग-ब्लागवेवसाईट-वीडियोट्यूटोरियल्स-ईबुक्स-बेविनार-गूगलमीट-वेवेक्स-जूम-फेसबुक-ईमेल-वाट्सएप प्रभृति सञ्चारमाध्यमेन छात्रान् पाठयन्ति। विद्यार्थिनोऽपि स्वरुच्यनुसारं स्वोपलब्धसाधनानुरूपं यथाकथञ्चिद् पुस्तकस्य भावं यथामति यथासामर्थ्यम-वगच्छन्ति। विद्याप्रदानस्य यद्येष एव क्रमः अग्रेऽपि प्रचलिष्यति तदा सूचनासम्प्राप्तिसमकालमेव बालकानां बाल्यावस्थायामेव भविष्यति स्वास्थ्यहानिः, सहैव अभिभावकानामपि विपुलव्ययभारोऽपि आपतिष्यति।

अमुना कोरोनाव्याधिना न केवलं जनाः अकालकालकवलिताः अपितु एतस्याः दुष्प्रभावाद् कोटिशः अपि जनाः वृत्तिविहिनाः भूत्वा जीवन्तोऽपि मृतायन्ते। लोके सुखप्राप्त्यनन्तरं दुःखप्राप्तिः मनसि महत्क्लेशं जनयति, शरीरं धारयन्तोऽपि मृता इव भवन्ति मानवाः। अतएवोक्तं मृच्छकटिके शूद्रकेण-

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते,
घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम् ।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां,
धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ॥

इतोप्यधिकं समाजाय चिन्तनीयमिदं यद् विद्याध्ययनस्य आन्तर्जालिकमाध्यमेन यो हि उपक्रमः प्रचलति तेन छात्राः सूचनां तु सम्प्राप्नुवन्ति परञ्च तेषां जीवने सदाचरणस्य, नैतिकमूल्यस्य, अनुशासनस्य अहिंसा-दया-परोपकारप्रभृतिगुणानाम् अङ्कुरणं न प्रस्फुटति, यतः जीवने गुणाः भाषणेन नायान्ति अपित्वाचरणेन प्रभवन्ति।

गुरूणामाचरणं विलोक्य तेषां जीवनपद्धतिमनुसृत्य जिज्ञासवः शिष्याः गुरूसदृशाः भवितुं प्रयतन्ते, परञ्चैतद् सर्वं गुरुकुले शिक्षामन्दिर एव भवितुं शक्यते। गृहे तु सर्वथा अनुशासनशून्या, संवेदनविहीनाः, संस्कारैरसम्पृक्ताः सन्तः प्राप्तेऽपि विपुलज्ञाने सकलं ज्ञानवैभवं भारभूतं जायते यतः यावज्ज्ञानस्य लोके प्रभावो न भवति तावज्ज्ञानं भारनिभमेव-''ज्ञानं भारः क्रियां विना।''

अतः छात्र-छात्रासु जीवने नैतिकमूल्यानां सदाचरणानां अहिंसासत्यास्तेय-ब्रह्मचर्यापरिग्रहप्रभृतिदिव्यगुणानमवतरणमपरिहार्यतया भवेदेतदर्थं शिष्यैः गुरुकुलमाश्रयणीयम् - ''गुरुगृह पढ़न गये रघुराई। अल्पकाल विद्या सब पाई।'' गुरुचरणेषु आश्रयं सम्प्राय प्राप्तविद्यालाभः यन्त्राधिगत्सूचनासंकुलापेक्षया नितरां ज्यायानिति निवेद्य विरमामि विस्तरात्।

प्रो० शिवशंकरमिश्रः

व्याख्यान के विशिष्ट अंश 18

19 ज्योतिषशास्त्र का सामाजिक परिदृश्य
डॉ. अशोक थपलियाल

आन्तर्जालिक शिक्षा में छात्रों, अध्यापकों, विद्यालयों तथा अभिभावकों की चुनौतियाँ 20
हेमलता रानी

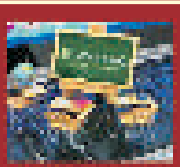

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 22)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

अक्टूबर 2020 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

चित्रकूट की प्राचीनता एवं विभिन्न परम्परायें

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-110067

वर्ष : 7 अंक : 05 (77)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसार परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
पं० हरिदत्त वशिष्ठ,एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ
अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

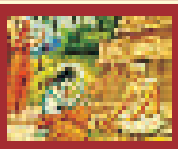

03 चित्रकूट की प्राचीनता एवं विभिन्न परम्परायें
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

निर्दिश्यमानस्यादेशा भवन्तीति परिभाषार्थविमर्शः 12
डॉ. रत्नेशकुमारत्रिवेदी

14 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

सम्पादकीयम्

समस्तेऽपि जगति मानवानां मिथो व्यवहारसम्पादनाय, परस्परं भावावबोधनाय, स्वीयविचारसम्प्रेषणाय च मानवैः यत् साधनं विनिर्मितं तद्भाषापदेन व्यपदिश्यते लोके। अनया भाषया एव जनैः स्वसुख-दुःख-हर्ष-विषादप्रभृतिचित्तभावानां परस्मै प्रकाशनं क्रियते। यद्यपि विश्वेऽस्मिन् सन्ति बहव्यः भाषाः। यया जनाः स्वकीयं जीवनं व्यवहरन्ति तथापि तासु तादृशं सामर्थ्यं, तादृशी व्यापकता, वैज्ञानिकता च नावलोक्यते यथा विराजते अस्माकं संस्कृतभाषायाम्। अस्याः भाषायाः वैज्ञानिकता, सरलता, सरसता, मधुरता, व्यापकता, सर्वभाषाजनकता च पदे-पदे भाषाविद्भिः प्रतिपादिता भूरिशः प्रशंसिता च। संस्कृतभाषायाः एतद्वैभवं विलोक्य न केवलमस्माकं पूर्वजाः नतमस्तका अपितु वैदेशिका अपि अभिभूताः विलोक्यन्ते। अनेके पाश्चात्यकोविदः संस्कृतभाषायां व्याकरण-दर्शन-काव्य- विषयमवलम्ब्य नैकग्रन्थाः प्रणीतवन्तः। वैदेशिकैः न केवलं ग्रन्थलेखनं कृतम् अपितु टीकाकार्यम्, अनुवादकार्यम्, समीक्षाकार्यम्, व्याख्याकार्यम्, सम्पादनकार्यञ्च विहितम्। न केवलमेतावदेव अपितु वेदोपनिषद्गीता-रामायण-महाभारत-व्याकरण-काव्य-दर्शनविषयेऽपि पाश्चात्यचिन्तकैः सश्रद्धं लेखनं सम्पादनञ्च विहितम्। वैदेशिकाः संस्कृतं प्रति अतीवसमुत्सुकाः श्रद्धावन्तश्च दृश्यन्ते। संस्कृतं प्रति तेषां श्रद्धाविषये विल्सनमहोदयानां अनुष्टुपछन्देन विरचितमधोलिखितं पद्यद्वयं सर्वथा प्रमाणभूतम्। अनयोः पद्ययोः भावं संस्मरन् देवभाषासंस्कृतं प्रति हृदयेन नितान्तं गौरवमनुभवामि-

यावद् गङ्गा च गोदा च यावद्विन्ध्यहिमाचलौ ।
यावद् भारतवर्षं स्याद् तावदेव हि संस्कृतम् ॥
न जाने विद्यते किं तद् माधुर्यमत्र संस्कृते ।
सर्वदैव समुन्मत्ता येन वैदेशिका वयम् ॥

प्रो० शिवशंकरमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः,नवदेहली

15 भारतीय ज्ञानपरम्परा और शोध
ज्ञानप्रकाश मिश्र

वार्ताः 19

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 22)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

नवम्बर 2020 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

वैदिक संस्कृति

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-110067

वर्ष : 7 अंक : 06 (78)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
पं० हरिदत्त वशिष्ठ, एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 शब्दार्थसम्बन्धमीमांसा
सर्वेशकुमारतिवारी

ज्योतिर्विद्यायाः वैशिष्ट्यं परिचयश्च 07
कु. श्रद्धामिश्रा

10 वैदिक संस्कृति की वैज्ञानिकता
डॉ. रोशनी असवाल

सम्पादकीयम्

अयं कालः चिन्तनपरिवर्तनस्य। चिन्तनेनैव भविता नूतना क्रान्तिः। तदर्थं सर्वेऽपि युवानः अधीतसंस्कृताः स्वस्य अध्ययनान्तरं वृत्तिलाभात्पूर्वं वर्षमेकं, द्वित्रिवर्षाणि वा संस्कृतप्रचाराय समयसमर्पणेन संस्कृतकार्यं कुर्युः। यदा प्रतिवर्षम् एतादृशः युवानः/युवत्यश्च संस्कृतस्य विकासाय यत्नं विधास्यन्ति, तदा नूनं संस्कृतमाता समेषां जनानां हृदि विलुप्तां प्रतिष्ठां पुनः प्राप्स्यति। सर्वेऽपि संस्कृतसमुपासकाः आचार्याः छात्राश्च स्वशिष्यान् स्वमित्राणि वा संस्कृतार्थं समयदानाय सततं प्रेरयेयुः। यदि वयमेवं कुर्मः तर्हि संस्कृतक्षेत्रस्य परिदृश्यं परिवर्तितं भवेत्। किञ्च सर्वत्र लोके जनाः पृच्छन्ति अद्यत्वे संस्कृतस्य प्रासङ्गिकता का? उपयोगिता का? इति। यदि सूक्ष्मरूपेण चिन्त्यते तर्हि प्रश्नोऽस्ति यत् संस्कृतज्ञस्य मम भवतश्च उपयोगिता/प्रासङ्गिकता केति, न तु संस्कृतस्य केति। ममायं विश्वासो यदि वयं स्वजीवनस्य प्रासङ्गिकतां प्रतिष्ठापयामः तर्हि संस्कृतं संस्कृतज्ञाश्च समाजे पूजास्थाने भवेयुः नो चेद् वयं संस्कृतज्ञाः श्वोऽवकरकण्डोलेषु क्षिप्ताः स्याम्। अस्मिन् विषये गौरवेण चिन्तयामः यत् ''प्रयाहि देशगौरवं स्वराष्ट्रकेतुमुद्धरन्, पदं पदं प्रगच्छ रे विजेतृभावमुद्वहन्'' इति। एतदर्थं प्राथमिककक्षातः विश्वविद्यालयस्तपर्यन्तं सर्वेषु स्तरेषु संस्कृतस्य संस्कृतमाध्यमेन पाठनं, परीक्षा च यथा स्यात् तथा प्रयतनीयम्। तदर्थं विविधाः प्रयोगाः करणीयाः। पाठाः निर्मातव्याः। एतस्याः शैक्षिकक्रान्ते प्रारम्भः शिक्षामन्त्रालये पाठ्यपुस्तकपरिषदः कार्यालये वा न भवेत्, अपितु एकैकस्यापि संस्कृतशिक्षकस्य प्रतिकक्षं भवेत्। स च प्रयत्नः प्रत्येकं संस्कृतज्ञेन करणीयः। तत्र कष्टानि बहूनि अवश्यं सन्ति तथापि किं प्राणभयं वीरं सैनिकं युद्धरङ्गात् प्रतिनिवर्तयति? किं विघ्नभयाज्जनाः कार्यं नारभन्ते? वयं संस्कृतज्ञाः संस्कृतमातुः वीरसैनिकाः, संस्कृतसंरक्षणमेवास्माकं मौलिभूतं कर्म, न केवलं भारते अपितु विदेशेषु आबालवृद्धानां समेषां जनानां मुखे संस्कृतं स्वभावतः यथा विलसतु तदर्थमस्माभिस्सततं सोत्साहं प्रयतनीयम्।

।। जयतु संस्कृतम्। जयतु भारतम् ।।

प्रो० शिवशंकरमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

15 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

वेदोक्तवैज्ञानिकविषयाणां परिशीलनम् 16
मनीषाकुमारी

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

दिसम्बर 2020 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली–110067

वर्ष : 7 अंक : 07 (79)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशंकर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
पं० हरिदत्त वशिष्ठ,एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 रामचरितमानस में राम की ब्रह्मरूपता
प्रो० रमाकान्त पाण्डेय

वैदिकवाङ्मये मन्त्रोच्चारणविधिविमर्शः 06
विद्यावाचस्पतिः डॉ० सुन्दरनारायणझाः

09 षड् वेदाङ्गों में शिक्षा वेदाङ्ग की उपयोगिता
डॉ० अरुणिमा

सम्पादकीयम्

साम्प्रतं समग्रेऽस्मिन् विश्वे अध्ययनाध्यापनव्यवस्था आन्तर्जालिकमाध्यमेन प्रचाल्यमाना वर्तते। कक्षायामध्ययनं सर्वथाऽवरुद्धम्। प्राध्यापकाः आडियो-वीडियो-कान्फ्रेन्सिंग-ब्लागवेवसाईट-वीडियोट्यूटोरियल्स-ईबुक्स-बेविनार-गूगलमीट-वेवेक्स-जूम-फेसबुक-ईमेल-वाट्सएपप्रभृति सञ्चारमाध्यमेन छात्रान् पाठयन्ति। विद्यार्थिनोऽपि स्वरुच्यनुसारं स्वोपलब्धसाधनानुरूपं यथाकथञ्चिद् ग्रन्थस्य भावं यथामति यथासामर्थ्यमवगच्छन्ति। विद्याप्रदानस्य यद्येष एव क्रमः अग्रेऽपि प्रचलिष्यति तदा सूचनासम्प्राप्तिसमकालमेव बालकानां बाल्यावस्थायामेव भविष्यति स्वास्थ्यहानिः, सहैव अभिभावकानामपि विपुलव्ययभारोऽपि आपतिष्यति।

अमुना कोरोनाव्याधिना न केवलं जनाः अकालकालकवलिताः अपितु एतस्याः दुष्प्रभावाद् कोटिशः अपि जनाः वृत्तिविहीनाः भूत्वा जीवन्तोऽपि मृतायन्ते। लोके सुखप्राप्त्यनन्तरं दुःखप्राप्तिः मनसि महत्क्लेशं जनयति, शरीरं धारयन्तोऽपि मृता इव भवन्ति मानवाः। अतएवोक्तं मृच्छकटिके शूद्रकेण-

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते, घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम् ।
सुखात्तु यो याति नरो दरिद्रतां, धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ॥

इतोप्यधिकं समाजाय चिन्तनीयमिदं यद् विद्याध्ययनस्य आन्तर्जालिकमाध्यमेन यो हि उपक्रमः प्रचलति तेन छात्राः सूचनां तु सम्प्राप्नुवन्ति परञ्च तेषां जीवने सदाचरणस्य, नैतिकमूल्यस्य, अनुशासनस्य अहिंसा-दया-परोपकारप्रभृतिगुणानाम् अङ्कुरणं न प्रस्फुटति, यतः जीवने गुणाः भाषणेन नायान्ति अपित्वाचरणेन प्रभवन्ति।

गुरूणामाचरणं विलोक्य तेषां जीवनपद्धतिमनुसृत्य जिज्ञासवः शिष्याः गुरूसदृशाः भवितुं प्रयतन्ते, परञ्चैतद् सर्वं गुरुकुले शिक्षामन्दिर एव भवितुं शक्यते। गृहे तु सर्वथा अनुशासनशून्या, स्वेच्छाचरणे तत्पराः गुरुणा जीवनपद्धतिमाचरणञ्चापश्यन्तः यन्त्रार्जितज्ञानेन यन्त्रवत् विकासं प्राप्नुवन्ति, प्राप्तेऽपि विपुलज्ञाने सकलं ज्ञानवैभवं भारवदनुभवन्तो जायन्ते, यतः यावज्ज्ञानस्य लोके प्रभावो न भवति तावज्ज्ञानं भारनिभमेव उक्तञ्च-"ज्ञानं भारं क्रियां विना।"

अतः छात्र-छात्रासु जीवने नैतिकमूल्यानां सदाचरणानां अहिंसासत्यास्तेय-ब्रह्मचर्यापरिग्रहप्रभृतिदिव्यगुणानामवतरणमपरिहार्यतया भवेदेतदर्थं शिष्यैः गुरुकुलमाश्रयणीयम् - "गुरुगृह पढ़न गये रघुराई। अल्पकाल विद्या सब पाई।" गुरुचरणेषु आश्रयं सम्प्राय प्राप्तविद्यालाभः यन्त्राधिगत्सूचनासंकुलापेक्षया नितरां ज्यायानिति सर्वैः सततमनुभूयते।

प्रो० शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः,नवदेहली

13 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

श्रीमद्भागवत में राधा तत्त्व 14
योगेश कुमार मिश्र

17 तीर्थस्थल बद्रीनाथ की महिमा
खुशबू द्विवेदी

Yoga Nidra : A Meditative Technique of Relaxing Body and Mind 20
Dr. Reena Mishra

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

नववर्षं भवेन्मंगलम्

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

जनवरी 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-110067

वर्ष : 7 अंक : 08 (80)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी
संपादक : प्रो० शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसार परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
पं० हरिदत्त वशिष्ठ,एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 रामचरितमानस में सीताविवाह : स्रोत एवं सन्दर्भ
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

भारते भारती दीव्यतां सर्वदा 07
डॉ. कृपाशंकरमिश्रः

09 श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्मयोग
प्रो. संगीता मिश्रा

सम्पादकीयम्

नास्ति भारतसमा भूमिः, न च वासन्तिकी विभा

प्रकृतेः शृङ्गारसाधनं विद्यते ऋतुवैभवम्। ऋतूनां प्राचुर्यप्रभावादेवास्माकं जीवनं निरामयमानन्दमयञ्चानुभूयते। यद्येक एव ऋतुस्स्यात्तर्हि जीवनं तथैव नीरसम् आनन्दशून्यञ्च भवेद्यथा एकमेव भोज्यपदार्थमनिशमश्नन् अस्माकं मनः नितान्तमुन्मनश्कं भवति।

वयमत्यन्तं सौभाग्यशालिनो यद् भगवतो महाकालस्य विद्यते अस्मासु महती कृपा। यत्र विश्वस्मिन् कश्मिश्चिद्देशे केवलं शैत्यम्, कश्मिश्चिद्देशे केवलमौष्ण्यम्, कश्मिश्चिच्च देशे केवलं ब्राष्ट्यमेव दरीदृश्यते, तत्रैव भारतस्याङ्के सर्वेऽपि ऋतवः सानन्दं नरीनृत्यन्ति। अत्र षड्ऋतूनां वसन्त-ग्रीष्म-वर्षा-शरद्-हेमन्त-शिशिराणां विद्यते काचिद् रमणीया परम्परा। धन्योऽयं भारतो देशः षड्ऋतवो यत्र शोभन्ते।

मित्राणि! एवमपि देशाः श्रूयन्ते यत्र प्रातस्सन्ध्ययोर्भेदो न प्रतीयते, कदा रात्रिः कदा च दिवस इति घटिकायन्त्रं विना नावबुध्यते, कदा ऊषाकालः कदा च गोधूलिवेला इति नानुभवितुं शक्यते, घटिका एव बोधयति कदा प्रवर्तेरन् कदा च निवर्तेरन्। एवमपि आनुभविकमेव यदन्यत्र देशे ऋतूणां समयगभावाद् तज्जन्यफलानामपि अन्नानाञ्च सौन्दर्यजनकपुष्पाणां च ऋतुजनितान्यपदार्थानाञ्च स्वाभाविको अभावः, तेन पूजादीनां विधानं, स्वास्थ्यसंरक्षणम् अन्यच्च यत् सुलभं सुखं तदुर्लभमिव प्रतिभाति। तदेव ऋतुमाहात्म्यं वर्णितं कालिदासेन-

सुभगसलिलावगाहः पाटलसंसर्गसुरभिवनवातः।
प्रच्छाय सुलभनिद्रा दिवसाः परिणाम रमणीयाः ॥ (अभि.शा.)

अथ च बहुत्र वृष्टिबाहुल्येन जनाः स्वच्छ-धवल-नीलनभस्य दर्शनेन सर्वथा **वञ्चिताः भवन्ति, किमधिकं केचन शैत्यपीडिताः, केचन निदाघभूर्जिताः, केचन च** वृष्टिव्याकुलिताः विलोक्यन्ते। एवंविधानां का कथा सर्वजनमनोरंजकस्य वसन्तवैभवस्य।

वसन्ते सर्वविटपेषु नूतनमृदुपल्लवाः प्रादुर्भवन्ति। जीर्णपत्राणां विमोको भवति। उक्तञ्च-**वसन्ते सर्वसस्यानां जायते पत्रशातनम्** ततः तत्र नूतना सृष्टिः सञ्जायते। कालेऽस्मिन् वृक्ष-तरु-गुल्म-लताप्रभृतयो नितान्तं प्रमोदन्ते। शुक्ल-नील-पीत-रक्त-हरित-कपिश-चित्ररुपैश्चित्रितेयं धरित्री मानवानां चित्तमाहरति अपरिमितमाह्लादञ्च तेभ्यो प्रयच्छति। वसन्तस्य माहात्म्यं प्रतिपादयता भगवता श्रीकृष्णेन गीतायामुक्तम्-

मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः (गीता, 10.35)

वसन्तस्यामुमेव सौन्दर्यसारं विमृश्य महाकविः कालिदासः ऋतुसंहारनाम्नि ग्रन्थे सुललितैः पद्यैः एवं निरूपयति-

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं, स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धि।
सुखाः प्रदोषाः दिवसाश्च रम्याः, सर्वं प्रिये चारुतरं वसन्ते॥ (ऋतुसंहार)

अन्ते वसन्तोत्सवस्य हार्दिकं वर्धापनं विज्ञापयन् संस्कृतरत्नाकरस्य प्रस्तुतमङ्कं संस्कृतसमुपासकेभ्यः पाठकेभ्यः सादरं समर्घ्य नितरां प्रमोदे।

प्रो० शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः,नवदेहली

13 डॉ. गोस्वामी गिरिधारी लाल शास्त्री द्वारा विरचित फलित ज्योतिष-विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा

प्रो. किशोरचन्द्रमहापात्रकृते प्रणयप्रसादनमहाकाव्ये सांस्कृतिकं विवेचनम् 14
अनूपकुमारसिंहः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 20)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

फरवरी 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली–110067

वर्ष : 7 अंक : 09 (81)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit research journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान संपादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

संपादक : प्रो० शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर.एन. वत्स 'एडवोकेट'
पं० हरिदत्त वशिष्ठ,एन.के. गोयल

ग्राफ़िक्स डिजाइनर : मनोज कुमार

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी
महासचिव, अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

दूरभाष : 011-41552221 मो.-9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत-रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 महाभारत में मोक्ष चिन्तन
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

भर्तृहरिसम्मतं वाक्यार्थस्वरूपम् 06
पद्मश्रीआचार्यरामयत्नशुक्लः

11 अद्वैत वेदान्त की शिक्षाशास्त्रीय दृष्टि
विजय गुप्ता

सम्पादकीयम्

गुणधर्मविहीनो यो निष्फलं तस्य जीवितम्

संस्कृतभाषा अस्माकं सांस्कृतिकी भाषाऽस्ति, यतः अत्रैव समेऽपि संस्काराः सम्प्राप्यन्ते। अस्यां नैकानि सुवचनानि, सुभाषितानि, मानवमूल्यानि च विलसन्ति, यानि बालकेभ्यो युवकेभ्यश्च सत्प्रेरणां प्रयच्छन्ति। मानवजीवने मानवमूल्यभूताः गुणाः मूर्धन्यं स्थानं विभ्रति। जने-समाजे-लोके च सर्वत्र यशो लाभाय प्रतिष्ठाप्राप्तये च गुणा एव हेतुभूताः भूयन्ते। गुणानां प्रभावादेव मानवाः सर्वत्र सम्पूज्यन्ते। कोऽपि जनः उच्चकुले समुत्पन्नः, रूपयौवनसम्पन्नः, प्रभुत्वपरिपूर्णः, वैभवविशिष्टश्चेत् समाजे नूनं पूजनीयो भविष्यति इति निश्चयेन वक्तुं न शक्यते, अपितु समाजे गुणवन्तः, ज्ञानवन्तः, अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहवन्तः, आचारवन्तश्च जनाः अवश्यमेव सर्वत्र हृदयेन समादृियन्ते पूज्यन्ते च। पूजास्थानं गुणा एव भवन्ति न तु लिङ्गं न च वयः इति प्रसिद्धं भवभूतिवचः-

शिशुर्वा शिष्या वा यदसि मम तत्तिष्ठतु तथा,
विशुद्धेरुत्कर्षस्त्वयि तु मम भक्तिं द्रढ़यति।
शिशुत्वं स्त्रैणं वा भवतु ननु वन्द्यासि जगतां,
गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः॥

(उत्तरराम. 4/11)

उक्तगुणगणमहिम्न एव सत्यपि निर्धने, सत्यपि कुरूपे, सत्यपि कृशकाये, सत्यपि दिव्याङ्गे, सत्यपि लघुवपुसि, सत्यपि च बालवयसि जनाः पूजनीयाः वन्दनीयाश्च दृश्यन्ते। किमधिकं गुणवैभवादेव आचारवन्तोऽर्च्यन्ते, गुणवन्तो गण्यन्ते, ज्ञानवन्तो ज्ञायन्ते, बुद्धिमन्तो वन्द्यन्ते, चरित्रवन्तश्च सर्वथा चर्च्यन्ते। सुसंस्कृताः संस्पृहणीयाः, असंस्कृताश्च तिरस्करणीयाः भवन्ति। अतो लोके सभायां सर्वत्रास्माकं सम्माननं भवेत्, अस्माकं प्रभावो वर्धेत्, अस्माकमनुयायिनोऽसंख्याः प्रभवन्त्विति धिया विद्यते चेत् गुणाः सयत्नमर्जनीयाः। सति गुणे सर्वं सुलभायते। अन्ते समेषां सचेतसमात्मनि दिव्यगुणाः समुत्पद्येरनिति भावनया शास्त्रेषु निगदितानि कर्णामृत-सूक्तिवचनानि सर्वैः सततं पालनीयानि- • स्वस्तिपन्थामनुचरेम, • भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम, • मधुमतीवाचमुदेयम, • भद्रं मनः कृणुष्व, • मातृदेवो भव, • पितृदेवो भव, • आचार्यदेवो भव, • अतिथिदेवो भव, • स्वाध्यायान्मा प्रमदः, • सत्यं वद • धर्मं चर, • मा गृधः कस्यस्विद्धनम्, • मा विद्विषावहैः, • लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्त्विति।

मित्राणि! अमीषां वचसां प्रतिपदं परिपालनेन नराः येषां केषां न ते वन्द्याः?

वदनं प्रसादसदनं हृदयं सदयं सुधामुचो वाचः।

प्रो० शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः,नवदेहली

14 योग तथा ज्योतिष से महामारी का निदान
डॉ० द्वारिका प्रसाद नौटियाल

योग विद्या में ध्यान का स्वरूप एवं महत्त्व 17
विष्णु प्रसाद सेमवाल

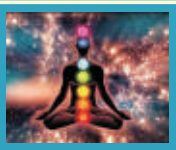

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 20)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
मार्च-अप्रैल, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

।। सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः ।।

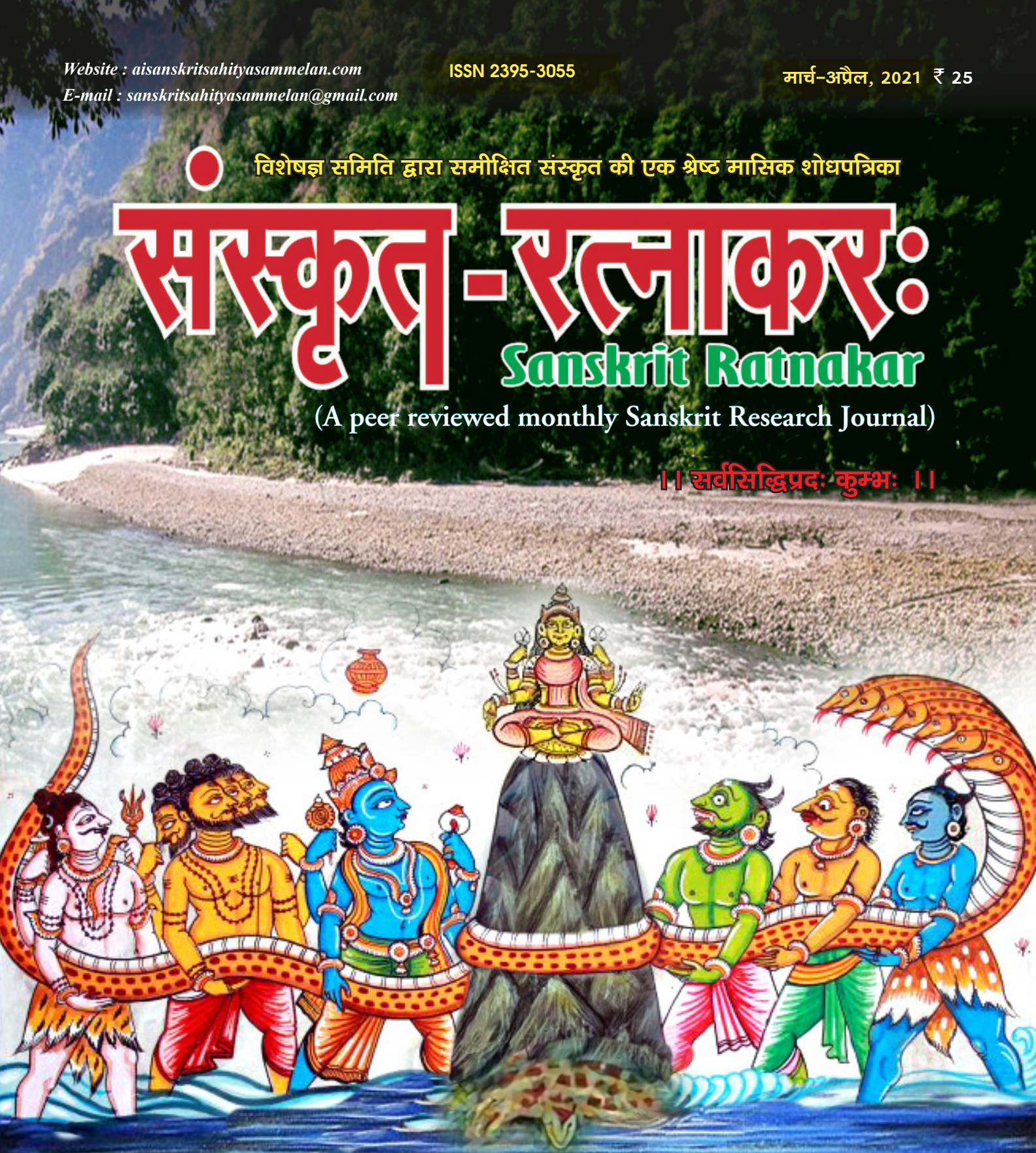

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 7 अंक : 10 (82)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए संस्कृत रत्नाकरः जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03। शास्त्रीय कुम्भतत्त्वमीमांसा – प्रो. शिवशंकर मिश्र

12। कुम्भ कथा : तत्त्वज्ञान एवं माहात्म्य – प्रो. शिवशंकर मिश्र

15। भारतीय संस्कृति के धार्मिक महापर्व कुम्भ की आधुनिक सन्दर्भ में उपादेयता – विजय गुप्ता

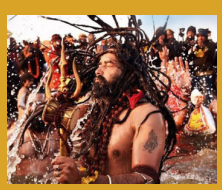

सम्पादकीयम्

भारतीयसंस्कृतौ सनातनपरम्परायाञ्च कुम्भपर्वणो विद्यतेऽपरिमितं महत्त्वम्। इयमस्ति दृढ़ा भावना भारतीयानां यत् कुम्भपर्वप्रसङ्गे गंगायां निमज्जनेन, गोदावर्यामवगाहनेन, शिप्रायामाचमनेन च सिद्ध्यति परमकल्याणलाभः। सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्रागेव निरन्तरं जनाः श्रद्धया कुम्भतीर्थं समागत्य स्नान-दर्शन-पूजनादिना च आत्मानं धन्यमनुभवन्ति।

प्रतिद्वादशवर्षानन्तरं प्रयागे, हरिद्वारे, नासिके, उज्जयिन्याञ्च कुम्भयोगः समायाति। अवसरेऽस्मिन् देशस्य चतुर्भ्यः कोणेभ्यः देशाद्देशान्तरेभ्यश्च शैवाः, वैष्णवाः, सन्यासिनः वैरागिणः, उदासीनाः, निर्मलमतानुयायिनः, गरीबदाससम्प्रदायावलम्बिनः, योगिनः, विविध-सम्प्रदायसिद्धाः सन्तमहात्मानः, भक्ताः, तपस्विनश्च समवेताः भवन्ति। कुम्भस्य विद्यते एतद्प्रभावः यत् सुदूरपर्वतोपत्यकायां तपस्यारतः कश्चन तपस्वी, योगरतः कश्चन योगी, ज्ञानरतः कश्चिज्ज्ञानी, हिमालयस्य उत्तुंगशिखरे साधनारतः समाधिस्थः कश्चन साधकोऽपि कुम्भस्नानजन्यपुण्यार्जनाय सश्रद्धं सोल्लासं समागच्छन्ति।

एकादशवर्षोत्तरैकादशमासं यावत् विलुप्ताः, क्लेशेन दृश्यमानाः नागासन्यासिनोऽपि लक्षशोऽप्यधिकसंख्यायां कुतः सहसा प्रकटीभवन्ति इति महदाश्चर्यं प्रतिभाति।

कुम्भपर्वणो महत्त्वं न केवलं धार्मिकमेवापितु एतस्याध्यात्मिकं, सामाजिकं, सांस्कृतिकं, वौद्धिकम्, आर्थिकञ्च महत्त्वमपि विद्यते। प्रतिद्वादशे वर्षे विविधमतावलम्बिनोऽत्र समागत्य राष्ट्रस्य कथमुन्नतिः, प्रगतिश्च भवेत्, कथं समग्रे विश्वे शान्तिः, समरसता च भवेत्, कथं जनाः सुसंस्कृताः राष्ट्रभक्ताश्च भवेयुरित्येतत्सर्वं बारम्बारमालोडयन्ति मन्थनञ्च कुर्वन्ति चिन्तकाः। ततः समुद्भूतं सिद्धान्तनवनीतं राष्ट्रकल्याणाय, मानवचरित्रनिर्माणाय, जनेषु मूल्यसंस्थापनाय सर्वत्र प्रसारयन्ति प्रतिष्ठापयन्ति च।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः,
शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय

18। भारतीय पर्व का प्रतीक कुम्भ : स्रोत एवं सन्दर्भ – निराली

20। योगस्याधुनिकलोकजीवने प्रभावः – डॉ. कृपा शंकर मिश्र

विचार सागर विमर्श

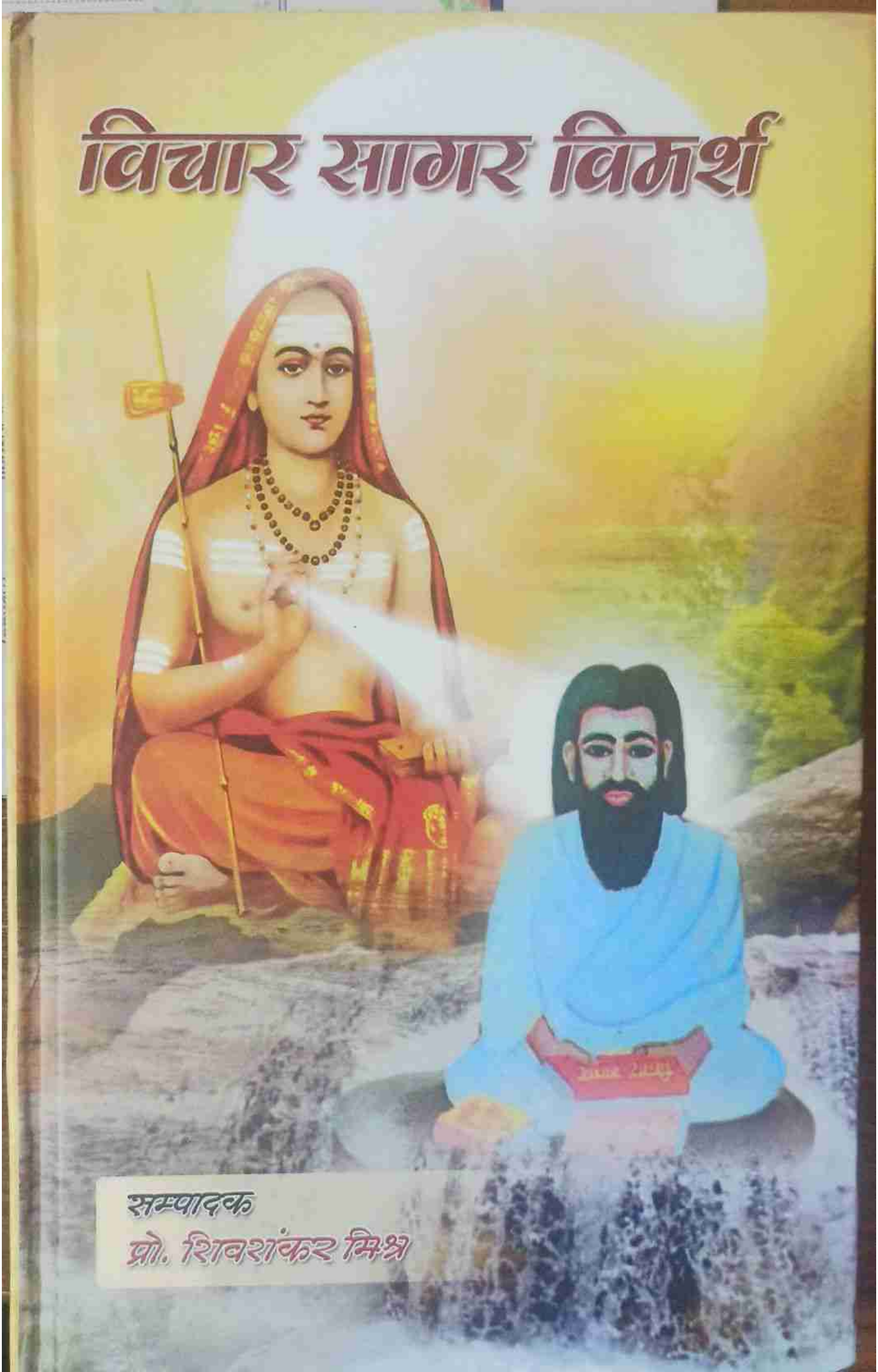

सम्पादक
प्रो. शिवशंकर मिश्र

विचार सागर विमर्श

सम्पादक

प्रो० शिवशङ्कर मिश्र,

शोधविभागाध्यक्ष

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सह-सम्पादक

विजय गुप्ता

सहायकाचार्य, सर्वदर्शन विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रबन्ध सम्पादक

भूपसिंह दहिया, एम०ए० (संस्कृत) (निश्चल रत्न)

अध्यक्ष, सेंट निश्चलदास मैमोरियल इंटरनैशनल मिशन (रजि०)

मान्यता प्रकाशन

60-सी मायाकुञ्ज मायापुरी,

नयी दिल्ली-110064 (भारत)

विचार सागर विमर्श सम्पादक प्रो० शिवशङ्कर मिश्र

प्रकाशक एवं वितरक मान्यता प्रकाशन
60-सी, मायाकुञ्ज मायापुरी,
नयी दिल्ली-110064 (भारत)
Tel 011 - 2540 7546, 2513 7546
9999889290, 98110 14522
mail at manyataprakashan@gmail.com
manyataprakashan@yahoo.com

© सम्पादक/प्रकाशक

ISBN 978-93-92626-00-5

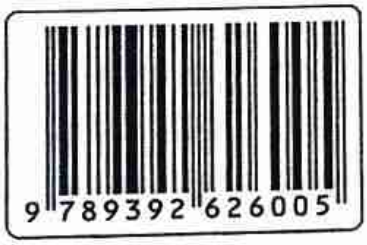

Barcode

प्रथम संस्करण 2021

मूल्य ₹ 975/-

मुद्रक नेशनल मार्किटिंग्स्,
998, कटरा मंगलसेन,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6
mail at rakeshnational@yahoo.com
कम्प्यूट्रीकृत टङ्कण प्रिन्ट्रेडस्, नयी दिल्ली-110064

विचार सागर विमर्श

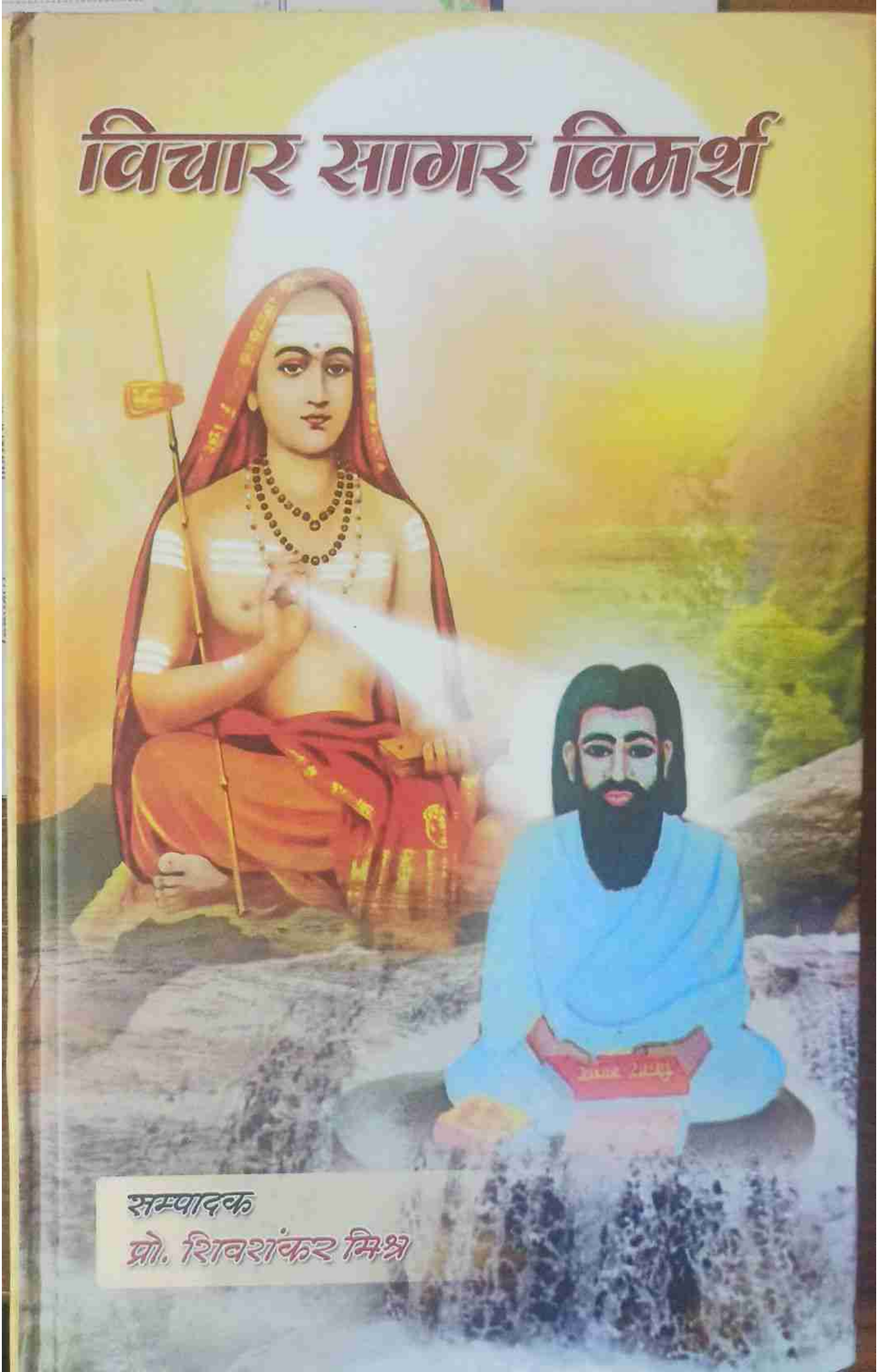

सम्पादक
प्रो. शिवशंकर मिश्र

विचार सागर विमर्श

सम्पादक

प्रो० शिवशङ्कर मिश्र,

शोधविभागाध्यक्ष

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

सह-सम्पादक

विजय गुप्ता

सहायकाचार्य, सर्वदर्शन विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रबन्ध सम्पादक

भूपसिंह दहिया, एम०ए० (संस्कृत) (निश्चल रत्न)

अध्यक्ष, सेंट निश्चलदास मैमोरियल इंटरनैशनल मिशन (रजि०)

मान्यता प्रकाशन

60-सी मायाकुञ्ज मायापुरी,

नयी दिल्ली-110064 (भारत)

प्रकाशक एवं वितरक **मान्यता प्रकाशन**
60-सी, मायाकुञ्ज मायापुरी,
नयी दिल्ली-110064 (भारत)
Tel 011 - 2540 7546, 2513 7546
9999889290, 98110 14522
mail at manyataprakashan@gmail.com
manyataprakashan@yahoo.com

© सम्पादक/प्रकाशक

ISBN 978-93-92626-00-5

Barcode

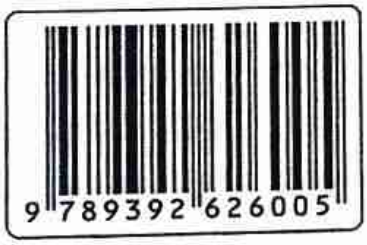

प्रथम संस्करण 2021

मूल्य ₹ 975/-

मुद्रक नेशनल मार्किटिंग्स,
998, कटरा मंगलसेन,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6
mail at rakeshnational@yahoo.com
कम्प्यूट्रीकृत टङ्कण प्रिन्ट्रेडस्, नयी दिल्ली-110064

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक
विजय गुप्ता

Year : 2021 Vol. 02 Month : December

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह–सम्पादक
विजय गुप्ता

Year : 2021 Vol. 02 Month : December

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 06, अंक : 02

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
दिसम्बर 2021

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
श्री विजय गुप्ता

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेलः vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
* पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
* पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल
(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (पूर्वकुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

शोधपत्र समीक्षा समिति
(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय,
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- प्रो. जे. के. गोदियाल,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग,
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा,
  राज. महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह,
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल,
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा,
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	न्याय-वैशेषिकनये प्रमेयपदार्थनिरूपणम्	जगत् ज्योति पात्रः	01
2.	न्याय-वैशेषिकप्रस्थाने पदार्थानां साधर्म्य....	गीताञ्जलि देइ	09
3.	योगवाङ्मये कुलयशस्विशास्त्रिविरचितस्य योग....	निराली	15
4.	प्रत्यभिज्ञादर्शनस्य वैशिष्ट्यम्	विनयकौशिकः	21
5.	गंगाधर शास्त्री, उनकी शिष्यसम्पत् तथा कृतियाँ	प्रो. रमाकान्त पाण्डेय	24
6.	पुराणों में योग का स्वरूप	डॉ. रमेश कुमार	52
7.	विशिष्टाद्वैत के मत में अवयवी के स्वरूप.....	यशवन्त कुमार त्रिवेदी	59
8.	“प्राक्कडात्समासः एवं सह सुपा” सूत्रों का....	कुसुम लता	70
9.	रामस्तु भगवान् स्वयम्	योगेश कुमार मिश्र	77

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक

विजय गुप्ता

Year : 2022 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह–सम्पादक
विजय गुप्ता

Year : 2022 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 07, अंक : 01

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
जून 2022

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
श्री विजय गुप्ता

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.
ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेलः vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
* पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
* पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल
(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (पूर्वकुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

शोधपत्र समीक्षा समिति
(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय,
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- प्रो. जे. के. गोदियाल,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग,
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा,
  राज. महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह,
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल,
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा,
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	सूर्यरश्मेः प्रभावः चिकित्सा च	डॉ.हरीशकुमारः	1
2.	रामायणे विश्वबन्धुत्वम्	योगेशकुमारमिश्रः	5
3.	यादवाभ्युदयमहाकाव्ये समागतानां सन्नन्त.....	मधुरकवि-आचार्यः	11
4.	पाणिनीयप्रयुक्तानां भाववाचकपदानां.....	रविशङ्करद्विवेदी	17
5.	भारतीयदर्शनेषु जैनज्योतिषाधारितलोकविमर्शः	आकाशः	28
6.	काश्मीरशैवदर्शने शिवाद्वयवादः	अभिषेककुमारोपाध्यायः	34
7.	इको यणचीति सूत्रार्थविचारः	सुधीरप्रसादनौटियालः	40
8.	न्यायजैनदर्शनयोः कारणविवेचनम्	अभिषेककुमारशुक्लः	44
9.	तिथिगण्डान्तपरिज्ञानम्	राकेशममगाईं	53
10.	अष्टाध्यायी-सरस्वतीकण्ठाभरणदिशा समास...	प्रभाकरसुयालः	59
11.	निर्मल वर्मा के निबन्धों में संस्कृति-चिन्तन	प्रदीप चतुर्वेदी	66
12.	संयोगितास्वयंवर नाटक में समाज एवं	अनु कुमारी	71
13.	अभिज्ञानशाकुन्तल में वर्णित प्रकृति.....	रमन शर्मा	79
14.	Yoga as a Relaxation Technique....	Dr. Ramesh Kumar and Dr. Vikram Singh	83

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

46 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाई-सितम्बर) 2021 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

आवश्यक सूचना

शोधप्रभा के 46वें वर्ष, प्रथम अंक (जनवरी मासाङ्क, 2021) में पृ.सं. 36-46 पर प्रकाशित शोधपत्र शीर्षक **"पुराणलक्षणसन्दर्भे श्रीमद्भागवतस्य दशलक्षणानि ग्रन्थस्वरूपे तेषां संगतिश्च"** के लेखक प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र हैं। अत: डॉ. नीरज नौटियाल का नाम हटाकर उक्त संशोधन करने की कृपा करें। सादर।

-सम्पादक, शोधप्रभा

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृति:, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्म-गौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तन-प्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुत: विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभि: नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीया: तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरी प्रभृतयो भाषा: तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्या: भावनाया: सम्पूर्ति: संस्कृतभाषया एव सम्भवति यत: संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकताया: मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोध:। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयाम:।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्य: षट्चत्वारिंशद्वर्षेभ्य: नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वास:।

शोधप्रभाया: प्रकृतेऽस्मिन्नङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिता: त्रयोदशशोधनिबन्धा: प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नै: नदीष्णै: सुधीभि: अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभाया: 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिण:।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्र:
शोधविभागाध्यक्ष:

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. **ललितोपाख्यानस्य ब्रह्माण्डपुराणाङ्गता : एको विचारः** 1-4
   - प्रो. भारतेन्दुपाण्डेयः

2. **वैदिकसंहितासु संहतिबोधस्य भावना** 5-9
   - डॉ. शिप्रारायः

3. **साङ्ख्यदर्शने ब्रह्मादिविमर्शः** 10-17
   - डॉ. अरविन्दकुमारतिवारी

4. **अचिन्त्यभेदाभेददर्शनसम्प्रदाये श्रीमद्भागवतस्य गुरुत्वम्** 18-23
   - डॉ. सुकन्या सेनापतिः

5. **'दयानन्ददिग्विजयम्' इति महाकाव्ये चित्रकाव्यानि** 24-38
   - डॉ. शैलेन्द्रकुमारशर्मा

6. **योगोपनिषत्सु धारणास्वरूपविमर्शः** 39-43
   - डॉ. मोहनलालशर्मा

हिन्दी विभाग

7. **प्राचीन ग्रन्थों में श्वान-चित्रण** 44-54
   - डॉ. महेश दत्त शर्मा

8. **वैदिक साहित्य में पर्यावरण शिक्षण प्रणाली की प्रासंगिकता** (राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में) 55-61
   - प्रो. रमेश प्रसाद पाठक
   - डॉ. संजय शर्मा

9. **षड्दर्शनों में समाधि-निरूपण** -श्री किरन कुमार आर्य 62-69

10. **यङ्प्रत्ययार्थ विवेचन** - डॉ. कृष्णकान्त झा 111

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

46 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2021 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरी प्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः षट्चत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्-घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्नङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः नवशोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. पाणिन्यष्टाध्यायीसूत्रपदेषु प्रयुक्तषष्ठीसप्तम्यर्थनिरूपणम् 1-12
   - श्रीशिवशंकरकरणः

2. कालिदाससाहित्ये वैदिकजीवनदर्शनम् 13-20
   - डॉ. व्रजेन्द्रकुमारसिंहदेवः

3. व्याकरणन्यायमीमांसामते जातिव्यक्तिवादः 21-25
   - डॉ. मोहिनी आर्या - श्रीब्रह्मानन्दमिश्र

4. भारतीयदर्शनेषु शैक्षिकविमर्शः 26-32
   - डॉ. कुलदीपसिंहः

5. आयुर्वेदे साङ्ख्यीयप्रकृतितत्त्वसमीक्षणम् 33-37
   - श्रीविजयगुप्ता

हिन्दी विभाग

6. वाक्काव्यं न तु शब्दार्थौ 38-44
   - प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी

7. संस्कृत साहित्य में प्रेमतत्त्व 45-82
   - प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

8. श्रीमद्भगवद्गीता के कर्मयोग की प्रासंगिकता 83-95
   - डॉ. सुषमा देवी

English Section

9. Nritya Rachana-s by Composers of Kerala 96-104
   - Prof. Deepti Omchery Bhalla

✦✦✦

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

47 वर्षे प्रथमोऽङ्कः (जनवरी-मार्च) 2022 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः षट्चत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्-घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्नङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः अष्टौ-शोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. **दीक्षणीयेष्टिस्वरूपम्** 1-8
-विद्यावाचस्पतिः डॉ. सुन्दरनारायणझाः

2. **उत्सवप्रियाः खलु मनुष्याः** 9-13
-डॉ. राधेश्यामगंगवारः

3. **कर्मत्वविचारः** 14-23
-डॉ. बद्रीनारायणगौतमः

हिन्दी विभाग

4. **प्राचीन भारत में संघतन्त्र, राजतन्त्र तथा लोकतन्त्र** 24-42
(संस्कृत शास्त्र परम्परा के सन्दर्भ में)
-डॉ० महेश दत्त शर्मा

5. **विश्वकर्मा-सूक्त में ईश्वरास्तित्व की सिद्धि** 43-54
(न्याय-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में)
-डॉ. अनीता राजपाल

6. **कालिदास के ग्रन्थों में विज्ञान एवं चिकित्सा शिक्षा के सन्दर्भ** 55-60
-डॉ. अमित कुमार जायसवाल

7. **वैदिक वाङ्मय में वास्तुशास्त्र** 61-68
-श्री जीवन जोशी

English Section

8. **Sāṅkhyatattvapradīpa of Tulasīrāma - an unpublished Sāṅkhya work** 69-104
-Dr. Dhaval Patel, IAS

✦✦✦

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

47 वर्षे द्वितीयोऽङ्कः (अप्रैल-जून) 2022 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः सप्तचत्वारिंश-द्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्ङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः अष्टौ-शोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनमुपस्थापितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. कविः काव्यं काव्यप्रकाशश्च 1-14
-डॉ. अरविन्दकुमारपाण्डेयः

2. संस्कृतवाङ्मये वैज्ञानिकानाम् अवदानम् 15-21
-डॉ. श्रीमन्तचटर्जी

3. वैदिकसमाजसमीक्षणम् 22-30
-डॉ. संकल्पमिश्रः

4. योगस्तस्य षडङ्गता 31-35
-श्रीअभिषेककुमार-उपाध्यायः

हिन्दी विभाग

5. नाट्यसन्धि-सन्ध्यङ्गनिरूपण (भाग-1) 36-65
-डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

6. प्राचीन भारतीय चिन्तन में साप्तांग राज्य 66-83
-डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार मिश्र

7. कैवल्य का स्वरूप (योगदर्शन के सन्दर्भ में) 84-91
-डॉ. अजित कुमार

English Section

8. **Influence of Sanskrit literature on Ancient Indonesian Kakawina poetry** 92-103
- Dr. Lalit Pandey

✦✦✦

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

मई–जून, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 7, 8 अंक : 12, 1 (84, 85)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान सम्पादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

सम्पादक : प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'

ग्राफिक डिजाईनर : विश्वकर्मा शर्मा

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.

दूरभाषा : 011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकर": जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03। संस्कृत साहित्य में महाराणा प्रताप
– प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

09। पुराणेषु श्रीमद्भागवत-महापुराणस्य स्थानम्
– डॉ. तारादत्त अवस्थी

14। शंख बजाने के लाभ
– शशींद्र मिश्र

सम्पादकीयम्

अत्यन्तं क्लान्तं जनयत्यसौ प्रसंगः यत् सन्तोऽपि भारतीयाः वयमसदाचरणे तत्पराः। भारते जन्मलाभः गौरवाय भवति, श्रेयाय भवति अतएव देवा अपि अस्यां भुवि जन्म वाञ्छन्ति। एवं भूता देवैः स्पृहणीया इयं दिव्या भूमिः। यस्मिन् देशे चरित्रमेव सर्वश्रेष्ठं बलं भवति, यस्मिन् देशे गुणा एव पूजास्थानानि भवन्ति। तत्र सदाचरणमकृत्वा असदाचरणे जुगुप्सिते च कार्ये वयं नितरां निरता इति महते दौर्भाग्याय कल्प्यते। प्रसङ्गेऽस्मिन् मनुना लिखितं मनुस्मृतौ –

- **एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
  स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥
- **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु लिङ्गं न च तद् वयः।**

अन्यच्च –

- **वृत्तं यत्नेन संरक्ष्येत् वित्तमायाति याति च।**
  अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥

एवं भूते दिव्यदेशे विलोक्यतां सम्प्रति का दशा? प्रतिदिनं समाचारपत्रं भ्रष्टाचारसूचनाभिः पूरितं भवति, लुण्ठनम्, वञ्चनम्, अपहरणम्, उत्कोचकृत्यं समाचारपत्रस्य मुख्यं वृत्तं भवति। चरित्रबलन्तु सर्वथा दूरे अपगतम्। किमधिकं सर्वत्र सर्वेषु च जनेषु आचारहीनता दरीदृश्यते।

अतः जनानामभ्युदयाय समाजस्य समुन्नत्यै च सम्प्रति चरित्रशिक्षणं नितान्तमनिवार्यमनुभूयते, यतोहि यावच्चरित्रमुत्कृष्टं न भवति, यावज्जीवने अहिंसा-दया-करुणा-परोपकारप्रभृति गुणानामवकाशो न भवति, यावत् सौहार्दं नोदेति, यावत् पापान्न विभेति, यावन्नैतिकाचरणं न भवति तावत् केवलं समग्रस्य विश्वस्य सूचनासंग्रहणं सर्वथा व्यर्थमेव। केवलमर्थप्रदायिनी शिक्षा उदरन्तु पोषयति परञ्च चित्तं नाह्लादयति, न च शान्तिं प्रददाति, न चात्मकल्याणं जनयति। अतः केवलं पदार्थविषयिणी शिक्षा, केवलञ्च सूचनाप्रदायिनी शिक्षा नास्त्यस्माकं देशाय संस्कृत्यै च श्रेयस्करी अपितु शिक्षा समकालमेव विद्याऽपि अपेक्ष्यते, यया वयं भारतीया इति बोधो जागर्ति, **सर्वे भवन्तु सुखिन** इति भावः समुदेति, या च मुक्तिमार्गमुद्घाटयति सैव विद्या अपेक्ष्यते-**सा विद्या या विमुक्तये।**

अस्त्वस्माकं जीवनं भारतीयसंस्कृत्यनुरूपं मूल्यपरकं च यथा भवेत् तादृशी ज्ञानपद्धतिः अस्माभिरनुकरणीया आचरणीया च भवत्विति भूरिशो विनिवेदनम्।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः,
शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

16। योगस्य मूलाधारो वेदः
– मनीषा कुमारी

20। व्याकरणशास्त्रीय उपदेशपदार्थविवेचनम्
– डॉ मनोज कुमार द्विवेदी

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

जुलाई–अगस्त, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

//स्वतन्त्रतायाः अमृतमहोत्सववर्षाधारितः //

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 7 अंक : 12 (84)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकर": जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03। स्वतन्त्रता संग्राम में संस्कृत साहित्य की भूमिका
– प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

13। जीवन का आधार जल
– डॉ. हरीश चन्द्र

16। पाण्डुलिपिसम्पादने पाठालोचनसिद्धान्तविश्लेषणम्
– विजयगुप्ता

सम्पादकीयम्

सर्वं परवशं दुःखं सर्वं स्वात्मवशं सुखम्। प्रतिकूलवेदनीयं दुःखमनुकूलवेदनीयं च सुखमित्यनयोः सुखदुःखयोः मूले स्वतन्त्रतायाः स्वरूपमेवास्माभिरनुभूयते। स्वतन्त्रो नाम स्वस्य तन्त्रम्, स्वस्य शासनमिति। समग्रेऽस्मिञ्जगति जीवन्तो यावन्तोऽपि जीवाः ते सर्वेऽपि निसर्गतः स्वातन्त्र्यं वाञ्छन्ति। स्वतन्त्रतायै सकलं यत्नमाचरन्ति, परञ्च एतावतापि येषां जीवने कृतेऽपि प्रयत्ने स्वतन्त्रता न समायाति तेषां जीवनं वस्तुतः कारागारनिभमेव प्रतिभाति। यत्र मानवाः स्वेच्छया, स्वविचारेण, स्वचिन्तनेन, स्वबुद्ध्या, स्वस्वभावेन, स्वान्तःप्रेरणया च कार्यसम्पादने प्रतिबन्धिताः भवन्ति तेषां जीवने सुखस्य कल्पना सर्वथा स्वप्नायते। तदुक्तं महाकविना गोस्वामिना तुलसीदासेन- **पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।** पराधीनतायाः व्यथा न केवलं मानवैरनुभूयतेऽपितु पशवः पक्षिणोऽपि दुःखिनो दृश्यन्ते। कश्मिश्चिद् स्तम्भे रज्जुभिर्बद्धाः पशवोऽपि रज्जुबन्धानादुन्मोचनाय व्याकुलाः विलोक्यन्ते। पिंजरे परिवृताः शुक-पिक-चटकाः पक्षिणोऽपि प्राप्तेऽपि सर्वविधान्नजलादिसंसाधने अवसरं सम्प्राप्य स्वच्छन्दे गगने सद्यः उड्डीयन्ते। एतेन सिद्ध्यति स्वतन्त्रतायाः हार्दमिति। पराधीनजीवनस्य दुःखं प्रतिपादयता केनचित् संस्कृतकविना अत्यन्तं सुचारु चित्रणं कृतम्-

वासः काञ्चनपिञ्जरे नृपवरैः नित्यं तनोमार्जनम्,
भक्ष्यं स्वादुरसालदाडिमफलं पेयं सुधाभं पयः।
वाच्यं संसदि रामनाम सततं धीरस्य कीरस्य भो,
हा हा हन्त! तथापि जन्मविटपे क्रोडे मनो धावति॥

अप्पाशास्त्री राशिबड़ेकरमहोदयानां **'पञ्जरबद्धः शुकः'** इत्यभिधाना कविता परतन्त्रभारतस्य यथार्थवेदनामभिव्यनक्ति-

शुक सुवर्णमयस्तव पञ्जरो न खलु पञ्जर एष विभाव्यताम्।
मुखमिदं ननु हेमशलाकिका रदनशालिमृतेरतिभीषणम् ॥

मित्राणि! स्वतन्त्रतावर्षस्यामृतमहोत्सवावसरे प्रकृतेऽस्मिन्ङ्के 'स्वतन्त्रतासंग्रामे संस्कृतसाहित्यस्य भूमिका' इति विषये प्रो. रमाकान्त-पाण्डेयमहोदयानामत्यन्तं गभीरं ज्ञानगर्भकं शोधपत्रं प्रकाश्यते। सर्वैः संस्कृतज्ञैरवश्यं पठनीयमिदं शोधपत्रमथ च स्वतन्त्राकर्मणि समर्पितान् संस्कृतविदुषः प्रति सश्रद्धं कार्तज्ञ्यमाविष्करणीयमिति विनिवेदये।

॥ जयतु भारतम् ॥ जयतु संस्कृतम् ॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

19। Veda and Global Peace
– शुभदीप घोष

22। दारिद्र्यं परमं दुःखम्
– डॉ. कमलेश मिश्र

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

सितम्बर–अक्टूबर, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 8 अंक : 4, 5 (88, 89)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकर": जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03। क्रान्तिवीर प्रवासी संस्कृत शिक्षक....
– प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

08। भारतीय वाङ्मय में मोक्ष का स्वरूप
– डॉ. रमेश कुमार

11। ताजिकमते अरिष्टविमर्शः
– श्री हर्ष द्विवेदी

14। प्रतिज्ञाहानि नामक निग्रहस्थान का विववेचन – यशवन्त कुमार त्रिवेदी

सम्पादकीयम्

अस्माकं भारतीयज्ञानपरम्परायां शिष्येभ्यो यो वेदमध्यापयति मन्त्रव्याख्यानञ्च करोति स अध्यापकत्वेन परिकल्पितः। अध्यापको नाम अध्यापनकर्ता, पाठगुरुः, अध्यापयिता, संस्कारादिकर्तुर्गुरुराचार्यः, उपाध्यायश्चेति। अद्यत्वे अध्यापकस्यैवाभिधानं शिक्षकत्वेन सुप्रसिद्धम्, अतएव डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन्महोदयानां जन्मतिथिमभिलक्ष्य शिक्षकदिवसः प्रतिवर्षं परिपाल्यते भारतसर्वकारेण। स चाध्यापकः अस्माकं शास्त्रेषु द्विधा सुप्रसिद्धः आचार्यः उपाध्यायश्च। शिष्येभ्यो यो निःशुल्कं शिक्षां प्रददाति स आचार्य इति गीयते-

- **उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।**
  सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥ (मनु. 2/140)
- **यस्तूपनीय व्रतादेशं कृत्वा वेदमध्यापयेत्तमाचार्य्यं विद्यात्।**

आचार्यस्य अन्यापि एका परिभाषा सुप्रसिद्धा-

- **आचिनोति च शास्त्रार्थम् आचारे स्थापयत्यपि।**
  स्वयमाचरते यस्तु स आचार्य इति स्मृतः॥

मेनियरविलियम्सविरचिते कोशग्रन्थे आचार्यविषये एतद्वचनं सम्प्राप्यते- Knowing or teaching the आचार or Rules.

"योऽध्यापयति वृत्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते" इति मनूक्तलक्षणेन सिद्ध्यति यत् शिष्येभ्यो यो शुल्कमादाय शिक्षां प्रददाति स उपाध्यायो भवति-

यस्त्वेनं मूल्येनाध्यायेदेकदेशं वा तमुपाध्यायमिति। अद्यत्वे शिक्षाप्रणाल्यां शिक्षाकर्मणि संलग्नाः जनाः शिक्षकत्वेन विज्ञायन्ते। वस्तुतः पुरा ये उपाध्यायाः आसन् त एव इदानीं शिक्षका इत्यनुभूयते। शिक्षकविषये शिक्षाविषये चात्यन्तं सुप्रसिद्धमाचार्यचाणक्यवचनम् (भाषायाम्) सम्प्रत्यपि लोकमानसे शिक्षकाणां गौरवसंवर्धनाय अस्मानत्यन्तं सम्प्रेरयति-

- शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।
- शिक्षा ही सबसे अच्छी मित्र है, शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा यौवन और सौन्दर्य को परास्त कर देती है।

समाजस्य निखिलेषु प्रकल्पेषु साक्षात् परम्परया वा शिक्षकाणां महती भूमिका अनुभूयते। तत् कामं युद्धं भवेत् शान्तिर्वा भवेत्, ग्रामो भवेत् संग्रामो वा भवेत्, सर्वत्र शिक्षकाः अमूर्ततया विराजन्ते। स्वतन्त्रतासंग्रामेऽपि संस्कृतशिक्षकाणां संस्कृतच्छात्राणाञ्चासीत् महती प्रस्तावना इति प्रकृतेऽङ्के भवन्तः पठितुं प्रभवन्ति।

यथा दृश्यमानं किमपि गगनचुम्बिभवनं मूले आधृतं भवति। यदि मूलं दृढं न भवेत्तर्हि भवनमपि सुदृढं न स्यात्, तद्वदेव सर्वत्र प्रशासकेषु, न्यायाधीशेषु, चिकित्सकेषु, अधिवक्तृषु, अभियन्तृषु, व्यापारिषु, कर्मचारिषु च मूले सूक्ष्मतया शिक्षक एव सन्तिष्ठते। शिक्षकः शिक्षायाः हेतुः, शिक्षा च सकलाभ्युदयस्य हेतुरिति विद्यते कश्चन क्रमः। अतः सकलज्ञानप्रदायकः, परमार्थपथप्रदर्शकः, निखिललोकव्यवहारबोधकः, ज्ञानवैभवस्य, निःश्रेयसाभ्युदयस्य च सम्प्रदायकः शिक्षकः सर्वैस्सादरणीयोऽनु करणीयश्चेति मे मतिः।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली - ११००१६

16। केवलसमासस्य वैलक्षण्यं, चकारार्थश्च
– अर्चना शर्मा

18। वैदिक देवता और उनका वाहन
–डॉ. योगानन्द शास्त्री – विजय गुप्ता

20। प्राकृतिक चिकित्सा या प्राकृतिक जीवन
– डॉ. नवदीप जोशी

22। श्वेताश्वतरोपनिषदि ब्रह्मणः स्वरूपम्
– हरि मैनाली

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

नवम्बर, 2021 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

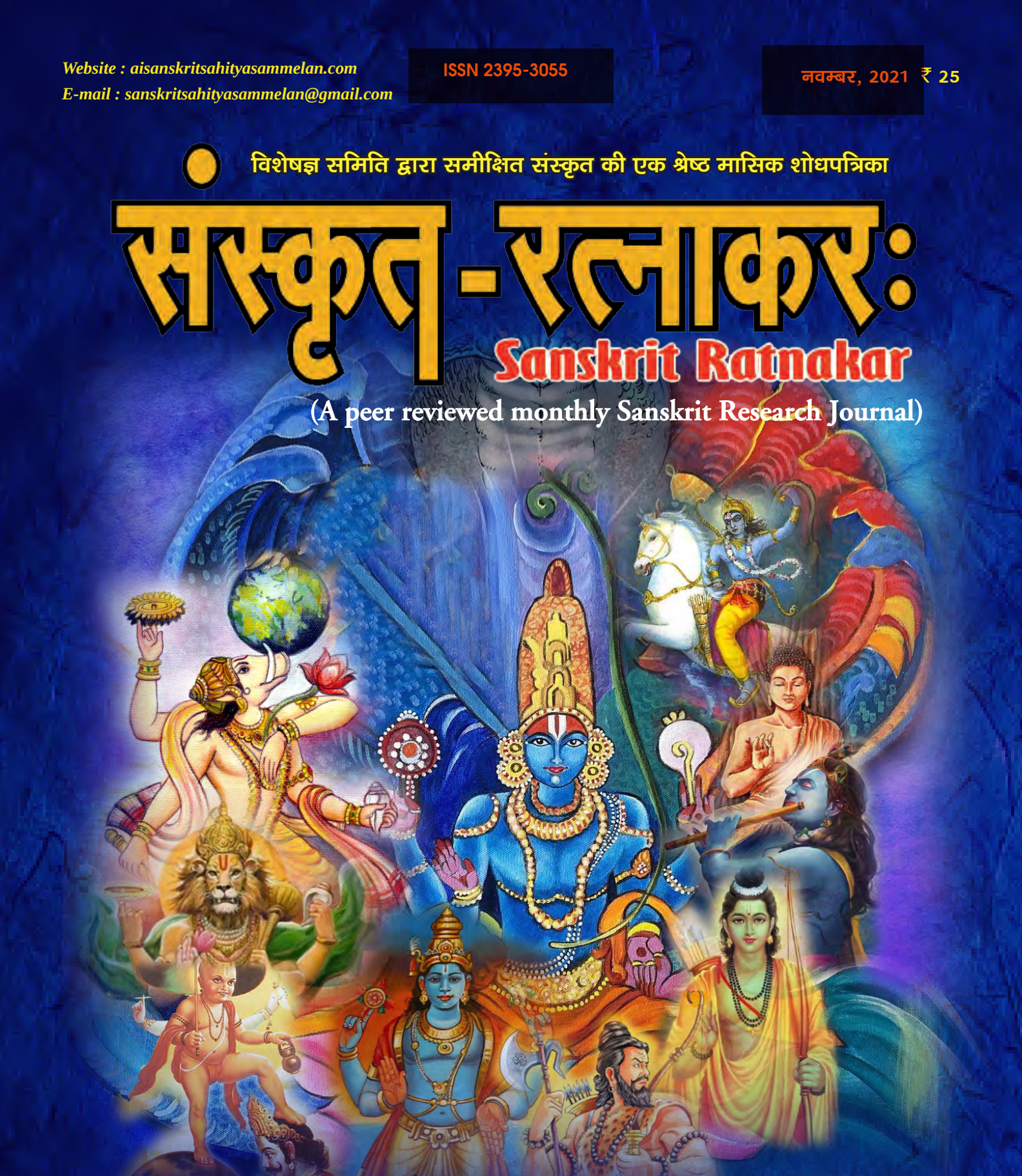

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 8 अंक : 6 (90)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष : प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक : प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल : आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर : विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.
दूरभाषा : 011-41552221, मो.- 9818475418
Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकर": जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 | संस्कृत में महाकाव्य रचना .....
– प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

06| उपसर्ग स्वरूपविचारः
– श्री सुभाषकुमार तिवारी

08 | वाजसनेयि-संहिता में पदक्रम
– डॉ. निशा गोयल

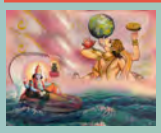

11 | दशावतारों में वराह का वैशिष्ट्य
– नन्दिनी कोटियाल

सम्पादकीयम्

भाषया भाषिणां परिचयः सम्प्राप्यते। जनानां संस्कृतिः, जनानां जीवनम्, जनानामाचरणम्, जनानां व्यवहारश्च भाषयैव व्याख्यायते। समेषां राष्ट्राणां काचिद् राष्ट्रभाषा भवति यस्यां राष्ट्रस्य गौरवं, वैभवं, सौष्ठवं च समुदेति। वस्तुतः राष्ट्रस्य शासनदृष्ट्या राष्ट्रभाषा सा एव भाषा भवितुमर्हति या सम्पूर्णे राष्ट्रे व्याप्ता स्यात् अर्थात् राष्ट्रस्य प्रतिकोणं सकलेषु प्रान्तेषु च प्रचलिता परिचिता वा भवेत्। या हि भाषा राष्ट्रभाषापदमलङ्कृता सती सर्वजनैः पक्षपातविरहितेति अनुभूता भवेत्। यस्यां राष्ट्रभाषायां सत्यां राष्ट्रस्य सकलप्रान्तीयाः जनाः एवम्प्रमुदितमनसा अनुभवेयुर्यत् इयम्भाषा अस्मत्प्रान्तीयभाषाजननीत्वेन अस्मत्सहयोगिनी विद्यते।

यस्यां भाषायां जनोपयोगिप्रचुरं साहित्यम्, देशोपयोगिविपुलं साधनम्, रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजुकुटिलनानापथजुषामित्युनक्त्यनुसारेण-राष्ट्रस्य विभिन्नवर्गाणां कृते प्रकामं विविधजीविकाप्रधानसाहित्यं च समुपलब्धं भवेत्। यस्यां भाषायाम्-देशसमृद्धये राष्ट्रसुरक्षायै च प्रचुरम् अन्वेषणीयम् विज्ञानविपुलम् साहित्यम् दृष्टिगोचरं भवेत्। संक्षेपतः यस्यां भाषायां देशस्य निखिलजनानां सर्वविधलौकिकाभ्युदयाय- दण्डविद्या, वार्ता विद्या, भूगोल-खगोल-गणित-चिकित्सा-चित्रकला- मूर्तिकलाप्रभृतिविविध-विद्यानां प्रतिपादनं भवेत्, अथ च पारलौकिककनिःश्रेयसाय नानाविधानि दर्शनसाहित्यानि विपुलमात्रायां जननयनपथगोचराणि स्युः सा एव भाषा राष्ट्रभाषापदमारोहितुं विराजितुं चालम्।

अस्यामरभाषायां वैदिककालस्य प्रत्यक्षफलप्रदा कर्ममीमांसा, उपनिषत्कालस्य ईशावास्यमिदं सर्वं, सर्वं खल्विदं ब्रह्म इति ब्रह्मविषयिणी विवेचना, आरण्यकयुगीना तपःसाधना, रामायणकालिकी नित्यं प्रमुदिताः सर्वे रामे राज्यं प्रशासति इत्यात्मिका प्रजास्वातन्त्र्यधारिणी रामराज्यवर्णना, महाभारतकालिकी शस्त्रास्त्रशक्तिः, गुप्तकालस्य स्वर्णयुगम्, अशोक-कालस्य शान्तिः, विक्रमकालस्य नीतिः, मुस्लिमकालस्य भीतिः एवं व्यास-वाल्मीकि- कालिदास-भासप्रभृतीनां कवीन्द्राणाम् काव्यकालिका, गर्ग-गौतम-कपिल-पतञ्जालि-जैमिनिप्रभृतीनाम्-दर्शनलतिका, भास्कराचार्यप्रभृतिभिः विकासिता गणितसम्बन्धिनी खगोलगतिका, कौटिल्यकामन्दकादीनां विस्थपिता राजशास्त्रार्थशास्त्रसम्बन्धिनी सुमतिश्च निगूहिता विद्यते। अतः इयमेव भारतस्य गौरवध्वजसंवाहिका भारतीयैः समादृता भाषा विराजते। अतीतस्य गौरवम्, उत्थानं, पतनम्, ह्रासः विकासश्चैतत्सर्वमनयैव धारितम् अस्ति। अतः इयमेव भाषा नूनं भारतदेशस्य राष्ट्रभाषापदे सर्वथा विराजमानयोग्या एवं कथने नास्ति संशीतिलेश इति।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

15 | ज्ञानामृत सन्दोह
– प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

17 | संस्कृतसाहित्ये पुराणानां वैशिष्ट्यम्
– तारादत्त अवस्थी

20 | रसस्यालौकिकत्वसिद्धेर्युक्तिविचारः
– सुभाष कुन्तल

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

जनवरी, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 8 अंक : 8 (92)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय सस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान सम्पादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

सम्पादक : प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'

ग्राफिक डिजाईनर : विश्वकर्मा शर्मा

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसिफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.स. सा.स.

दूरभाषा : 011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 | गंगाधर शास्त्री, उनकी शिष्यसम्पत् तथा कृतियाँ
– प्रो. रमाकान्त पाण्डेय

16 | ललाटाधारेण आमयविमर्शः
– वीरेन्द्र शर्मा

21 | दर्शनदृष्ट्या रससिद्धान्तसमीक्षणम्
– अभिषेक चतुर्वेदी

सम्पादकीयम्

अस्माकं देशस्य परिचयो यया भाषया सम्प्राप्यते, यया संस्कृतिरस्माकं विश्ववन्द्या विराजते, यया विश्वगुरुत्वमस्माकं राराज्यते, यया पश्चिमजगति वयं चिन्तकाः विचारका इति रूपेण प्रसिद्धिमवाप्यते, यया विश्वस्मिन् विश्वे वेदस्य, उपनिषदः, योगस्य, वेदान्तस्य, भारतीयज्ञानवैभवस्य च वैशिष्ट्यं विशदीक्रियते, यया संस्काराः संस्क्रियन्ते, मानवमनसि मूल्यानि निष्पाद्यन्ते, ऋषीणां महर्षीणां, मुनीनां, यतीनां, तपस्विपूर्वजानामहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहादयः प्रकाश्यन्ते। यया वयं श्रेष्ठाः इति रूपेणात्मानं प्रकाशयामः तसास्ति देववाणीतिरूपेण व्यवह्रयमाणा अस्माकं संस्कृतमाता।

संस्कृतमस्माकं गौरवमावहति, वैदुष्यं जनयति, प्रतिष्ठां संवर्धयति। किमधिकं वयं मनुष्याः इति पद-पदे प्रबोधयति। एवंभूतं यत् संस्कृतं तस्य महत्त्वमजानन्तो जनाः नितरां संस्कृतस्नातकेषु भेदभावं जनयन्ति। संस्कृतज्ञानां, संस्कृतसमाराधकानां, संस्कृतजीविनाञ्च परिहासं कुर्वन्ति। क्वचिच्छ्रूयते यत् शिक्षाशास्त्रिस्नातकानां कृते बी.एड. समकक्षावसरो न प्रदीयते, क्वचिदाचार्याणां एम.ए. समकक्षता तिरस्कुर्वते, क्वचित् शास्त्रिस्नातकानां एम.ए कक्षायां प्रवेशो निषिद्ध्यते, क्वचित् पूर्वमध्यमा-उत्तरमध्यमाकक्षायाः हाईस्कूल-इण्टरमीडिएट समकक्षता न स्वीक्रियते, क्वचित् केषुचिन्निदेशालयेषु, केषुचिदायोगेषु, केषुचिदाधुनिकविश्वविद्यालयेषु, केषुचिच्च महाविद्यालयेषु प्राध्यापकपदहेतोः जायमानेषु चयनप्रसङ्गेषु साक्षात्कारेषु चाधुनिकविश्वविद्यालयस्य एम.ए. उपाधिप्राप्ताः छात्रा एव अर्हाः, पारम्परिकसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य आचार्यास्त्वनर्हा इति पापमपि प्राचुर्येण प्रतिदिनं प्रचलति।

किमधिकमितोऽपि दुर्भाग्यजनकं लज्जावहं च वृत्तामचिरमेवास्माकं कर्णपथिसमागतं यत् सैन्यसेवाक्षेत्रे सैन्याधिकारिभिः धर्मगुरुपदेषु यत्र पूर्वमाचार्याः शास्त्रिण एव सर्वथा अर्हा आसन्, तेषामेव चयनं भवति स्म तत्रापि एते शास्त्रिण आचार्याश्च अनर्हाः इत्युद्घोष्यन्ते । महद्दुःखं! क्व याति अस्माकं संस्कृतिः? क्व गता अस्माकमभेदबुद्धिः? क्व पलायिता अस्माकं राष्ट्रभक्तिः? ये खलु आदरभाजस्सन्ति तेषां परिहासो दृश्यते। यदि धर्मोपदेशं शास्त्रवेत्तारः, शास्त्रिण आचार्याश्च न विधाष्यन्ति तर्हि का कथा किमपि सम्भाषणस्य? मन्ये मौनमेव वरम्। साम्प्रतं नीतिवचनमिदं कर्णं पूरयति चित्तं च नितान्तं व्यथयति-

अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते पूज्यपूजा व्यतिक्रमः ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥
यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि ।
निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते ॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com
ISSN 2395-3055
फरवरी–मार्च, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 8 अंक : 9,10 (93,94)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं.सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 | चित्रकूटे साहित्य-प्रणयनपरम्परा
– खुशबू द्विवेदी

09 | ज्योतिषशास्त्रेण रोगविचारः
– अनुजकुमारः

13 | प्राचीन धर्म ग्रन्थ : शाप एवं वरदान
– डॉ. सुनील प्रसाद गौड़

सम्पादकीयम्

संस्कृतं भारतीयसंस्कृतेः आत्मतत्त्वम्। संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः । एतत्प्रभावादेव निखिलेऽस्मिन् जगति प्रतिष्ठतास्माकं भारतीया संस्कृतिः। भारतीयसंस्कृतेः वैभवाद् कृत्स्नेऽपि नभसि भारतस्य गौरवपताका दोधूयमाना विराजते। इयं च संस्कृतिः संस्कृतं विना सर्वथा निष्प्राणभूता। अतो भारतस्य ज्ञानवैभवम्, गुणगणगौरवम्, भारतस्य विपुलमैतिह्यम्, भारतीयं जीवनं, चरित्रं, शस्त्रं, शास्त्राञ्चाव-बोद्धुमेकमेव यत् श्रेष्ठतमं साधनं वरीवर्ति, तदस्ति संस्कृतम्।

संस्कृतमाध्यमेनैव भारतस्य विस्तरेण परिचयः प्राप्तुं शक्यते। भारतं यैर्गुणनिचयैः स्वस्मिन् माहात्म्यमवधारयति, विश्वेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमावहति तत्सर्वमत्र देववाणीतः समागतम्। किं बहुना भारतस्य व्याख्या परिभाषा च संस्कृतेनैव व्याख्यातुं पार्यते नान्यथा, अतएवोच्यते-

संस्कृतेनैव सुसम्पुष्टं भारतं भारतमुच्यते ।
संस्कृतेन विना देशः केवलं चेण्डियोच्यते ॥
उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥

संस्कृतमस्मासु संस्कारं जनयति, ऐक्यं सम्पादयति, विश्वबन्धुत्वं स्थापयति, मित्रभावं परिष्करोति **संगच्छध्वं संवदध्वम्** इति भावं दृढीकरोति, सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु इत्यौदार्यं सन्दिशति किमधिकं सर्वत्र शान्तिसंस्थापनाय, अहिंसा-सत्य-अस्त्येय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहभावानां विस्ताराय, शौच-सन्तोष-तपः-स्वाध्यायेश्वर-प्रणिधानाय भारते संस्कृतमेवानितरसाधारणसाधनं सम्भवति। इयमतयन्तं लोकोपकारिका, अमृतसमा, माधुर्यसंवाहिका, कर्णौ सुखं ददती आत्मन्याह्लादं जनयति, लोकं ददाति लोकोत्तरञ्च संसाधयति अतएवोद्घोषितं केनचित् कविना-

अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं हि ततोऽधिकम् ।
देवभोग्यमिदं तस्माद्देवभाषेति कथ्यते ॥

सम्प्रति भारतसर्वकारः संस्कृतस्य संरक्षणाय संवर्धनाय च बद्धपरिकारो दृश्यते । कथं संस्कृतस्य वातावरणं सर्वत्र सम्भवेत्? कथं संस्कृतं जनभाषा भवेत्? कथं संस्कृतसम्भाषणे सामान्योऽपि जनो दक्षो भवेत्? इति विषये निरन्तरं चिन्तयन्ती संस्कृतभारती अहर्निशं कार्यं करोति। तस्य प्रभावोऽपि समाजे दरीदृश्यते, जनाः अल्पाभ्यासेनापि अत्यन्तं सारल्येन संस्कृतसम्भाषणे दक्षाः भवन्ति। सन्देशोऽयं मनः आत्मानञ्च नितरां सन्तोषयति ।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

अप्रैल, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 8 अंक : 11 (95)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान सम्पादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

सम्पादक : प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'

ग्राफिक डिजाईनर : विश्वकर्मा शर्मा

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.

दूरभाषा : 011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।

विषय सूची

03 | धीरासु श्रेष्ठनारीषु द्रौपदी धुरि कीर्तिता – श्रीनधिः वि

06 | अलौकिकसन्निकर्षविचारः – डॉ. योगेशकुमारत्रिपाठी

09| सांख्यदर्शने कैवल्यविमर्शः – गौरवबहुगणा

12 | शब्दतत्त्व – वलभद्र प्रसाद पाढी

15 | पं. श्रीशिवबालक-शुक्लस्य... – खूशबू द्विवेदी

सम्पादकीयम्

संस्कृतं भारतीयसंस्कृतेः आत्मतत्त्वम्। संस्कृतं नाम दैवी वाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः । एतत्प्रभावादेव निखिलेऽस्मिन् जगति प्रतिष्ठतास्माकं भारतीया संस्कृतिः। भारतीयसंस्कृतेः वैभवाद् कृत्स्नेऽपि नभसि भारतस्य गौरवपताका दोधूयमाना विराजते। इयं च संस्कृतिः संस्कृतं विना सर्वथा निष्प्राणभूता। अतो भारतस्य ज्ञानवैभवम्, गुणगणगौरवम्, भारतस्य विपुलमैतिह्यम्, भारतीयं जीवनं, चरित्रं, शस्त्रं, शास्त्राञ्चाव-बोद्धुमेकमेव यत् श्रेष्ठतमं साधनं वरीवर्ति, तदस्ति संस्कृतम्।

संस्कृतमाध्यमेनैव भारतस्य विस्तरेण परिचयः प्राप्तुं शक्यते। भारतं यैर्गुणनिचयैः स्वस्मिन् माहात्म्यमवधारयति, विश्वेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमावहति तत्सर्वमत्र देववाणीतः समागतम्। किं बहुना भारतस्य व्याख्या परिभाषा च संस्कृतेनैव व्याख्यातुं पार्यते नान्यथा, अतएवोच्यते-

संस्कृतेनैव सुसम्पुष्टं भारतं भारतमुच्यते ।
संस्कृतेन विना देशः केवलं चेण्डियोच्यते ॥
उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः ॥

संस्कृतमस्मासु संस्कारं जनयति, ऐक्यं सम्पादयति, विश्वबन्धुत्वं स्थापयति, मित्रभावं परिष्करोति संगच्छध्वं संवदध्वम् इति भावं दृढीकरोति, सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु इत्यौदार्यं सन्दिशति किमधिकं सर्वत्र शान्तिसंस्थापनाय, अहिंसा-सत्य-अस्त्येय-ब्रह्मचर्य- अपरिग्रहभावानां विस्ताराय, शौच-सन्तोष-तपः-स्वाध्यायेश्वर- प्रणिधानाय भारते संस्कृतमेवानितरसाधारणसाधनं सम्भवति। इयमतयन्तं लोकोपकारिका, अमृतसमा, माधुर्यसंवाहिका, कर्णौ सुखं ददती आत्मन्याह्लादं जनयति, लोकं ददाति लोकोत्तरञ्च संसाधयति अतएवोद्घोषितं केनचित् कविना-

अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं हि ततोऽधिकम् ।
देवभोग्यमिदं तस्माद्देवभाषेति कथ्यते ॥

सम्प्रति भारतसर्वकारः संस्कृतस्य संरक्षणाय संवर्धनाय च बद्धपरिकारो दृश्यते । कथं संस्कृतस्य वातावरणं सर्वत्र सम्भवेत्? कथं संस्कृतं जनभाषा भवेत्? कथं संस्कृतसम्भाषणे सामान्योऽपि जनो दक्षो भवेत्? इति विषये निरन्तरं चिन्तयन्ती संस्कृतभारती अहर्निशं कार्यं करोति। तस्य प्रभावोऽपि समाजे दरीदृश्यते, जनाः अल्पाभ्यासेनापि अत्यन्तं सारल्येन संस्कृतसम्भाषणे दक्षाः भवन्ति। सन्देशोऽयं मनः आत्मानञ्च नितरां सन्तोषयति ।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

मई, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 8 अंक : 12 (96)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar
(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाषा	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

सम्पादकीयम्

- **संस्कृतं संस्कृतिश्चैव श्रेयसे समुपास्यताम् ।**
- **संस्कृतिः संस्कृताश्रिता ।**

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् राष्ट्रगौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने-पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्चस्माकं देशे शासकानां नास्ति तादृशी मतिः, न वा भारतीयानां यूनां तादृक् भाषाप्रेम। केवलमर्थलाभाय यतन्ते तदर्थं कापि भाषा भवेत् कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत् किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वेऽस्मिन् विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जैपनीजभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं तकनीकिज्ञानविज्ञानम्। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्वैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तक्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरी प्रभृति भाषा एवाद्रियन्ते येन न भवति अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वस्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं समासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पदतः संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि भवेत्तर्हि विश्वे भाषादृष्ट्या भारतस्य महत्त्वमभिवर्द्धेत्।

भाषासु मधुरा मुख्या, दिव्या गीर्वाणभारती ।
तस्यां हि काव्यं मधुरं, तस्मादपि सुभाषितम् ॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

विषय सूची

03 | वैदिक वाङ्मय में पर्यावरण चेतना – प्रो. रामानुज उपाध्याय

07 | Environmental Protection: Modern Science and Technology – Dr. Indrakant K. Singh, Shradheya R.R. Gupta

10 | पण्डितराजजगन्नाथ प्रो. राधावल्लभयोः.. – सतीश नौटियालः

13 | जैनधर्म में ज्योतिषीय.... – विजय गुप्ता

17 | संस्कृतवाङ्मय में नैतिक अभ्युदय – शुभदीप घोष

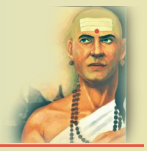

20 | संस्कृत वाङ्मय में निहित... – अंकित भट्ट एवं प्रो. सुरेंद्र कुमार

संस्कृतविश्वविद्यालयग्रन्थमालायाः 118 पुष्पम्

दृक्तुल्यपञ्चाङ्गगणितमीमांसा

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

लेखकः

डॉ.अशोकथपलियालः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

संस्कृतविश्वविद्यालयग्रन्थमालायाः 118 पुष्पम्

दृक्तुल्यपञ्चाङ्गगणितमीमांसा

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

लेखकः

डॉ.अशोकथपलियालः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोध-प्रकाशनविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्

नवदेहली - 110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्

नवदेहली - 110016

© श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य।

ISBN : 81-87987-95-2

मूल्यम् : 650/-

प्रकाशनवर्षम् : 2022 ई.

मुद्रकः

गणेशप्रिंटिंगप्रैस

कटवारियासरायः, नवदेहली -110016

मोबाईलसंख्या : 9811663391

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठसंख्या
समर्पणम्		III
नैवेद्यम्		V
सम्पादकीयम्		VII
आमुखम्		IX
विषयानुक्रमणिका		XV
प्रस्तावना		XVII
सङ्क्षिप्ताक्षरसङ्केतसूची		XXIII
प्रथमोऽध्यायः		1-154
1.1	ज्योतिश्शास्त्रे पञ्चाङ्गस्यावश्यकता महत्त्वञ्च	1-3
1.2	पञ्चाङ्गस्येतिहासः	3-
1.2.1	पूर्ववैदिककालीनपञ्चाङ्गम्	4-5
1.2.2	वैदिककाले पञ्चाङ्गस्यावधारणा	5-32
1.2.3	वेदाङ्गकालीनपञ्चाङ्गस्वरूपम्	33-50
1.2.4	वेदाङ्गेषु पञ्चाङ्गम्	50-52
1.2.5	स्मृतिग्रन्थेषु पञ्चाङ्गतत्त्वानि	52-53
1.2.6	रामायणे पञ्चाङ्गस्यावधारणा	53-58
1.2.7	महाभारते पञ्चाङ्गविमर्शः	58-62
1.2.8	पुराणसाहित्ये पञ्चाङ्गतत्त्वानि	62-67
1.2.9	जैनज्योतिषे पञ्चाङ्गस्यावधारणा	67-80
1.2.10	बौद्धानां पञ्चाङ्गदृष्टिः	80
1.2.11	पूर्वज्योतिषसिद्धान्तकालः	81-85
1.2.12	ज्योतिषसिद्धान्तकालः	85-90
1.2.13	अर्वाचीनकालः	90-95
1.2.14	पञ्चाङ्गशोधनान्दोलनस्य संक्षिप्तेतिहासः	95-99
1.2.15	वैदेशीयपञ्चाङ्गविमर्शः	99-107
1.3	पञ्चाङ्गपरिचयः	107-113
1.4	सायननिरयणपञ्चाङ्गयोर्विवेचना	113-121
1.5	ग्रहलाघवकेतकीग्रहगणितयोः परिचयः	121-126
1.6	आचार्यगणेश-केतकरयोः परिचयः	126-128
प्रथमाध्यायसन्दर्भसूची		129-154
द्वितीयोऽध्यायः		155-197
2.1	ग्रहलाघवेनाहर्गणसाधनम्।	155-157
2.2	केतकीग्रहगणितेनाहर्गणसाधनम्।	157-162
2.3	उभयोरहर्गणयोस्तुलना।	162-163

2.4	ग्रहाणाम्भगणविवेचना।	163-168
2.5	ग्रहाणाम्मध्यमगतिनिर्धारणम्।	168-171
2.6	ग्रहलाघवानुसारेण मध्यमग्रहसाधनम्।	171-180
2.7	केतकीमतेन मध्यमग्रहानयनम्।	180-192
2.8	उभयोर्मतेनागतमध्यमग्रहयोस्तुलना	192-194
	द्वितीयाध्यायसन्दर्भसूची	195-197
तृतीयोऽध्यायः		**198-263**
3.1	ग्रहस्पष्टीकरणम्	198-205
3.2	ग्रहलाघवेन स्पष्टरविसाधनम्।	205-206
3.3	केतकीग्रहगणितेन स्फुटरविसाधनम्।	206-208
3.4	स्पष्टरविसाधने उभयोर्मतयोः समीक्षणम्।	208-216
3.5	ग्रहलाघवीयस्पष्टचन्द्रसाधनम्।	216-217
3.6	केतकीस्पष्टचन्द्रसाधनम्।	217-222
3.7	स्फुटचन्द्रसाधने उभयोर्मतविवेचना।	222-226
3.8	चन्द्रार्कयोः स्पष्टगतिसाधनम्।	226-233
3.9	पञ्चाङ्गसाधनम्।	234-247
3.10	दृश्यादृश्यपञ्चाङ्गसमीक्षणम्।	248-254
3.10	पञ्चाङ्गे त्रिप्रश्नाधिकारस्य महत्त्वम्।	254-256
	तृतीयाध्यायसन्दर्भसूची	257-263
चतुर्थोऽध्यायः		**264-308**
4.1	ग्रहलाघवेन पञ्चताराग्रहाणां स्फुटीकरणम्	264-273
4.2	केतकीग्रहगणितेन पञ्चताराग्रहाणां स्पष्टानयनम्।	273-281
4.3	पञ्चताराग्रहस्पष्टीकरण उभयोर्मतसमीक्षणम्।	281-289
4.4	पञ्चताराग्रहाणाङ्गतिसाधनम्।	289-302
4.5	ग्रहाणां वक्रत्वविवेचना।	302-306
	चतुर्थाध्यायसन्दर्भसूची	307-308
पञ्चमोऽध्यायः		**309-378**
5.1	चन्द्रार्कग्रहणयोः सैद्धान्तिकविवेचना।	309-343
5.2	चन्द्रार्कग्रहणयोरुदाहरणरीत्या समीक्षणम्।	343-355
5.3	ग्रहाणामुदयास्तसमीक्षा।	356-371
5.4	प्रकीर्णविषयाः।	371-375
	पञ्चमाध्यायसन्दर्भसूची	376-378
उपसंहारः		**379-384**
सहायकग्रन्थसूची		**385-390**
परिशिष्टानि		**391-399**

प्रस्तावना

अनेकभेदैर्युक्ते ज्योतिषशास्त्रे **ब्रह्माण्डस्यानेकतत्त्वानां** सौरमण्डलानां **ग्रहनक्षत्रणाञ्च सम्यगध्ययनं भवति।** अस्माकमृषयः पूर्वाचार्याश्च **आकाशे** खगोलीयाश्चर्यजनकघटनानाम् अवलोकनङ्कृतवन्तः। **नभसि** ग्रहाणाङ्गति-ग्रहण-धूमकेतु-उल्कापातादयः **याः घटनाः घट्यन्ते ता अवलोक्य तासाम्प्रभावः प्राणिषु कथम्भवति? कदा पुनरियं** घटना सम्भविष्यतीत्यादिकं **विचार्य ते** ज्योतिषशास्त्रस्य **ज्ञानागारं समृद्धं कृतवन्तः।** अद्यापि अनेके ज्योतिर्विद अनुसन्धानकार्ये संलग्न भूत्वा **शास्त्रस्यास्य** सेवायां निरताः सन्ति।

तत्र ग्रहनक्षत्राणां विषये तेषाङ्गतिविधिप्रभृतिषु प्रभावविषयेषु **च यत्किमपि वर्ण्यते तत्सर्वं ज्योतिषमेव। वस्तुतः "ज्योतिषां ग्रहनक्षत्राणां कालस्य च बोधकं शास्त्रमेव ज्योतिषशास्त्रमिति"।** प्राणिनामुपरि **ग्रहाणां** प्रभावस्याध्ययनङ्कृत्वा तेन शुभाशुभफलकथनमेव **ज्योतिषस्य** मुख्योद्देश्यम्। वेदाङ्गत्वेन इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकोपायकरणार्थं शुभाशुभफलज्ञानमावश्यकम्।

अथ शास्त्रस्यास्य सिद्धान्तः होरा संहितेति स्कन्धत्रयं वर्तते। सिद्धान्तस्कन्धं गणितात्मकम्। **अस्यान्तर्गतं मुख्यतया** ग्रहाणाङ्गतिः **स्थितिः** कालगणनाविषयिणी **च** विवेचना **भवन्ति।** अनेन सहायेन फलविवेचनार्थं 'जन्मकुण्डल्याः' निर्माणम्भवति। **ग्रहाणां प्रभावस्याध्ययनं कृत्वा** शुभाशुभफलनिरूपणं **होरासंहितयोः भवति।** वैयक्तिकफलस्य **विवेचनं होरास्कन्धे क्रियते।** समष्टिगतफलस्य **विवेचनं** संहितास्कन्धे जायते। संहितास्कन्धान्तर्गतं **शकुन**-वास्तुप्रभृतयः **विषया अपि** समागच्छन्ति। **तत्र स्कन्धत्रये एव** कालज्ञानस्यावश्यकता वर्तते। **अतः** व्यावहारिककालस्य परिज्ञानार्थञ्ज्योतिर्विदः **पञ्चाङ्पत्रकस्य** निर्माणङ्कुर्वन्ति। वस्तुतो **ज्योतिषस्य** मुख्यकार्यन्तु **पञ्चाङ्स्य सम्यग्रूपेण** निर्धारणम्भवेदित्यस्ति। **यतः** षोडशसंस्कारश्रौतस्मार्तकर्मणां **सम्पादनेऽभीष्टानुष्ठाने** व्रतपर्वोत्सवविधाने शुभाशुभफलविवेचने **चास्य सहायेनैव निर्णयं भवति। अत एव विनैतदखिलं श्रौतं स्मार्तं कर्म न सिद्धयतीति नारदोक्तिः अस्य** पक्षे सम्यग्घटते।

ततः पञ्चानामङ्गानां समाहारः **पञ्चाङ्गम्।** ज्योतिश्शास्त्रे तिथिवारनक्षत्रयोगकरणानीति पञ्चाङ्गानि। यथोक्तमस्ति -

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च।
पञ्चाङ्गं कथितं विज्ञैस्तत्स्वरूपं निगद्यते॥

सम्प्रति मुद्रितपञ्चाङ्गपत्रकेषु दिनमानं ग्रहाणामुदयास्तं ग्रहणविवरणं दैनन्दिनग्रहस्पष्टादीनि लोकोपयोग्युपकरणान्यप्युपलभ्यन्ते। पञ्चाङ्गस्य निर्माणार्थं शुद्धग्रहगतिस्थित्योरावश्यकता भवति। यत अशुद्धग्रहगतिस्थितिभ्यां सहायेन विरचितं पञ्चाङ्गपत्रकमप्यशुद्धं भवति। अनेन धार्मिककृत्यानां

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 113 पुष्पम्

श्रीसम्प्रदायाचार्य-जगद्गुरुस्वामिश्रीरामानन्दाचार्यचरणैः समुद्भासितः

श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

व्याख्याकारः
प्रो. जयकान्तसिंहशर्मा
वेदवेदाङ्गपीठप्रमुखः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

शोध-प्रकाशन-विभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-110016

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 113 पुष्पम्

श्रीसम्प्रदायाचार्य-जगद्गुरुस्वामिश्रीरामानन्दाचार्यचरणैः समुद्भासितः

श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

व्याख्याकारः
प्रो. जयकान्तसिंहशर्मा
वेदवेदाङ्गपीठप्रमुखः,
व्याकरणविभागाध्यक्षश्चरश्च

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2022

ISBN : 81-87987-90-1

मूल्यम् : ₹ 350.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

MSKE-010
तृतीय पत्र : दर्शनशास्त्र : ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र, न्यायसूत्र

विशेषज्ञ समिति

प्रो. रमेश कुमार पांडेय कुलपति, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली	प्रोफेसर दिनेश चंद शास्त्री, वेद विभाग, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार	प्रोफेसर बृजेश कुमार पांडेय, संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान जे.एन.यू., दिल्ली
प्रोफेसर कमलेश कुमार चौकसी, निदेशक भाषा विद्यापीठ, गुजरात विश्वविद्यालय	प्रोफेसर शशि प्रभा कुमार, पूर्व चेयरपर्सन संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान जे.एन.यू., दिल्ली	प्रोफेसर अवधेश प्रताप सिंह संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
प्रोफेसर सत्यपाल सिंह संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	प्रोफेसर कौशल पवार, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली	प्रोफेसर मालती माथुर पूर्व–निदेशक, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

कार्यक्रम संयोजक : प्रोफेसर कौशल पंवार, संस्कृत संकाय, निदेशक, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या
प्रो. जवाहरलाल, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली।	1, 2, 3, 4, 5, 6
डॉ, अवधेश प्रताप सिंह, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	7, 8, 9, 10, 11
प्रो. शिव शंकर मिश्रा, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय दिल्ली।	12, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21
डॉ, पंकज के. मिश्रा, संस्कृत विभाग, सेंट स्टीफन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।	22, 23, 24, 28, 29,30
प्रो. कमलेशकुमार सी. चौकसी, निदेशक भाषा विद्यापीठ, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात।	25, 26, 27

सचिवालयीय सहयोगः श्री अनिल कुमार मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज
सहायक कुलसचिव
सा. नि. एवं वि. प्र., इग्नू, नई दिल्ली

जून, 2023

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2023

ISBN: 978-93-5568-833-0

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी(चक्र मुद्रण) द्वारा अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 से अथवा इग्नू की आधिकारिक वेबसाइटः http://www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंगः टेसा मीडिया एण्ड कंप्यूटर, सी–206, ए. एफ. इन्क्लेव–2, नई दिल्ली–110025

मुद्रणः हाईटेक ग्राफिक्स, एफ–28/3, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज–2, नई दिल्ली–110020

विषय सूची

खण्ड 1	**ब्रह्मसूत्र– बादरायण (शांकरभाष्य)**	**7**
इकाई 1	वेदान्त दर्शन का परिचय (अद्वैतवेदान्त और शंकराचार्य)	9
इकाई 2	अध्यासभाष्य	27
खण्ड 2	**ब्रह्मसूत्र–बादरायण (शांकरभाष्य चतुःसूत्री**	**47**
इकाई 3	जिज्ञासाधिकरणा (ब्रह्मसूत्र 1.1)	49
इकाई 4	जन्माद्यधिकरण (ब्रह्मसूत्र 1.1.2)	64
इकाई 5	शास्त्रयोनित्वाधिकरण (ब्रह्मसूत्र 1.1.3)	79
इकाई 6	समन्वयाधिकरण (ब्रह्मसूत्र 1.1.4)	87
खण्ड 3	**ब्रह्मसूत्र– बादरायण (श्रीभाष्य चतुःसूत्री)**	**101**
इकाई 7	विशिष्टाद्वैत वेदान्त का परिचय	103
इकाई 8	अथातो ब्रह्मजिज्ञासा (ब्रह्मसूत्र 1.1.1, लघुसिद्धान्त तक श्रीभाष्य)	122
इकाई 9	जन्माद्यस्य यतः (ब्रह्मसूत्र 1.1.2)	140
इकाई 10	शास्त्रयोनित्वात् (ब्रह्मसूत्र 1.1.3)	153
इकाई 11	तत्तु समन्वयात् (ब्रह्मसूत्र 1.1.4)	166
खण्ड 4	**पातञ्जलयोगदर्शन**	**183**
इकाई 12	योगदर्शन का परिचय (पातंजलयोगसूत्र एवं व्यासभाष्य)	185
इकाई 13	योग का लक्षण एवं स्वरूप (समाधिपार सूत्र 5–4)	197
इकाई 14	चित्तवृत्तियों के प्रकार, स्वरूप एवं निरोध (समाधिपाद सूत्र 5–16)	208
खण्ड 5	**अष्टांगयोग एवं कैवल्यस्वरूप**	**219**
इकाई 15	समाधिक का स्वरूप (समाधिपाद, सूत्र 17–22)	221
इकाई 16	ईश्वरप्रणिधान (साधिपाद, सूत्र 23–29)	233
इकाई 17	चित्तविक्षेप एवं चित्त के परिकर्म (समाधिपाद, सूत्र 30–40)	245
इकाई 18	चतुर्विधसमाप्ति (समाधिपाद, सूत्र 41–47)	256
इकाई 19	ऋतम्भरा प्रज्ञा और निरोध समाधि (समाधिपाद, सूत्र 48–51)	266
इकाई 20	योग के आठ अंग (साधनपाद, सूत्र 29–55 तथा विभूतिपाद, सूत्र 1–4)	276
इकाई 21	कैवल्यस्वरूप (कैवल्यपाद, सूत्र 34)	289
खण्ड 6	**न्यायदर्शन**	**303**
इकाई 22	न्यायदर्शन का परिचय (न्यायसूत्रकार गौतम और भाष्यकार वात्स्यायन)	305
इकाई 23	षोडशपदार्थोद्देशः (1.1.1–1.1.2)	322
इकाई 24	त्रिविध शास्त्रप्रवृत्ति	336
खण्ड 7	**चतुर्विध प्रमाण एवं द्वादश प्रमेयनिरूपण**	**349**
इकाई 25	प्रत्यक्ष प्रमाण (1.1.3–1.1.4)	353
इकाई 26	अनुमान, उपमान और शब्द प्रमाण (1.1.5–1.1.8)	363
इकाई 27	प्रमेय निरूपण : आत्मा, शरीर, इन्द्रिय (1.1.9–1.1.12) अर्थ, बुद्धि, मन (1.1.13–1.1.16) प्रवृत्ति, दोष, प्रेत्यभाव (1.1.17–1.1.19) फल, दुःख और अपवर्ग (1.1.20–1.1.22)	374
खण्ड 8	**अवशिष्ट पदार्थ निरूपण**	**385**
इकाई 28	संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त (1.1.23–1.1.25) सिद्धान्त और अवयव (1.1.26–1.1.39)	387
इकाई 29	तर्क, निर्णय (1.1.40–41) वाद, जल्प वितण्डा (1.2.1–1.2.3)	400
इकाई 30	हेत्वाभास, छल (1.2.4–1.2.17) जाति और निग्रहस्थान (1.2.18–1.2.20)	410

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक

प्रो.शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक

डॉ.विजय गुप्ता

Year : 2022 Vol. 02 Month : December

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह–सम्पादक
डॉ. विजय गुप्ता

Year : 2022 Vol. 02 Month : December

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 07, अंक : 02

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
दिसम्बर 2022

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. विजय गुप्ता

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेल: vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

* पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
* पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
* पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल
(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (पूर्वकुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

शोधपत्र समीक्षा समिति
(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय,
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- प्रो. जे. के. गोदियाल,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग,
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा,
  राज. महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह,
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल,
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा,
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
१.	पुराणानां महत्त्वम्	डॉ.हरीशकुमारः	01
२.	किरातार्जुनीये णिजन्तप्रयोगाणां वैशिष्ट्यम्	विजयप्रकाशः	13
३.	भारतीयदृष्ट्या सांवेगिकसमायोजनम्	मनीषमोदगिलः	18
४.	उदयनाचार्य के अनुसार स्मृति के प्रमात्वाप्रमात्व का विवेचन	डॉ.यशवन्त कुमार त्रिवेदी	22
५.	बृहदारण्यकोपनिषद् एवं विविध विद्या : एक गवेषणा	डॉ.बनास कुमारी मीणा	27
६.	औपनिषदिक आनन्द : तैत्तिरीयोपनिषद् के आलोक में	विष्णु कुमार मिश्रा	36
७.	गौतम और प्लेटो के विशेष सन्दर्भ में राजधर्म.....	प्रतीक कुमार	41
८.	वैयाकरणों द्वारा अभिव्यक्त क्रिया का स्वरूप, भेद.....	नीरज	47
९.	भारत और भारतीयता	प्रदीप चतुर्वेदी	62
१०.	जैनाचार्य अजितसेन कृत अलङ्कारचिन्तामणि.....	मुकुल बडोला	70
११.	भारतीय वाङ्मय में योग	निलिषा जैन	77

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक

प्रो.शिवशङ्कर मिश्र

सह सम्पादक

डॉ.विजय गुप्ता

Year : 2023 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक

प्रो. शिवशंकर मिश्र

सह-सम्पादक

डॉ. विजय गुप्ता

Year : 2023 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 08, अंक : 01

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
जून-2023

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. विजय गुप्ता

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेलः vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल
(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (पूर्वकुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (कुलपति)
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

शोधपत्र समीक्षा समिति
(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय,
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर
- प्रो. जे. के. गोदियाल,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान,
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. दिनेश कुमार गर्ग,
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा,
  राज. महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह,
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल,
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी,
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा,
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

अनुक्रम.....

क्र. सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	गुणदोषौ बुधो गृह्णन्नित्यत्र साधर्म्यधर्मविचारः	डॉ.सौरभदुबे	01
2.	शृङ्गारप्रकाशे क्लृप्तस्य एकार्थीभावसम्बन्धस्य समीक्षणम्	बद्रीविशालपाण्डेयः	05
3.	अनुपलब्धिप्रमाणविमर्शः (सिद्धान्तबिन्दुवेदान्तपरि....	जूही गर्ग	11
4.	प्रश्नशास्त्रफलविमर्शः	प्रिया शर्मा	21
5.	शैवाद्वैतदर्शनयोः ब्रह्मशिवतत्त्वयोः तुलनात्मकविवेचनम्	अनूपत्रिपाठी	26
6.	समसामयिकसन्दर्भेषु सम्राजः अशोकस्य प्राकृत.....	रूपमदासः	35
7.	तद्वितार्थविमर्शः	सन्तोषकुमारमिश्रः	48
8.	आपस्तम्बधर्मसूत्रसम्मत स्नातक..... : एक पर्यालोचन	डॉ. वालखडे भूपेन्द्र अरूण	53
9.	सरस्वतीकण्ठाभरणस्थ कारकाधिकरण का स्वरूपविमर्श	अंकुश कुमार	66
10.	श्रीबोधेन्द्रकृत 'नामामृतरसायनम्' — एक दृष्टि	अंकुर नागपाल	78
11.	आधुनिक संस्कृत वांग्मय और बाल-साहित्य	विपुल शिव सागर	89

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

47 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाई-सितम्बर) 2022 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः षट्चत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्-घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्ङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः नवसंख्याकाः-शोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तु-जातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. शोधकर्मणि नैतिकताप्रसङ्गः 1-7
-श्रीतरुणचौधुरी

2. शैवदर्शने श्रुतेः प्रामाण्यविषये अभिनवगुप्तमतम् 8-15
-श्री-अरूपमसान्यालः

3. शाङ्करमते पञ्चीकरणं लययोगविमर्शश्च 16-30
-मानसी

हिन्दी विभाग

4. नाट्य-सन्धि-सन्ध्यङ्गनिरूपण (भाग-2) 31-54
-डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

5. राजा असमाति सम्बन्धी ऋग्वेदीय आख्यान का तात्त्विकस्वरूप 55-61
-डॉ लक्ष्मी मिश्रा

6. वैदिक साहित्य में कृषि विज्ञान के साधन 62-70
-डॉ. राजमंगल यादव

7. जेंडर : संकल्पनाएँ और समाज 71-82
-डॉ. सविता राय

8. औपनिषदिक प्रणव ध्वनि का शारीरिक एवं मानसिक रोगों के शमन हेतु योगदान 83-90
-डॉ. सपना यादव

English Section

9. Therapeutic Context in the Basic Texts of Hatha Yoga-A Review Study 91-104
-Dr. Chintaharan Betal

✦✦✦

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974 - 8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

47 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2022 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि, तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेत इति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः षट्चत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्-घाटनाय महोपकारिकेति मे द्रढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्नङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः त्र्योदशशोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानकर्मणि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तु- जातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. यास्कीयकाव्यालङ्कारसूत्रानुरोधेन संसृष्ट्यलङ्कारविषये वामनमतसमुच्छेदः -प्रो. भारतेन्दुपाण्डेयः 1-11

2. मम्मटाभिमतकाव्यलक्षणविमर्शः -डॉ. टी. महेन्द्रः 12-15

3. भारतीयज्ञानपरम्परायां वाक्यार्थविचारः -डॉ. मृगांकमलासी 16-26

4. चम्बानगरस्थस्य लक्ष्मीनारायणमन्दिरस्य वास्तुदृष्ट्या अध्ययनम् -डॉ. देशबन्धुः -श्रीसन्तोषकुमारः 27-35

5. उपनिषद्दृष्ट्या सङ्घटनस्य आवश्यकता -डॉ. नरेन्द्रकुमारपाण्डेयः 36-40

6. शब्दब्रह्मणः स्वरूपविमर्शः -श्रीशिवदत्तत्रिपाठी 41-46

7. जीवातौ तिङन्तपदव्युत्पादने मल्लिनाथस्य चिन्तनविशेषः -डॉ. रजनी 47-50

हिन्दी विभाग

8. छन्दःसमीक्षा में निरूपित अवष्टम्भ-व्यवस्था -प्रो. मीरा द्विवेदी 51-64

9. आचार्य चरक के अभिमत में सुखायु -डॉ दीप्ति वाजपेयी 65-71

10. 'नैषधीयचरितम्' महाकाव्य का ज्योतिषशास्त्रीय वैशिष्ट्य -प्रो. ब्रजेश कुमार पाण्डेय -डॉ. नीरज कुमार जोशी 72-83

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे प्रथमोऽङ्कः (जनवरी–मार्च) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली–16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः षट्चत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्-घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्नङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः त्रयोदशसंख्याकाः-शोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तु-जातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. न्यायस्य न केवलं वेदोपाङ्गत्वम् 1-7
–आचार्य सच्चिदानन्दमिश्रः

2. रावणवधमहाकाव्ये पाणिनिसूत्रक्रमानुसारम् 8-19
अपादानसम्प्रदानकारकयोः पर्य्यालोचनम्
–डॉ. प्रमोदकुमारशर्मा

3. ऋग्वेदे देवैकत्वविमर्शः 20-24
–डॉ. व्रजेन्द्रकुमारसिंहदेवः

4. प्रायणीयेष्टिस्वरूपम् 25-30
–विद्यावाचस्पतिः डॉ० सुन्दरनारायणझाः

5. बौद्धपदार्थविमर्शः 31-36
–डॉ. चक्रपाणिपोखेलः

6. संस्कृतसाहित्ये शिक्षकस्य स्वरूपम् 37-47
–डॉ. प्रकाशचन्द्रपन्तः

7. काश्मीरे काव्यशास्त्रीयटीका–परम्परा 48-54
–श्रीरमेशचन्द्रनैलवालः

8. मीमांसाव्याकरणयो एकवाक्यतासिद्धान्तः 55-60
–आर्यो राहुलः

9. पर्यावरणसंरक्षणे वृक्षायुर्वेदस्य योगदानम् 61-68
–डॉ. खेमराजरेग्मी

10. आध्यात्मिक-पर्यावरण व चित्तवृत्ति-निरोध 69-77
–डॉ. हरीश

11. स्वामी श्रद्धानन्द के शैक्षिक विचारों की 78-82
सम-सामयिक प्रासंगिकता
–प्रो. रमेशप्रसाद पाठक

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे द्वितीयोऽङ्कः (अप्रैल-जून) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः
डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि, तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त-जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहिता अनन्ता ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेत इति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः षट्चत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्-घाटनाय महोपकारिकेति मे द्रढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिन्नङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः एकादशशोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानकर्मणि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तुजातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. श्रीमद्भगवद्गीतायामात्मनियन्त्रणाभ्यासः 1-5
   - डॉ.योगेश्वरमहान्तः
2. आचार्योपदिष्टभक्तिरसः 6-12
   - श्रीमनमुदितनारायणशुक्लः
3. वेदेषु संहिताग्रन्थेषु च चिकित्सा 13-18
   - श्रीमुकेशशर्मा
4. श्रीमद्भागवतमहापुराणदृशा प्रतिमाभेदाः 19-24
   - डॉ. ज्योतिप्रसादगैरोला

हिन्दी विभाग

5. नासदीयसूक्त तथा प्रारम्भिक यूनानी दर्शन 25-34
   - प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
6. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में वैशेषिक दर्शन की उपादेयता 35-55
   - प्रो. लीना सक्करवाल
7. शिवसंकल्पसूक्त और न्याय-वैशेषिक का मनस् 56-67
   - डॉ. अनीता राजपाल
8. अर्वाचीन संस्कृत भाषा-साहित्य की गजल यात्रा 68-81
   - डॉ. राजमंगल यादव
9. बौद्ध जातक कथाओं में भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन 82-87
   - डॉ. विजय गुप्ता

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

जून, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 9 अंक : 1 (97)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | वैदिकवाङ्मये मन्त्रोच्चारण-विधिविमर्शः
– विद्यावाचस्पतिः डॉ. सुन्दरनारायणझाः

08 | भारतीयज्ञानपरम्परायां.....
– अभिषेककुमार-उपाध्यायः

सम्पादकीयम्

ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्

"उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् वर्षं तद् भारतं नाम" इति परिचयेण प्रतिष्ठितमस्माकमिदं भारतं पुरा "विश्वगुरुः" आसीदति साहंकारं सगौरवञ्च वदन्ति आस्माकं ऐतिह्यविदो भारतीयाः। विश्वगुरुत्वन्नाम निखिलेऽस्मिन् विश्वे विद्यमानानां मानवानां पथप्रदर्शकत्वम् परमार्थबोधकत्वञ्च। तच्च पथप्रदर्शनं नहि ज्ञानमन्तरा सम्भवति। ज्ञानमेव प्रकाशयति जीवनस्य विविधान् पक्षान्। ज्ञानमेव प्रापयति अस्माकं प्रत्यक्षं परोक्षञ्च लक्ष्यम्। अतः सकलमनोरथलाभे ज्ञानमेव परमं साधनं प्रसिद्ध्यति। एतेनेदं वक्तुं शक्यते यद् भारतस्य विश्वगुरुत्वे मूलं नियामकं ज्ञानमेव। भारतीय-ऋषीणां महर्षिणां च ज्ञानवैभादेवायं देशः विश्वगुरुपदवीं प्राप्तवान्। अस्माकं शास्त्रेषु ज्ञानं ब्रह्माऽपरपर्यायरूपेण वर्णितम्। श्रुतिरपि वदति-

- सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
- सच्चिदानन्दं ब्रह्म।

सृष्टेः चराचरप्राणिषु श्रेष्ठतायाः विनियामकं ज्ञानमेव। अत एव ये विशुद्धमतिमन्तो जनास्ते सर्वत्र वन्द्यन्ते? "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" इति वचनं बहुधा सुप्रसिद्धम्। अस्माकं शास्त्राणि सुभाषितानि च ज्ञानस्य महत्त्वं पदे-पदे एवं ब्रुवन्ति-

- विद्ययाऽमृतमश्नुते।
- विद्यया विन्दतेऽमृतम्।
- सा विद्या या विमुक्तये।
- ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
- ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्।
- तमसो मा ज्योतिर्गमय।
- साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः।
- येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
- ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।
- विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,
  विद्या भोगकरी यशः सुखकारी विद्या गुरूणां गुरुः।
  विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
  विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः ।।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

12 | भारतीय राजनीतिशास्त्र के सप्ताङ्गो की आधुनिक काल में उपदेयता – विजय गुप्ता

17 | प्रभावीनिर्णयक्षमतायाः अवधारणा
– मनीषमोदगिलः

21 | पूराणेषु शिव-तत्त्वम्
– डॉ. संदीपभट्टः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

ISSN 2395-3055

जुलाई, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 9 अंक : 2 (98)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान सम्पादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

सम्पादक : प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'

ग्राफिक डिजाईनर : विश्वकर्मा शर्मा

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.

दूरभाष : 011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritsahityasammelan@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | Saga of Viśvāmitra
– Dr. Kala Acharya

16 | सूर्योपरि दृष्टचिन्हवशात् आपदां पूर्वानुमान्
– डॉ. प्रेवश व्यास

सम्पादकीयम्

ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्

"उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् वर्षं तद् भारतं नाम" इति परिचयेण प्रतिष्ठितमस्माकमिदं भारतं पुरा "विश्वगुरुः" आसीदति साहंकारं सगौरवञ्च वदन्ति आस्माकं ऐतिह्यविदो भारतीयाः। विश्वगुरुत्वन्नाम निखिलेऽस्मिन् विश्वे विद्यमानानां मानवानां पथप्रदर्शकत्वम् परमार्थबोधकत्वञ्च। तच्च पथप्रदर्शनं नहि ज्ञानमन्तरा सम्भवति। ज्ञानमेव प्रकाशयति जीवनस्य विविधान् पक्षान्। ज्ञानमेव प्रापयति अस्माकं प्रत्यक्षं परोक्षञ्च लक्ष्यम्। अतः सकलमनोरथलाभे ज्ञानमेव परमं साधनं प्रसिद्ध्यति। एतेनेदं वक्तुं शक्यते यद् भारतस्य विश्वगुरुत्वे मूलं नियामकं ज्ञानमेव। भारतीय-ऋषीणां महर्षिणां च ज्ञानवैभादेवायं देशः विश्वगुरुपदवीं प्राप्तवान्। अस्माकं शास्त्रेषु ज्ञानं ब्रह्माऽपरपर्यायरूपेण वर्णितम्। श्रुतिरपि वदति-

- सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म
- सच्चिदानन्दं ब्रह्म।

सृष्टेः चराचरप्राणिषु श्रेष्ठतायाः विनियामकं ज्ञानमेव। अत एव ये विशुद्धमतिमन्तो जनास्ते सर्वत्र वन्द्यन्ते? "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" इति वचनं बहुधा सुप्रसिद्धम्। अस्माकं शास्त्राणि सुभाषितानि च ज्ञानस्य महत्त्वं पदे-पदे एवं ब्रुवन्ति-

- विद्ययाऽमृतमश्नुते।
- विद्यया विन्दतेऽमृतम्।
- सा विद्या या विमुक्तये।
- ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
- ज्ञानं तृतीयं मनुजस्य नेत्रम्।
- तमसो मा ज्योतिर्गमय।
- साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः।
- येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
- ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।
- विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्,
  विद्या भोगकरी यशः सुखकारी विद्या गुरूणां गुरुः।
  विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता,
  विद्या राजसु पूज्यते नहि धनं विद्याविहीनः पशुः ।।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अगस्त, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

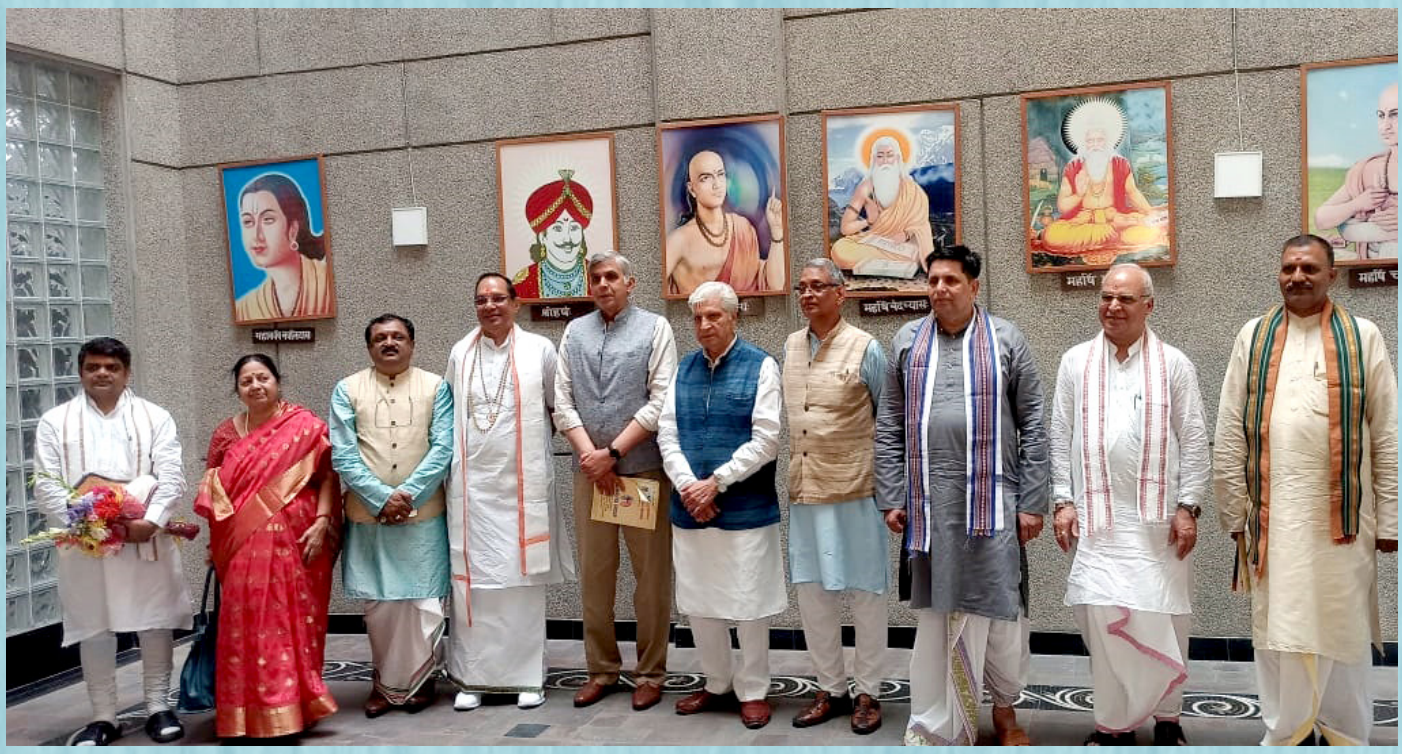

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 3 (99)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | संस्कृते राष्ट्रभावना
- डॉ.महेशकुमारद्विवेदी

07 | वेदेषु शिवतत्त्वम्
- डॉ.संदीपभट्टः

10 | रामायणस्य वैशिष्ट्यम्
- योगेशकुमारमिश्रः

12 | भारतीयदृशां मानसिकस्वास्थ्यं तथा च समायोजनम्
- मनीषमोदगिलः

16 | पाणिनीय व्याकरण में णत्वविधान
- डॉ. बी.बी. त्रिपाठी

19 | आचार्य प्रवर श्री सांवरमल शास्त्री....
- मेधा शर्मा

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

अस्माकं भारतीयज्ञानपरम्परायां शिष्येभ्यो यो वेदमध्यापयति मन्त्रव्याख्यानञ्च करोति स अध्यापकत्वेन परिकल्पितः। अध्यापको नाम अध्यापनकर्ता, पाठगुरुः, अध्यापयिता, संस्कारादिकर्तुर्गुरुराचार्यः, उपाध्यायश्चेति। अद्यत्वे अध्यापकस्यैवाभिधानं शिक्षकत्वेन सुप्रसिद्धम्, अतएव डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन्-महोदयानां जन्मतिथिमभिलक्ष्य शिक्षकदिवसः प्रतिवर्षं परिपाल्यते भारतसर्वकारेण। स चाध्यापकः अस्माकं शास्त्रेषु द्विधा सुप्रसिद्धः आचार्यः उपाध्यायश्च। शिष्येभ्यो यो निःशुल्कं शिक्षां प्रददाति स आचार्य इति गीयते-

- **उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।**
  सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥ (मनु. 2/140)
- **यस्तूपनीय व्रतादेशं कृत्वा वेदमध्यापयेत्तमाचार्य्यं विद्यात्।**

आचार्यस्य अन्यापि एका परिभाषा सुप्रसिद्धा-

- **आचिनोति च शास्त्रार्थम् आचारे स्थापयत्यपि।**
  स्वयमाचरते यस्तु स आचार्य इति स्मृतः॥

मोनियरविलियम्सविरचिते कोशग्रन्थे आचार्यविषये एतद्वचनं सम्प्राप्यते- Knowing or teaching the आचार or Rules.

"योऽध्यापयति वृत्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते" इति मनूक्तलक्षणेन सिद्ध्यति यत् शिष्येभ्यो यो शुल्कमादाय शिक्षां प्रददाति स उपाध्यायो भवति-

यस्त्वेनं मूल्येनाध्यापयेदेकदेशं वा तमुपाध्यायमिति। अद्यत्वे शिक्षाप्रणाल्यां शिक्षाकर्मणि संलग्नाः जनाः शिक्षकत्वेन विज्ञायन्ते। वस्तुतः पुरा ये उपाध्यायाः आसन् त एव इदानीं शिक्षका इत्यनुभूयते। शिक्षकविषये शिक्षाविषये चात्यन्तं सुप्रसिद्धमाचार्यचाणक्यवचनम् (भाषायाम्) सम्प्रत्यपि लोकमानसे शिक्षकाणां गौरवसंवर्धनाय अस्मानत्यन्तं सम्प्रेरयति-

- शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।
- शिक्षा ही सबसे अच्छी मित्र है, शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा यौवन और सौन्दर्य को परास्त कर देती है।

समाजस्य निखिलेषु प्रकल्पेषु साक्षात् परम्परया वा शिक्षकाणां महती भूमिका अनुभूयते। तत् कामं युद्धं भवेत् शान्तिर्वा भवेत्, ग्रामो भवेत् संग्रामो वा भवेत्, सर्वत्र शिक्षकाः अमूर्ततया विराजन्ते। स्वतन्त्रतासंग्रामेऽपि संस्कृतशिक्षकाणां संस्कृतच्छात्राणाञ्चासीत् महती प्रस्तावना इति प्रकृतेऽङ्के भवन्तः पठितुं प्रभवन्ति।

यथा दृश्यमानं किमपि गगनचुम्बिभवनं मूले आधृतं भवति। यदि मूलं दृढं न भवेत्तर्हि भवनमपि सुदृढं न स्यात्, तद्वदेव सर्वत्र प्रशासकेषु, न्यायाधीशेषु, चिकित्सकेषु, अधिवक्तृषु, अभियन्तृषु, व्यापारिषु, कर्मचारिषु च मूले सूक्ष्मतया शिक्षक एव सन्तिष्ठते। शिक्षकः शिक्षायाः हेतुः, शिक्षा च सकलाभ्युदयस्य हेतुरिति विद्यते कश्चन क्रमः। अतः सकलज्ञानप्रदायकः, परमार्थपथप्रदर्शकः, निखिललोकव्यवहारबोधकः, ज्ञानवैभवस्य, निःश्रेयसाभ्युदयस्य च सम्प्रदायकः शिक्षकः सर्वैस्समादरणीयोऽनुकरणीययश्चेति मे मतिः।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली - ११००१६

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

सितम्बर, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 4 (100)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | शिक्षायां नेतृत्ववरीयता - मनीषमोदगिलः

07 | वैशेषिकदर्शने मनसः...- आर.एस.मोनालिसा कविः

10 | शङ्करः शङ्करः साक्षात् - डॉ.विजयगुप्ता

13 | हठयोग का इतिहास एवं परम्परा - डॉ. रमेशकुमार

19 | संस्कृत की साम्प्रतिकता...- महेश कुमार द्विवेदी

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

विश्वबन्धुत्वभावनया परिपूर्णा अस्माकं संस्कृतभाषा भारतयीयस्वतन्त्रतान्दोलने महत्तमं योगदानं विहितम्। संस्कृतसाहित्यकारैः अनेकैः विद्वद्भिः कविभिश्च पारतन्त्र्यविरोधे स्वतन्त्रतायाः समर्थने च विविधाः कविताः विरचिताः। संस्कृतसाहित्यस्य अध्ययनद्वारैव वयं स्वदेशस्य भौगोलिकं परिचयं प्राप्नुमः-

- **उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।**
  वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥
- **आयामस्तु कुमारीतो गंगायाः प्रवहावधि।** इत्यादि वचनैः भारतस्य परिधिं विज्ञाय सत्प्रेरिताः भारतीयाः राष्ट्रभक्ताः "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" इति मन्त्रमुररीकुर्वन्तः देशस्य स्वतन्त्रतान्दोलने सोत्साहं कूर्दितवन्तः।

मान्याः! इदं तथ्यमस्माभिः अश्वयं चिन्तनीयं यद् यदा-यदा भारतवर्षे शासकवर्गैः संस्कृतस्य सम्माननं विहितं, संसकृतस्य महत्त्वं वैभवं चाङ्कीकृतं तदा-तदा तस्य राज्यविशेषस्य महती उन्नतिः जाता, परञ्च यदा संस्कृतस्य उपेक्षा कृता तदा तस्याः राज्यसत्तायाः पतनमपि सुनिश्चितमभवत् उदाहरणार्थं मौर्यसाम्राज्यं विलोकयन्तु यदा मौर्यसाम्राज्ये संस्कृतस्य प्रतिष्ठा आसीत् तदा तस्य राज्यस्य अपूर्वा उन्नतिरासीत् परञ्च यदा मौर्यशासकेन संस्कृतस्य तिरस्कारः कृतः तदा तस्य राज्यस्यपि पतनं सञ्जातम्। अतः इदम् अवश्यं ध्यातव्यं यत् संस्कृते किमप्यनितरवैशिष्ट्यं विद्यत एव।

महात्मागाँधिनोऽपि संस्कृतस्य ज्ञानवैभवेन नितान्तं प्रेरिताः आसन्। स्वतन्त्रतायाः आन्दोलनकाले धर्मस्य यत्स्वरूपं महात्मागाँधिना प्रकल्पितं तस्यापि प्रेरणा संस्कृतादेव समागता-

धर्मो यो बाधते धर्मो न स धर्मः कुधर्मकः।

तेषां जीवनस्य मूलमन्त्रमासीत् **"सत्यमेव जयते" 'अहिंसा परमो धर्मः'** इति।

आजादचन्द्रशेखरः संस्कृतस्य एव छात्रः आसीत्। संस्कृतं पठन् तस्य मनसि राष्ट्रभावः समुद्भूतः स्वतन्त्रतान्दोलने शेखरस्य विहितयोगदानस्य पराक्रमगीतमिदानीमपि भारतीयाः सगौरवं प्रत्यहं गयन्ति।

पराधीनभारतमातुः स्वतन्त्रतायै क्रान्तिकारिणां देशभक्तानां कृते इयं भाषा अत्यन्तं प्रेरणाप्रदा आसीत्। "वन्दे मातरम्" मातृभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः, जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी इत्येते राष्ट्रभावाः अनयैव भाषया प्रबोधिताः। महोदय! आंग्लशासकानां उद्दण्डतायाः समुन्मूलनाय, भारतीयजनेषु उत्साहप्रबर्धनाय अपि अनेकानि सूक्तिवचनानि समुपलभ्यन्ते। किमधिकं यदि कश्चन शठः दुष्टः अस्माकमहितमाचरति तर्हि तेन सह तथा एव नीतिः परिपालनीया इत्युपदिशति पदे-पदे संस्कृतसाहित्यम्

- **शठे शाठ्यं समाचरेत् ।**
- **ब्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं**
  भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः । (किरातार्जुनीये)

शिवराजविजयग्रन्थेऽपि अम्बिकादत्तव्यासः राष्ट्रभक्तान् प्रबोधयन् एवमुक्तवान्-

कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्।

स्वतन्त्रतान्दोलने संस्कृतस्य अनेके कवयः लेखकाः गायकाश्चः संस्कृतगीतिं काव्यञ्च विरचितवन्तः गीतवन्तश्च। पण्डिता क्षमारावमहाभागया, गंगाप्रसाद उपाध्यायेन, हरिप्रसादद्विवेदिना, अप्पाशास्त्रीराशिवडेकरमहाभगेन, हरदाससिद्धान्तवागीशमहोदयेन अन्यैरपि कविभिः काव्यं विरच्य देशभक्ताः क्रान्तिकारिण सततं प्रबोधिताः जागरिताश्च।

अप्पाशास्त्रीराशिवडेकरमहोदयानां इयं कविता तदानीं क्रान्तिकारिणां मध्ये अत्यन्तं सुप्रसिद्धा लोकप्रिया चासीत्-

शुकसुवर्णमयस्तव पञ्जरो, न खलु पञ्जर एष विभाव्यताम्।
मुखमिदं ननु हेमशलाकिका, रदनशालिमतेरतिभीषणम् ॥

एवमेव केनचित् कविना परतन्त्रतायाः पीडां क्लेशाञ्च प्रदर्शयन् शुकव्याजेन समेऽयि भारतीयाः स्वन्त्रतायै सम्प्रेरिताः -

वासः काञ्चनपिञ्जरे नृपवरैः नित्यं तनो मार्जनम्,
भक्ष्यं स्वादुरसालदाडिमफलं पेयं सुधाभं पयः ।
वाच्यं संसदि रामनाम सततं धीरस्य कीरस्य भो,
हा हा हन्त! तथापि जन्मविटपे क्रोडं मनो धावति ॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अक्टूबर, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मलेन (रजि०)

संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 5 (101)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | काव्येषु स्तोत्रमहिमा..... - डॉ. रामरतनखण्डेलवालः मनमुदितनारायण शुक्लः

08 | अजन्तपदसन्दर्भे सुप्रत्यय..... - विकासचन्द्रबलूनी

12 | राघवीयमहाकव्यस्यात्मतत्त्वविवेकः - सतानन्द शर्मा

15 | वराह पुराण का वैज्ञानिक..... - प्रो. कमला चौहान नन्दिनी कोटियाल

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भारतीयज्ञानपरम्परायां वास्तुशास्त्रस्य विद्यते अत्यन्तं महत्त्वम्। मन्दिरप्रासादभवनादीनां योजनानुमाननिर्माणे इयं विद्या प्रभवति। ललितकलासु इयम् अतीवविशिष्टा। इयं कला प्राचीनकालात् मानवजीवनेन सह सम्बद्धा वर्तते। वास्तुनः सामान्यार्थः- वसन्ति प्राणिनो यत्र (शब्दकल्पद्रुमः) अर्थात् यत्र जीवाः निवसन्ति, तत् वास्तु। पौराणिककथानुसारं देवलोके सर्वविधप्रासादमन्दिरोद्यानानां निर्माणं भगवता विश्वकर्मणा एव विधीयते। वस्तुतः स एव देवशिल्पी अस्ति। इयं वास्तुकला गृहादिनिर्माणे सम्भवति विघ्ननाशिनी। अस्मिन् शास्त्रे प्रासादादीनां निर्माणप्रक्रिया सुनिबद्धा वर्तते। यथा-

वास्तु सङ्क्षेपतो वक्ष्ये गृहादौ विघ्ननाशनम्।
ईशानकोणादारभ्य ह्येकाशीतिपदे यजेत्॥
ईशाने च शिरःपादौ नैर्ऋतेऽग्न्यनिले करौ।
आवासवासवेश्मादौ पुरे ग्रामे बणिक्पथे॥
प्रासादारामदुर्गेषु देवालयमठेषु च।
द्वात्रिंशत्तु सुरान् बाह्ये तदन्तश्च त्रयोदश॥

गरुडपुराणम्, आचारकाण्डः ४६.१,२,३

भारतं प्राचीनकालादेव धर्मस्य श्रध्दायाश्च आश्रयो वर्तते। अनयोः भौतिकपक्षप्रतीकं देवानां मन्दिरनिर्माणम्। प्रत्येकं मन्दिरस्य निर्माणं वास्तुकलानुसारं भवति। इदानीं पर्यन्तं ५०० वर्षाणि, ७०० वर्षाणि, १००० वर्षाणि यावत् मन्दिराणाम् संस्थितेः तेषां प्रामाण्यस्य च मुख्यं कारणम् मन्दिरनिर्माणे वास्तुशास्त्रानुसरणं विद्यते। प्राचीनकालादेव बहुविधमन्दिराणि सम्प्राप्यन्ते तत्र च पूजापद्धतिः यथानियमं प्रवर्तते। निष्कर्षतः वक्तुं शक्यते यत् भगवतः मन्दिराणि निर्माय पुष्पफलादिभिः समर्चनेन वन्दनेन च जागतिकदुःखानि विनश्य पुण्यफलं भुञ्जते जनाः।

यः कारयेन्मन्दिरं केशवस्य पुण्याँल्लोकान् स जयेच्छाश्वतान् वै।
दत्त्वा वासान् पुष्पफलाभिपन्नान् भोगान् भुङ्क्ते कामतः श्लाघनीयम्॥

वामनपुराणम्, ९५.३७

तथैव मन्दिरनिर्माणेन मानवस्य सप्तानां कुलानाम् उद्धारोऽपि भवति। यथोक्तम्-

आसप्तमं पितृकुलं तथा मातृकुलं नरः।
तारयेदात्मना सार्द्धं विष्णोर्मन्दिरकारकः॥

अनेन प्रकारेण भारतीयसंस्कृतौ प्राचीनकालादेव मन्दिरनिर्माणस्य माहात्म्यं वर्तते। मन्दिरनिर्माणे वास्तुशास्त्रनिर्देशानामपि पालनं कृतम् वर्तते, अतः वास्तुकलायां न केवलं भवनप्रासादादीनां निर्माणस्य विचारोऽपितु मन्दिरनिर्माणस्य विषयेऽपि विस्तरेण विमर्शो दरीदृश्यते।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

19 | भगवत्पाद शङ्कराचार्य की दृष्टि में भक्ति : शास्त्रीय समीक्षा - डॉ. विजय गुप्ता

22 | अथ योगासनम् - डॉ. रमेश कुमार

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

नवम्बर, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 6 (102)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व : अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)

अध्यक्ष : प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय
अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन

प्रधान सम्पादक (पदेन) : रमाकान्त गोस्वामी

सम्पादक : प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक : डॉ. विजय गुप्ता

शोधपत्रपरीक्षक मण्डल : प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली)
प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर)
प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली)
प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी)
प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)

व्यवस्थापक मण्डल : आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'

ग्राफिक डिजाईनर : विश्वकर्मा शर्मा

संपादकीय कार्यालय : संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक : रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.

दूरभाष : 011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | केदारखण्डस्थ-श्रीरूद्रनाथ..... - जीवनजोशी

09 | जैनदर्शनालोके सम्यग्दर्शनस्य स्वरूपविमर्शः - ऋषभजैनः

13 | भारतीयदर्शनेषु मीमांसादर्शनस्य स्थानम् - मुनीषकुमारः

17 | श्रीजयदेवकीर्तिलतामहाकाव्यस्थोप..... - खुशबू द्विवेदी

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भारतीयग्रन्थकदम्बे जगतः सृष्टि-पालन-संहारनिमित्तं ब्रह्मा-विष्णु-रुद्रेति नाम्नः प्रसिद्धाः त्रिदेवाः दीव्यन्ति। भारतीयानां मानवानां पवित्रे मनसि देवान्तरापेक्षया भगवतो महादेवस्य आशुतोषस्य विद्यते महती प्रतिष्ठा। शास्त्रेषु यत्र ब्रह्मणः उपासनामूलकानि उद्धरणानि स्वल्पतयोपलभ्यन्ते तत्रैव भगवतो रूद्रस्य समर्चने निर्वचने च विपुलतया शास्त्रसन्दर्भाः पदे-पदे सन्दृश्यन्ते। भगवान् शिवः स्वयं कल्याणस्वरूपः तदुक्तं शब्दकल्पद्रुमे- **शिवं कल्याणं विद्यतेऽस्य इति शिवः।** एकस्मिनन्यप्रसङ्गे वर्णितं यद् यस्मिनणिमादिसिद्धयः विराजन्ते स शिवः-

शेरतेऽवतिष्ठन्ते अणिमादयोऽष्टौ गुणा अस्मिन् इति वा शिवः। अमरकोशे कथितं यच्छिवः आनन्दमयः भद्रमयः, मङ्गलमयः शुभमयश्चेति-

स्यादानन्दधुरानन्दः शर्मशातसुखानि च ।
श्वः श्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥

पौराणिककथादृष्ट्या समुद्रमन्थनादुद्भूतममृतं गरुडेनाकृष्यमाणेन यत्र-यत्र पतितं तत्र-तत्र भगवतो भूतभावनस्य शिवस्य ज्योतिर्लिङ्गानि विराजन्ते। प्रायशः आभारतं सर्वासु दिक्षु विद्योतते धर्मार्थकाममोक्षमूलकं सकलेष्टपूरकं भगवतो रुद्रस्य विग्रहस्वरूपं शिवलिङ्गम्। तच्चैवं वर्णितम् -

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ॥१॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥२॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घृष्णेशं च शिवालये ॥३॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

19 | ज्योतिषशास्त्रे प्रतिपादितो भवनवाहनसुखविचारः - आरती

22 | वज्रासन - अंकित भट्ट

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

दिसम्बर, 2022 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 9 अंक : 7 (103)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय सूची

03 | एकान्ता अनुबन्धा इति परिभाषायाः तुलनात्मकमध्ययनम् - अनिलकुमारद्विवेदी

06 | पूर्वमीमांसायाम् अपच्छेदन्यायविचारः - सचिनद्विवेदी

10 | संस्कृते स्वस्थमानवस्य परिभाषा - परमिंदरकौरः

17 | आस्तिकदर्शनेषु मनस्तत्त्वविवेचनम् - आर एस् मोनालिसा कविः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

जीवने कर्तव्यकर्मणो नितान्तं महत्त्वं वरीवर्ति। कर्तव्यमकुर्वन् कोऽपि जनः केवलमिच्छया न किमपि प्राप्तुं शक्नोति। कर्तव्यकर्मसम्पादनेन लोके सिद्धिं सुखञ्च प्राप्नोति। आमुष्मिकमपि फलं निश्चयप्रचं लभते। अतएव अस्माकं शास्त्रेषु निष्ठया स्वकर्मपालनपरायणतत्परस्य जनस्यैव आर्यपदेन व्यपदेशः-

कर्तव्यमाचरन् काममकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे यः स आर्य इति स्मृतः॥ (वशिष्ठस्मृतिः)

The man who controlling his desires performs his duties in accordance with the norms of the Great illusion (Prakruti) and the scriptures] refraining from actions prohibited by the scriptures is called an 'Aryan'.

कर्तव्यस्याभिप्रायः करणीयकर्मसमाचरणम्, अर्थात् शास्त्रदृष्ट्या अस्मभ्यं निर्धारितं यदाचरणीयं कर्म तदेव कर्तव्यम्। प्रत्येकं प्राणिनः कर्तव्यं स्थान-काल-परिस्थित्यनुरूपं सुनिश्चितं भवति। समाजस्य प्रत्येकं जनाः यावत्पर्यन्तं कर्तव्यानुरूपं कर्म समाचरन्ति तावत् न कापि समस्या न वा प्रतिकूलता परञ्च यदेव स्वकर्तव्यपरिधिमतिक्रम्य कश्चन जनः अकर्तव्याचरणे तत्परो भवति तदाचिरमेवाशान्तिः, कलहः, रागद्वेषप्रभृतयो दोषाः समुत्पद्यन्ते, अतः यथाशास्त्रं स्वनिर्धारितं कर्म एव सर्वदा सर्वैस्समाचरणीयम्। भगवता श्रीकृष्णेनापि श्रीमद्भगवद्गीतायामेवमुद्घोषितम्-

स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। (18.45)

विश्वमिदं कर्मणा नियन्त्रितं दृश्यते, कर्मणः संस्कार एव मानवानां मूलशक्तिः। कर्मणैव मानवानां भाग्यनिर्मितिर्भवति। एतत्प्रभावादेव जीवः विभिन्नासु देव-मानव-पशु-तिर्यक्-सरीसृपप्रभृतियोनिषु नितान्तं परिभ्रमति। लोकलोकान्तरं व्रजति आत्मकल्याणञ्च लभते। कर्मफलभोगार्थं जीवानां तदनुरूपं जन्म जायते। सुखं, दुःखं, लाभः, हानिश्चैतत्सर्वं कर्मनियन्त्रितं भवति। कर्म शुभं भवेत् अशुभं वा भवेत् तस्य शुभम् अशुभं वा फलमवश्यमेव भोक्तव्यं भवति। अस्माकं शास्त्रेषु प्रतिपादितान्येवंविधानि वहुवचनानि-

जो जस करई सो तस फल चाखा ।
कर्मप्रधान विश्व करि राखा ॥
काहु न कोउ सुख दुःख कर दाता।
निज कृत करम भोगु सब भ्राता ॥
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
नाऽभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥
स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते ॥
सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रे ग्रथितो हि लोकः॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

21 | सिद्धासन (एकाग्र मन के लिए करें सिद्धासन) - डॉ. रमेश कुमार

Website : www.aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

जनवरी, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 8 (104)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website: http://www.aisanskritsahityasammelan.com/ratnakar_ank.php

E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | आङ्ग्लानां विरोधकर्त्तारः संस्कृतमनीषिणः
- प्रो. रमाकान्तपाण्डेयः

12 | केदारखण्डस्थ श्रीमध्यमेश्वरमन्दिरस्य माहात्म्यं वास्तुशास्त्रीयविमर्शः च
- जीवनजोशी

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भारतीयसंस्कृतौ चतुर्विधपुरुषार्थेषु परमपुरुषार्थः मोक्ष इति शास्त्रेषु सुप्रथितः। इयमानन्दस्वरूपा बन्धविनिर्मुक्ता अवस्था भूयते। इमामवस्थामवाप्तुं भारतीयज्ञानपरम्पराया: सर्वाः विद्याः प्रवर्तन्ते। अविद्या-मायासदृशबन्धनेभ्यः विमोक्ष एव मोक्षः। मायया पारतन्त्र्यं प्रभवति तदभावे स्वातन्त्र्यं जागर्ति। स्वातन्त्र्यस्य मूल्यं स एव विजानाति येन कदाचित् जीवने पारतन्त्र्यं प्राप्तम् । शास्त्रेषु उल्लेखोऽपि दृश्यते यत् 'आत्मवशम्' अर्थात् स्वातन्त्र्यम् इति परमं सुखम्। यथोक्तं सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्। लोककविः तुलसीदासः रामचरितमानसे कथयति यत् पराधीन सपनेहु सुख नाही अर्थात् परातन्त्र्ये स्वप्नेस्वपि नास्ति सुखानुभूतिः का कथा साक्षात् सुखस्य?

भारतस्य परतन्त्रायाः स्वतन्त्रायाश्च कथा अतीवहृदयस्पर्शी अस्ति। आङ्ग्लाः ईष्टइण्डियाकम्पनी इति व्याजेन भारतं प्रविष्टवन्तः । ततः भारतस्य पारतन्त्र्यस्य प्रक्रिया आरब्धा। शनैः शनैः समग्रं भारतं आङ्ग्लैः पराधीनं कृतम्। परतन्त्रायाः प्रभावात् भारतीयानां जीवनमत्यंतं कठिनं जातम्। १८५७ तमे वर्षे प्रथमक्रान्तिकारिणा मङ्गलपाण्डेयेन स्वतन्त्रायाः भावः भारतीयानां मनसि समुत्पादितः। तदनु निरन्तरं देशे स्वतन्त्रायाः भावः प्रवर्धितः आसीत् फलतः १५ अगस्त १९४७ तमे वर्षे आङ्ग्लेभ्यः स्वतन्त्रतां प्राप्तवन्तः परन्तु जनव्यवहारस्य, सामाजिकन्यायसामाजिकार्थिकराजनैतिकन्यायसमानताधिकार सद्भावनादीनां कृते कस्यापि राजनियमस्य संविधानस्य वा आवश्यकता अपरिहार्या आसीत्। संविधाननिर्माणार्थं १९४६ तमे वर्षे जुलाईमासे भारतीयसंविधानसभायाः गठनं जातम्, यस्यां २९९ सदस्याः आसन्। २ वर्षाणि ११ मासाः १८ दिनानि यावत् समयं स्वीकृत्य संविधाननिर्मितः जाता। २६ नवम्बर १९४९ ई. दिनाङ्के संविधानं पारितम् तथा च २६ जनवरी १९५० तमे दिनाङ्के भारते एतत्प्रवृत्तमत एव २६ जनवरी दिनाङ्क एव गणतन्त्रदिवसरूपेण समग्रे भारते भारतीयै आचर्यते।

भारतीयसंविधानस्य क्रियान्वयनानन्तरं भारतस्य प्रत्येकं नागरिकः समानाधिकारसमानराजनियमेन प्रवर्तितोऽभवत्। संविधानस्य क्रियान्वयनेन कस्यापि वर्गस्य जातेः वा व्यक्तिः भारतस्य कस्मिन् अपि प्रमुखपदे उपवेष्टं शक्नोति, नियमानुसारं कुत्रापि गन्तुम् आगन्तुं च शक्नोति। कस्यापि प्रकारस्य अपराधस्य कृते प्रत्येकं वर्गस्य, प्रत्येकं जातेः कृते समानदण्डस्य व्यवस्था कृता, इदमेव संविधानस्य परमोद्देश्यमपि आसीत्।

अस्मिन् वर्षे राष्ट्रियपर्व गणतन्त्रदिवसः, भारतीयसंस्कृतेः महान् उत्सवः वसन्तपञ्चमी च एकस्मिन् एव दिवसे आचरितः। भारतीयजनमानसे वसन्तपञ्चम्यां विद्यादेव्याः मातुः सरस्वत्याः पूजा, अर्चना, वन्दना च क्रियते। कालेऽस्मिन् विविधेषु वृक्षेषु अत्यन्तं मनोहराणि नूतनानि पत्राणि पुष्पाणि च प्रादुर्भवन्ति। वसन्तः अतीव प्रियः आकर्षकश्च ऋतुः। आम्रवृक्षेषु मञ्जर्य दृश्यन्ते, चतुर्षु दिक्षु भ्रमराः चित्रपतङ्गाश्च मण्डलायन्ते, एवं प्रकारेण अयं वसन्तर्तुः सर्वेषां मनांसि आह्लादयति चित्तमाकर्षयति च।

अयं राष्ट्रियपर्वगणतन्त्रदिवसः, भारतीयसंस्कृतेरुत्सवः वसन्तपञ्चमीपर्व च द्वावपि भारतीयानां मनांसि नितान्तमाह्लादयन्तौ स्तः। एकं सर्वेभ्यः समानाधिकारं दत्वा समतां स्थापयति, अपरञ्च सर्वेषां चित्तान् हर्षयति। एकं सर्वेभ्यः कर्तव्यान् बोधयति अपरञ्च सर्वेभ्यः संस्कृति प्रकृतिं च बोधयति इति द्वयोः पर्वणोः परमोपयोगिता प्रासंगिकता च प्रतीयते सर्वस्मिन् लोके इति संक्षेपः।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

18 | परमाणुजगत्कारणतावादप्रदर्शनम्
- दीपकमण्डलः

21 | सनातन धर्म शाश्वत सत्य - श्री रमाकान्त गोस्वामी

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

फरवरी, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 9 (105)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

1. संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
2. प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | रसस्य अलौकिकत्वयुक्तौ ..... - सुभाषकुन्तलः

05 | वर्तमानसन्दर्भे अन्तर्द्वन्द्वानां श्रीमद्भगवद्गीतालोकेन समाधानम् - सूर्यकान्तपाण्डेयः

08 | स्कन्दपुराणान्तरवर्ति केदारखण्डे कालीस्वरूप-वर्णनम् - मनोजकुमारडिमरी

13 | चम्बाजनपदस्थ-मणिमहेशमन्दिरस्य वास्तुदृष्ट्या अध्ययनम् - सन्तोषकुमारः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

जीवने कर्तव्यकर्मणो नितान्तं महत्त्वं वरीवर्ति। कर्तव्यमकुर्वन् कोऽपि जनः केवलमिच्छया न किमपि प्राप्तुं शक्नोति। कर्तव्यकर्मसम्पादनेन लोके सिद्धिं सुखञ्च प्राप्नोति। आमुष्मिकमपि फलं निश्चयप्रचं लभते। अतएव अस्माकं शास्त्रेषु निष्ठया स्वकर्मपालनपरायणतत्परस्य जनस्यैव आर्यपदेन व्यपदेशः-

कर्तव्यमाचरन् काममकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे यः स आर्य इति स्मृतः॥ (वशिष्ठस्मृतिः)

The man who controlling his desires performs his duties in accordance with the norms of the Great illusion (Prakruti) and the scriptures, refraining from actions prohibited by the scriptures is called an 'Aryan'.

कर्तव्यस्याभिप्रायः करणीयकर्मसमाचरणम्, अर्थात् शास्त्रदृष्ट्या अस्मभ्यं निर्धारितं यदाचरणीयं कर्म तदेव कर्तव्यम्। प्रत्येकस्य प्राणिनः कर्तव्यं स्थान-काल-परिस्थित्यनुरूपं सुनिश्चितं भवति। समाजस्य प्रत्येकं जनाः यावत्पर्यन्तं कर्तव्यानुरूपं कर्म समाचरन्ति तावत् न कापि समस्या न वा प्रतिकूलता परञ्च यदेव स्वकर्तव्यपरिधिमतिक्रम्य कश्चन जनः अकर्तव्याचरणे तत्परो भवति तदाचिरमेवाशान्तिः, कलहः, रागद्वेषप्रभृतयो दोषाः समुत्पद्यन्ते, अतः यथाशास्त्रं स्वनिर्धारितं कर्म एव सर्वदा सर्वैस्समाचरणीयम्। भगवता श्रीकृष्णेनापि श्रीमद्भगवद्गीतायामेवमुद्घोषितम्-

स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। (18.45)

विश्वमिदं कर्मणा नियन्त्रितं दृश्यते, कर्मणः संस्कार एव मानवानां मूलशक्तिः। कर्मणैव मानवानां भाग्यनिर्मितिर्भवति। एतत्प्रभावादेव जीवः विभिन्नासु देव-मानव-पशु-तिर्यक्-सरीसृपप्रभृतियोनिषु नितान्तं परिभ्रमति। लोकलोकान्तरं ब्रजति आत्मकल्याणञ्च लभते। कर्मफलभोगार्थं जीवानां तदनुरूपं जन्म जायते। सुखं, दुःखं, लाभः, हानिश्चैतत्सर्वं कर्मनियन्त्रितं भवति। कर्म शुभं भवेत् अशुभं वा भवेत् तस्य शुभम् अशुभं वा फलमवश्यमेव भोक्तव्यं भवति। अस्माकं शास्त्रेषु प्रतिपादितान्येवंविधानि वहुवचनानि-

करम प्रधान बिस्व करि राखा ।
जो जस करई सो तस फल चाखा ॥ (रामचरितमानस)
काहु न कोउ सुख दुःख कर दाता।
निज कृत करम भोग सबु भ्राता ॥ (रामचरितमानस)
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
नाऽभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥ (श्रीमद्भगवद्गीता)
स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते ॥ (चाणक्यनीति)
सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रे ग्रथितो हि लोकः॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

17 | आचार्य शंकर का अद्वैत दर्शन एवं जगत् विचार - डॉ० नीलम त्रिवेदी

22 | धनुरासन - अंकित भट्ट

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

मार्च, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 10 (106)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : http://www.aisanskritsahityasammelan.com/ratnakar_ank.php

E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृत-विश्वविद्यालयस्थ वराहमिहिरवेधशालायाः यन्त्रपरिचयः - ब्रजेशपाठकः

07 | साङ्ख्यतत्त्वविवेचनदृष्ट्या तत्त्वनिरूपणम् - डॉ. हरिओमः

10 | सीता पत्नीत्वशोभिका - श्रीनिधिः वि.

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भारतीयसंस्कृतेः परम्परायाश्च आदिस्रोतांसि वर्तन्ते वेदाः। वेदो नाम ज्ञानराशिः अतएव साक्षात् ज्ञानवाचको वेदः। समग्रमपि विज्ञानं वेदेषु निहितं वर्तते। वेदा एव मानवव्यवहारानुपदिशन्ति। एत एव काम्यनिषिद्धकर्माणि कर्तु जनान् प्रवर्तयन्ति निवर्तयन्ति च। वेदा एव वनस्पतिवृक्षप्रकृतिसर्वद्रव्याणां संरक्षणाय अस्मान् प्रेरयन्ति। वेदाः एव पुरुषं दुष्टाचरणात् धर्माचरणं प्रति प्रवर्तयन्ति। इमे सम्पूर्णं जनमानसं विविधदृष्टान्तैः विविधविषयान् बोधयन्ति। वेदाः अध्यात्मस्य परमसुखस्य च हेतुः। वेदा एव इष्टप्राप्तेः अनिष्टपरिहराय च अलौकिकोपायं बोधयन्ति- **इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः।** वेदाः भारतीयदर्शनस्यापि मूलस्रोतांसि। दार्शनिक- सिद्धान्तानां च मूलं वेदेषु नैकेषु स्थानेषु प्राप्यते। इमे खलु योगविद्यायाः मूलस्रोतांसि। अत एव वेदेषु उक्तं यत् योगं विना ऋषिपणि डतविदुषां कर्म सम्पन्नं फलप्रदं च न भवितुमर्हति-

यस्मादृते न सिद्ध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन ।
स धीनां योगमिन्वति ॥ (ऋग्वेद १.१८.७)

योगस्य प्रवर्तकः हिरण्यगर्भः, योगस्य सूत्रकर्ता संकलनकर्ता च महर्षिपतञ्जलि इति तु सर्वविदितमेव। संस्कृतसाहित्यस्य ऐतिह्यविवेचनात् ज्ञायते यत् महर्षिपतञ्जलिना व्याकरणस्य महान् ग्रन्थः महाभाष्यम्, आयुर्वेदस्य आधारग्रन्थः चरकसंहिता, योगशास्त्रस्य प्रसिद्धतमं योगसूत्रञ्चेति ग्रन्थाः प्रणीताः। त्रयाणां ग्रन्थानां प्रणयनस्योद्देश्यमपि लेखकेन स्पष्टशब्दैः अभिव्यक्तं यत् महाभाष्येन पदशुद्धिः, चरकसंहितया शरीरशुद्धिः, योगसूत्रेण च चित्तशुद्धिर्भवति। महर्षिपतञ्जलिना योगसूत्रे 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' (योगसूत्र, १.२) अनेन सूत्रेण योगरूपं व्याख्यायितम्। योगसूत्रे विवेचितानामनेकोपायानां सिद्धिद्वारा एव भवति योगसिद्धिः, तथा च योगसिद्धिद्वारा मोक्षप्राप्तिर्भवति या च परमानन्दावस्था इति।

योगसिद्धान्ताः वेदेषु बहुषु स्थानेषु वर्णिताः सन्ति। यजुर्वेदस्य कस्मिंश्चित् मन्त्रे मनः चित्तञ्च सन्नियम्य ध्येयसंयोजनस्य निर्देशः प्रदत्तोऽस्ति। ऋषिः उपदिशति यत् चित्तवृत्तिभिः सृष्टस्य जगतः स्रष्टारं मनः मतिञ्च सन्नियम्य परमात्मनि संयोजयितव्ये । अनेनैव विधिना तत्त्वज्ञानलाभः आत्मबोधश्च जायेते । यथा-

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत् ॥ (यजुर्वेद, ११.१)

एवं प्रकारेण ज्ञानस्य आदिस्रोतस्वरूपवेदेषु योगविद्यायाः बहुषु स्थानेषु विस्तरेण विवेचनं प्राप्यते। यथोक्तमन्यस्मिन्मन्त्रे यत् मनः बुद्धौ, बुद्धिं परमात्मनि च संयोजनं विधेयम्।

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः॥
(ऋग्वेद, ५.८१.१)

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

12 | नास्तिकदर्शनानुशीलनम् - डॉ. सन्दीपः

16 | प्रत्यभिज्ञादर्शनविमर्शः - डॉ. सुरजीतः

20 | वेदों में योग का स्वरूप - निलिषा जैन

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अप्रैल, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

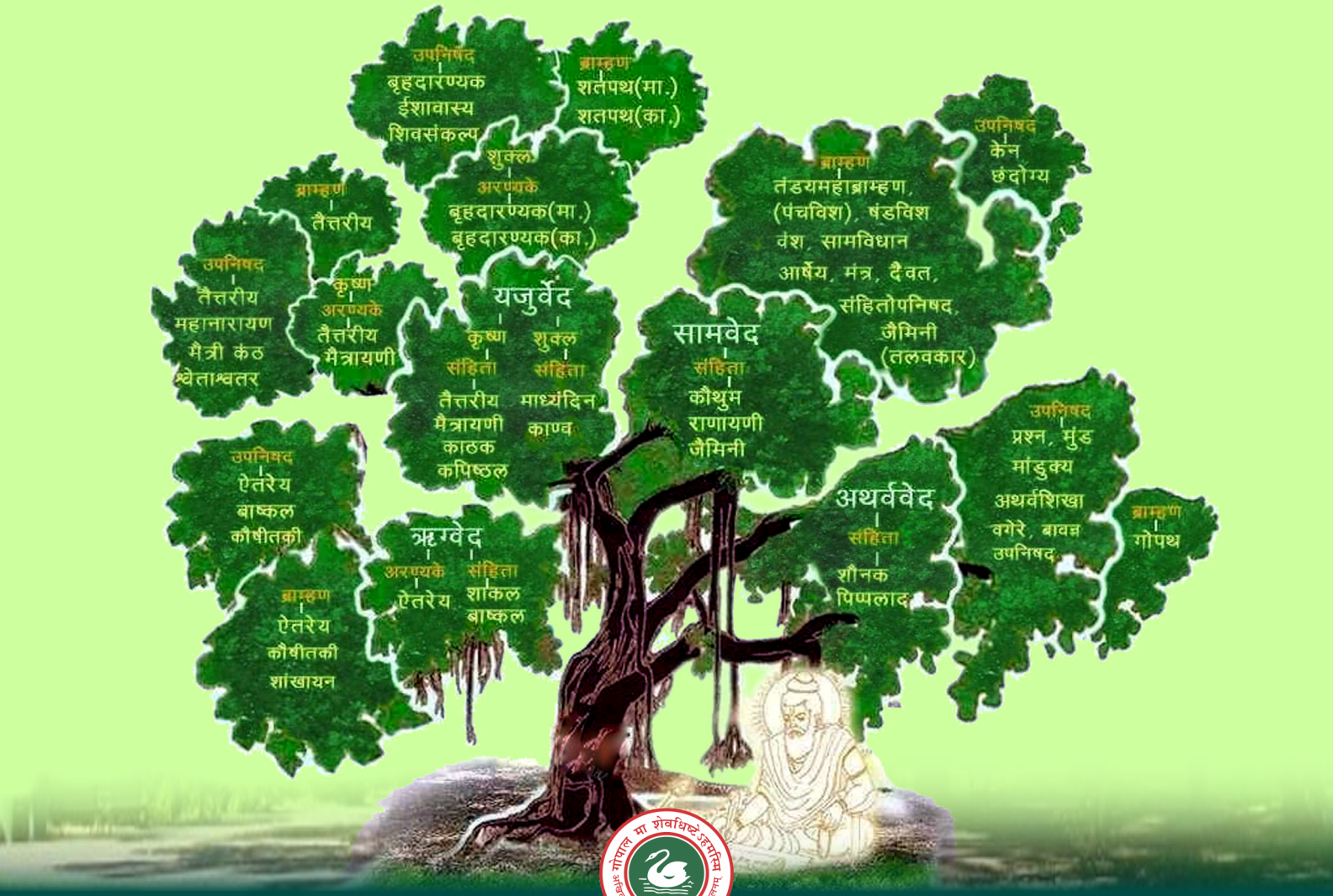

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 11 (107)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : http://www.aisanskritsahityasammelan.com/ratnakar_ank.php

E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | भक्तिस्वरूपविमर्शः
- डॉ. सुरजीतसिंहः

09 | न्यायाभिमतकथास्वरूपविमर्शः
- मिन्दुदेः

13 | उपनिषत्सु प्रणवतत्त्वस्यावधारणा
-प्रो. डी. एस. तिवारी
-विभाकरकुमारदीक्षितः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भारतीयसंस्कृतिः विश्वस्य सर्वासु संस्कृतिषु अन्यतमा वैशिष्ट्यपूर्णा च वर्तते। भारतीयसंस्कृतेः वैशिष्ट्यस्य कारणं ज्ञानं, विचाराः, संस्काराः इत्यादिनां वैविध्यं वर्तते। प्राचीनपरम्परानुसारं ज्ञानस्य संस्कृतेश्च मुख्यस्रोतांसि वेदा एव। यतोहि वेदो नाम अनन्तज्ञानराशिः। सर्वविचारोपजीव्याः वेदा एव वर्तन्ते। इमे वेदाः सर्वदा भारतीयचिन्तनपरम्परां प्रेरयन्ति। श्रीमद्भगवद्गीतायां ज्ञानं, कर्म, भक्तिः च मोक्षप्राप्त्यर्थं साधनत्वेन वर्णिता। भगवता श्रीकृष्णेनाऽपि मोक्षप्राप्तेः परमसाधनत्वेन भक्तिरेव विवेचिता। भक्तितत्त्वस्य बहूनि रूपाणि शास्त्रेषु प्रकीर्तितानि सन्ति। भक्तिः न केवलं इष्टदेवं प्रति अथवा ईश्वरं प्रति वा भवति अपितु नरश्रेष्ठं प्रति सेवाभावः, श्रद्धा भावश्चापि भक्तिरेव गण्यते। आत्मनः इष्टस्य अवयवः इति भावोऽपि भक्तिरेव। शाण्डिल्यसूत्रे भक्तिलक्षणं लभ्यते; 'सा परानुरक्तिरीश्वरे' अर्थात् ईश्वरानुरक्तेः पराकाष्ठा एव भक्तिः अस्ति।

आराध्यं प्रति अत्यन्तराग एव भक्तेः स्वरूपम् तथा च ईश्वरः मम चित्तवृत्तेः विषयो भवतु इति भावोऽपि भक्तेर्लक्षणम्। यदा भक्तशिरोमणिप्रह्लादस्य विवेचनं विष्णुपुराणे आयाति तदा प्रह्लादः कथयति-यत् हे भगवन्! यथा अविद्यायुक्तः सामान्यजनः विषयेषु नित्यं निर्लिप्तो भवति, सः विषयानतिरिच्य अपरं न किमपि चिन्तयति; यथा कामुकः स्त्रीं चिन्तयति, लोभी धनं चिन्तयति, चौरश्च धनचौर्यं सर्वदा चिन्तयति, तथैव भवतः भक्तोऽहं प्रह्लादः अपि भवन्तं प्राप्तुं, भवतः विषय एव सर्वदा चिन्तयेयम्। यथा कश्चन सामान्यो जनः चित्तवृत्तिविकृतिकारणेन अथवा विषयालिप्तेन विषयातिरिक्तमपरं न किमपि प्राप्तुं वाञ्छति तथैव अहमपि केवलं त्वां एव सततं स्मरेयम्। त्वामेव सततं चिन्तयेयम्। न कदापि भवतः स्मृतिः मद्दूरे भवेदिति भावनाऽपि भक्तिरेव गीयते-

या प्रीतिरविवेकानां विषयेष्वनपायिनी।
त्वामनुस्मरतः सा मे हृदयान्मापसर्पतु ॥

(विष्णुपुराणम्, प्रथमांशः, २०.१९)

संस्कृत-हिन्दी-प्रादेशिकभाषासु भक्तिविषयं केन्द्रीकृत्य अनेके ग्रन्थाः विद्वद्भिः विरचिताः। भक्तिदृष्ट्या न केवलं भारते अपितु विदेशेष्वपि अनेके सम्प्रदायाः विनिर्मिताः सन्ति । शास्त्रेषु भक्तेः नवविधं वर्गीकरणं विद्यते, अतएव नवधा भक्तिः इति सुप्रसिद्धं वचनम्-

श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् ।
अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥

नवविधभक्तिपरायणानां प्रसिद्धानां भक्तानाम् एकैकश एवं परिचयो भागवते प्राप्यते - १. श्रवणम् (परिक्षितः) २. कीर्तनम् (शुकदेवः) 3. स्मरणम् (प्रह्लादः) 4. पादसेवनम् (लक्ष्मीः) 5. अर्चनम् (पृथुराजः) 6. पूजनम् (अक्रूरा) 7. दास्यम् (हनुमान्) 8. सख्यम् (अर्जुनः) 9. आत्मनिवेदनम् (राजाबलिः) इति।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

19 | ध्यान की सिद्धि के लिए करें पद्मासन
- डॉ. रमेश कुमार

21 | मकर राशि : स्वरूप योग एवं फल - ब्रजेश पाठक

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

मई, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

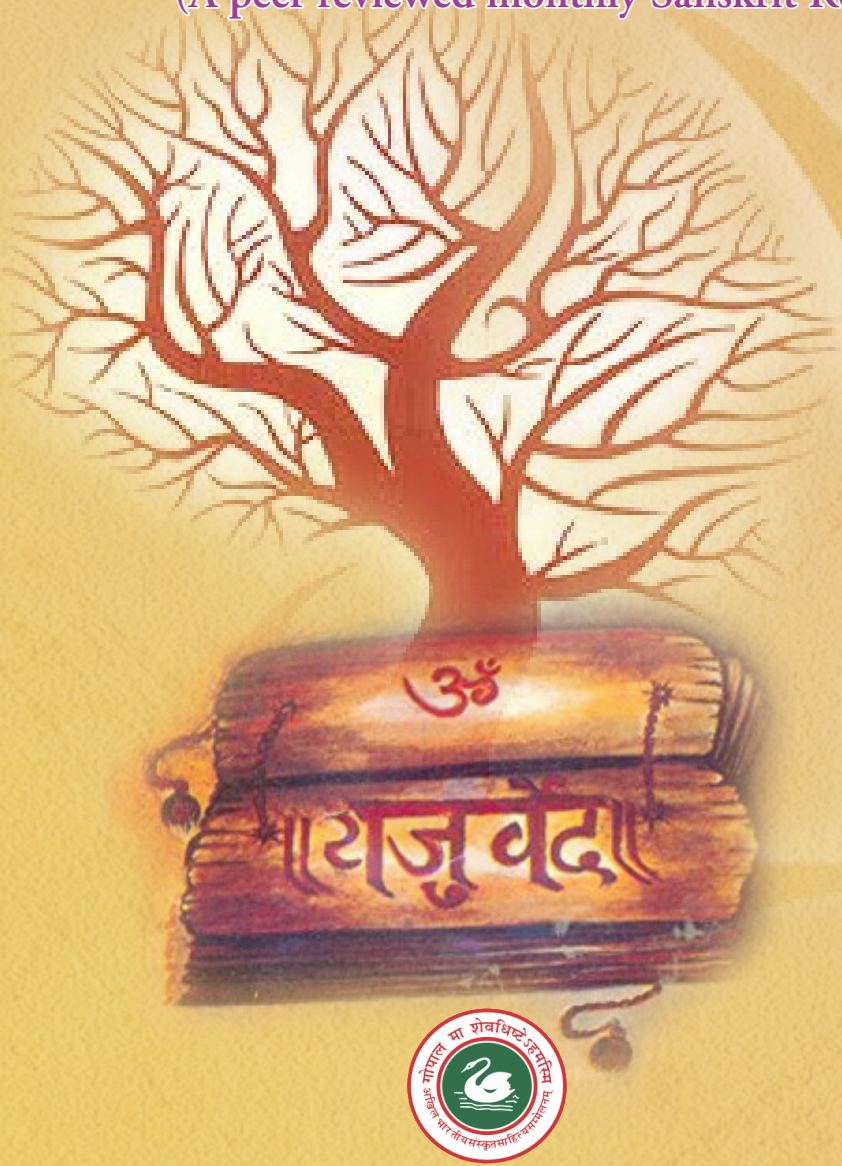

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 9 अंक : 12 (108)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | महाकाव्य काल में वास्तुकला - प्रो. संगीता मिश्रा

07 | श्रीमद्भगवद्गीता का व्यवहार पक्ष - प्रो० शिवशङ्कर मिश्र

11 | आपस्तम्बधर्मसूत्रसम्मत ब्रह्मचर्याश्रमप्रकरण विमर्श - डॉ. वालखडे भूपेन्द्र अरूण

16 | योगशास्त्रे बन्धमोक्षविमर्शः - कमलाकान्तमिस्त्री

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भाषया भाषिणां परिचयः सम्प्राप्यते। जनानां संस्कृतिः, जनानां जीवनम्, जनानामाचरणम्, जनानां व्यवहारश्च भाषयैव व्याख्यायते। समेषां राष्ट्राणां काचिद् राष्ट्रभाषा भवति यस्यां राष्ट्रस्य गौरवं, वैभवं, सौष्ठवं च समुदेति। वस्तुतः राष्ट्रस्य शासनदृष्ट्या राष्ट्रभाषा सा एव भाषा भवितुमर्हति या सम्पूर्णे राष्ट्रे व्याप्ता स्यात् अर्थात् राष्ट्रस्य प्रतिकोणं सकलेषु प्रान्तेषु च प्रचलिता परिचिता वा भवेत्। या हि भाषा राष्ट्रभाषापदमलङ्कृता सती सर्वजनैः पक्षपातविरहितेति अनुभूता भवेत्। यस्यां राष्ट्रभाषायां सत्यां राष्ट्रस्य सकलप्रान्तीयाः जनाः एवम्प्रमुदितमनसा अनुभवेयुर्यत् इयम्भाषा अस्मत्प्रान्तीयभाषाजननीत्वेन अस्मत्सहयोगिनी विद्यते।

यस्यां भाषायां जनोपयोगिप्रचुरं साहित्यम्, देशोपयोगिविपुलं साधनम्, रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजुकुटिलनानापथजुषामित्युनक्त्यनुसारेण-राष्ट्रस्य विभिन्नवर्गाणां कृते प्रकामं विविधजीविकाप्रधानसाहित्यं च समुपलब्धं भवेत्। यस्यां भाषायाम्-देशसमृद्धये राष्ट्रसुरक्षायै च प्रचुरम् अन्वेषणीयम् विज्ञानविपुलम् साहित्यम् दृष्टिगोचरं भवेत्। संक्षेपतः यस्यां भाषायां देशस्य निखिलजनानां सर्वविधलौकिकाभ्युदयायदण्डविद्या, वार्ता विद्या, भूगोल-खगोल-गणित-चिकित्सा-चित्रकला-मूर्तिकला-प्रभृतिविविध-विद्यानां प्रतिपादनं भवेत्, अथ च पारलौकिकनिःश्रेयसाय नानाविधानि दर्शनसाहित्यानि विपुलमात्रायां जननयनपथगोचराणि स्युः सा एव भाषा राष्ट्रभाषापदमारोहितुं विराजितुं चालम्।

अस्याममरभाषायां वैदिककालस्य प्रत्यक्षफलप्रदा कर्ममीमांसा, उपनिषत्कालस्य ईशावास्यमिदं सर्वं, सर्वं खल्विदं ब्रह्म इति ब्रह्मविषयिणी विवेचना, आरण्यकयुगीना तपःसाधना, रामायणकालिकी नित्यं प्रमुदिताः सर्वे रामे राज्यं प्रशासति इत्यात्मिका प्रजास्वातन्त्र्यधारिणी रामराज्यवर्णना, महाभारतकालिकी शस्त्रास्त्रशक्तिः, गुप्तकालस्य स्वर्णयुगम्, अशोक-कालस्य शान्तिः, विक्रमकालस्य नीतिः, मुस्लिमकालस्य भीतिः एवं व्यास-वाल्मीकि-कालिदास-भासप्रभृतीनां कवीन्द्राणाम् काव्यकालिका, गर्ग-गौतम-कपिल-पतञ्जालि-जैमिनिप्रभृतीनाम्-दर्शनलतिका, भास्कराचार्यप्रभृतिभिः विकासिता गणितसम्बन्धिनी खगोलगतिका, कौटिल्यकामन्दकादीनां विस्थपिता राजशास्त्रार्थशास्त्रसम्बन्धिनी सुमतिश्च निगूहिता विद्यते। अतः इयमेव भारतस्य गौरवध्वजसंवाहिका भारतीयैः समादृता भाषा विराजते। अतीतस्य गौरवम्, उत्थानं, पतनम्, ह्रासः विकासश्चैतत्सर्वमनयैव धारितम् अस्ति। अतः इयमेव भाषा नूनं भारतदेशस्य राष्ट्रभाषापदे सर्वथा विराजमानयोग्या एवं कथने नास्ति संशीतिलेश इति।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

19 | पाचन तंत्र की योग चिकित्सा में प्रभावशाली आसन : भुजंगासन - अंकित भट्ट

21 | वृष राशि - ब्रजेश पाठक

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 125 पुष्पम्

श्रीमहेश्वरावतारयोगाचार्यश्रीगोरक्षनाथविरचिता

सिद्धसिद्धान्तपद्धतिः

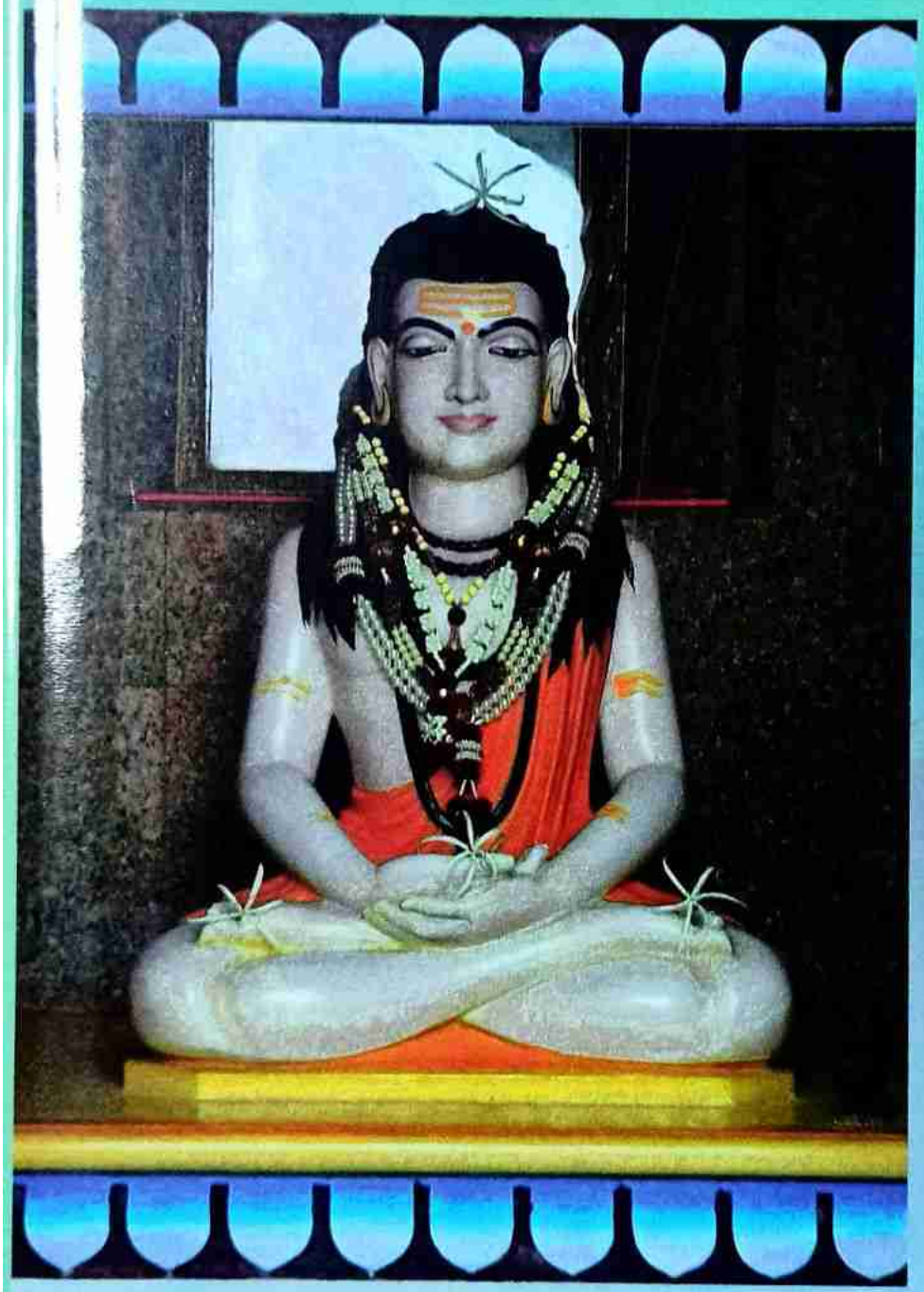

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकौ
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

♦

डॉ. रविशङ्करशुक्लः
सांख्ययोगविभागः

शोध-प्रकाशनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

संस्कृतविश्वविद्यालयस्य ग्रन्थमालायाः 125 पुष्पम्

श्रीमहेश्वरावतारयोगाचार्यश्रीगोरक्षनाथविरचिता

सिद्धसिद्धान्तपद्धतिः

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकौ

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

डॉ. रविशङ्करशुक्लः

सांख्ययोगविभागः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली

प्रकाशकः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
बी-4, सांस्थानिक क्षेत्रम्, कटवारिया सराय,
नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रथमं संस्करणम् : 2023

ISBN : 978-81-966663-1-6

मूल्यम् : ₹ 370.00

मुद्रकः
डी.वी. प्रिन्टर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007

कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 122 पुष्पम्

गौतमावतार-श्रीगङ्गेशोपाध्यायविरचितं

व्याप्तिपञ्चकं सिंहव्याघ्रलक्षणञ्च

श्रीमथुरानाथतर्कवागीशकृतया माथुर्या श्रीरघुनाथशिरोमणि-
विरचितया दीधित्या श्रीजगदीशतर्कालङ्कारनिर्मितया जागदीश्या च शोभितम्

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सह-सम्पादकः
डॉ. अनिलानन्दः
प्रभारी-प्राचार्यः

शोध-प्रकाशनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 122 पुष्पम्

गौतमावतार-श्रीगङ्गेशोपाध्यायविरचितं

व्याप्तिपञ्चकं सिंहव्याघ्रलक्षणञ्च

श्रीमथुरानाथतर्कवागीशकृतया माथुर्या श्रीरघुनाथशिरोमणि-
विरचितया दीधित्या श्रीजगदीशतर्कालङ्कारनिर्मितया
जागदीश्या च शोभितम्

तच्च

सुरतहिन्दूगुरुकुल-संस्कृतमहाविद्यालयप्रधानाध्यापक-न्यायवेदान्ताचार्य-
पं० श्रीश्यामसुन्दर झा विरचितया चन्द्रिकया समलङ्कृतम्

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः
डॉ. अनिलानन्दः
प्रभारी-प्राचार्यः
श्रीरङ्गलक्ष्मीआदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः, वृन्दावनम्

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

प्रकाशकः
श्री लालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
कटवारियासरायः, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रथमं संस्करणम् : 2023

ISBN : 978-81-87987-98-7

मूल्यम् : ₹ 250.00

मुद्रकः
डी.वी. प्रिन्टर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 124 पुष्पम्

श्रीकुलयशस्विशास्त्रिभिः (श्रीशङ्करब्रह्मण्यदेवतीर्थस्वामिभिः) प्रणीतः

योगमकरन्दः

(स्वोपज्ञयोगमञ्जरीव्याख्यासहितः)

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकोऽनुवादकश्च
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

शोध-प्रकाशनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

संस्कृत-विश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः का 124 पुष्पम्

साङ्ख्ययोगवेदान्तोपाध्यायैः श्रीकुलयशस्विशास्त्रिभिः
(श्रीशङ्करब्रह्मण्यदेवतीर्थस्वामिभिः)

प्रणीतः

योगमकरन्दः

(स्वोपज्ञयोगमञ्जरीव्याख्यासहितः)

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः भाषानुवादकश्च
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः
हिन्दू-अध्ययनविभागाध्यक्षश्च

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली-११००१६

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2023

ISBN : 978-81-87987-97-9

मूल्यम् : ₹ 200.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 123 पुष्पम्

कुरुगण्टिश्रीरामशास्त्रिविरचितं

दीपिका-सर्वस्वम्

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

सह-सम्पादकः
डॉ. अनिलानन्दः
प्रभारी-प्राचार्यः

शोध-प्रकाशनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-16

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 123 पुष्पम्

दीपिकासर्वस्वम्

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. अनिलानन्दः

प्रभारी-प्राचार्यः

श्रीरङ्गलक्ष्मीआदर्शसंस्कृतमहाविद्यालयः, वृन्दावनम्

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

नवदेहली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2023

ISBN : 971-81-966663-8-5

मूल्यम् : ₹ 350.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

स्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 130वाँ पुष्प

भारतीय वाङ्मय में योग परम्परा

(योग के आधारभूत तत्त्व)

प्रधान सम्पादक
प्रो० मुरली मनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोध विभागाध्यक्ष

लेखक
डॉ. रमेश कुमार
सहायकाचार्य-योगविभाग

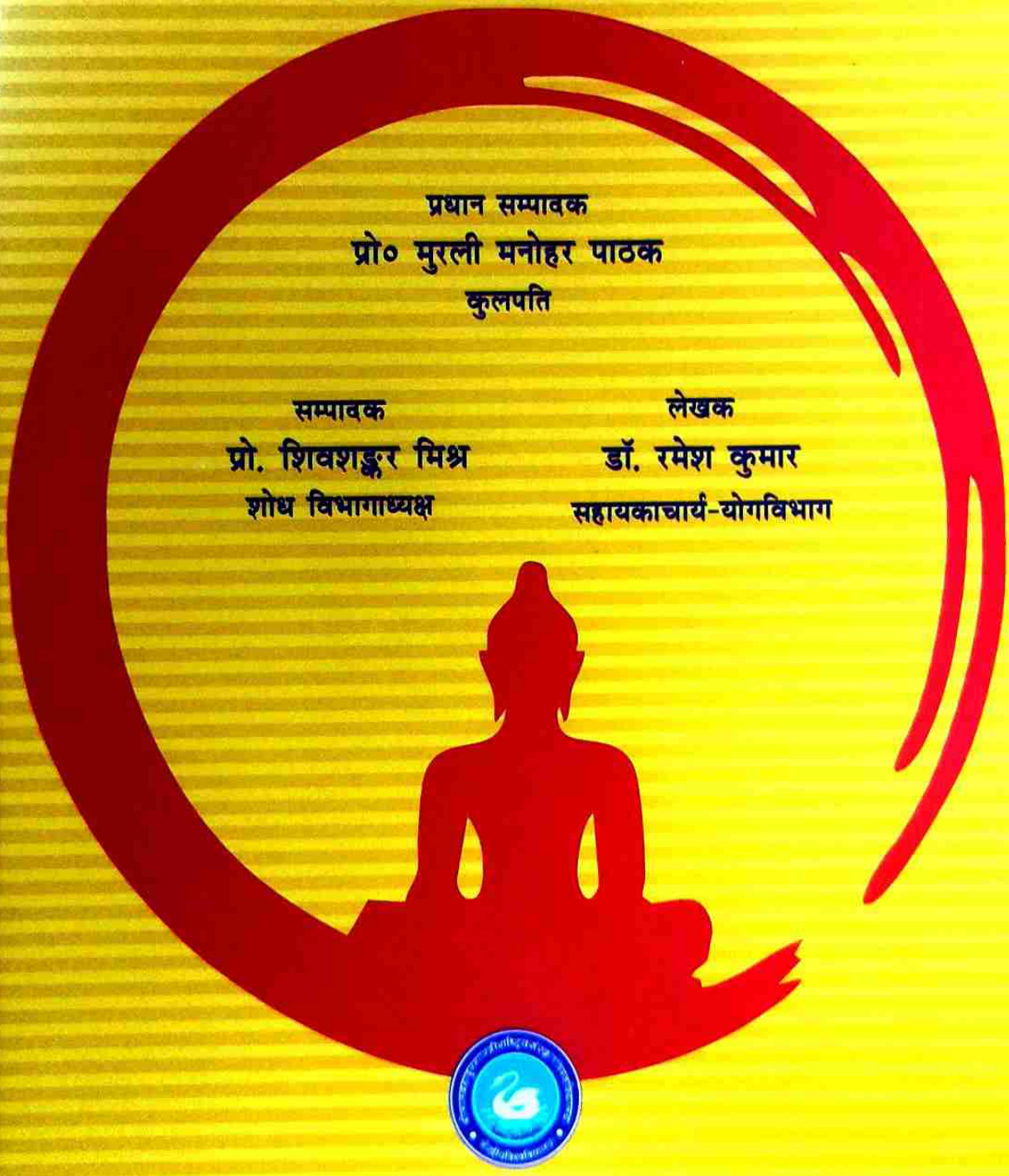

शोध प्रकाशन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110016

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 130 पुष्प

भारतीय वाङ्मय में योग परम्परा

योग के आधारभूत तत्त्व

प्रधान-सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोधविभागाध्यक्ष

लेखक

डॉ. रमेश कुमार

सहायकाचार्य-योगविभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2023

ISBN : 978-81-966663-2-3

मूल्यम् : ₹ 350.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 131वाँ पुष्प

योग का महत्त्व एवं सिद्धान्त

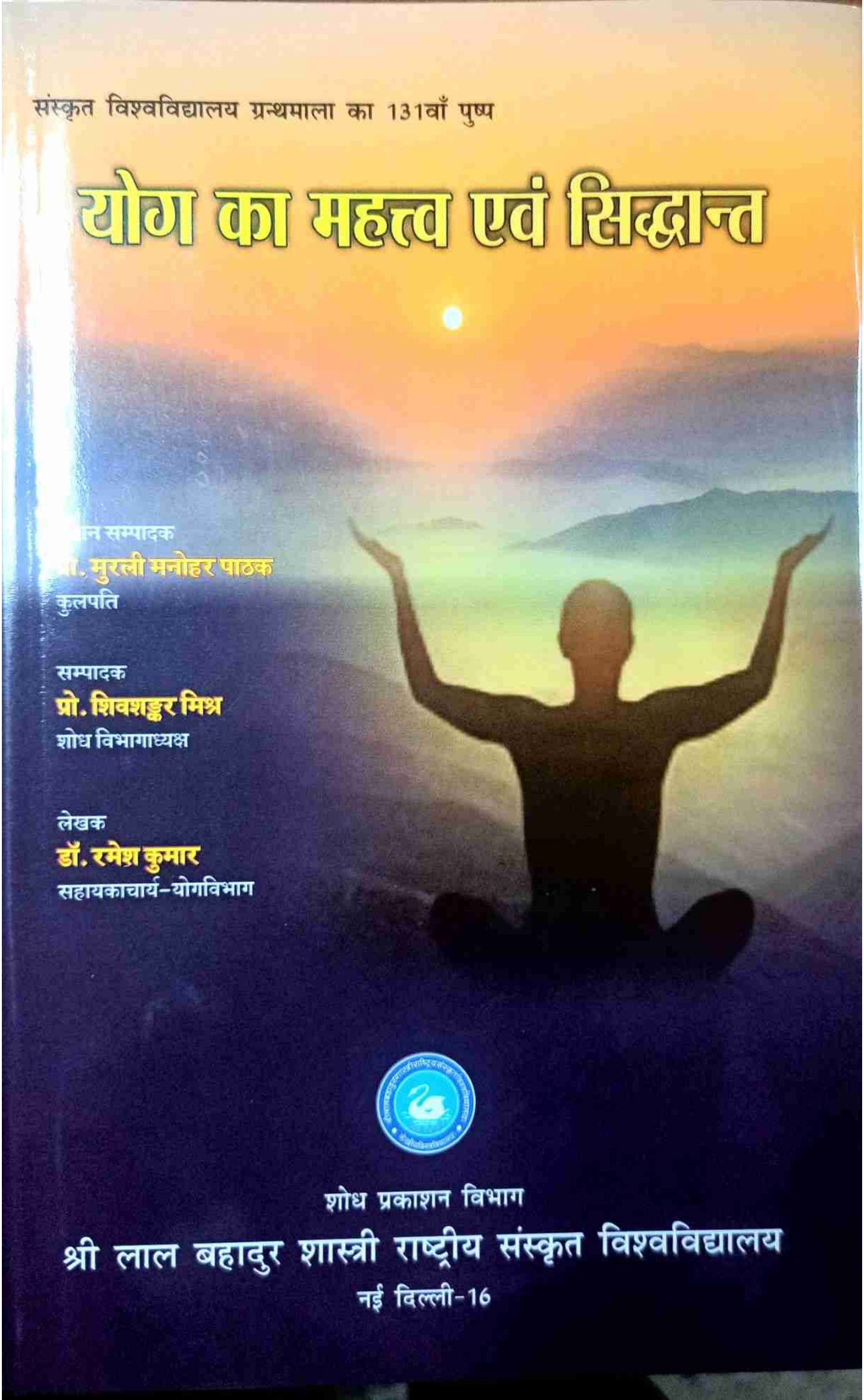

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरली मनोहर पाठक
कुलपति

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
शोध विभागाध्यक्ष

लेखक
डॉ. रमेश कुमार
सहायकाचार्य-योगविभाग

शोध प्रकाशन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-16

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमाला का 131 पुष्प

योग का महत्त्व एवं सिद्धान्त

IMPORTANCE & PRINCIPLES OF YOGA

प्रधान-सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सम्पादक

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोधविभागाध्यक्ष

लेखक

डॉ. रमेश कुमार

सहायकाचार्य-योगविभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

नई दिल्ली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2023

ISBN : 978-81-966663-0-9

मूल्यम् : ₹ 330.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

संस्कृत विश्वविद्यालय ग्रन्थमाला का 126वाँ पुष्प

ऋग्वेदीय शाखा-संहिताओं का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रधान सम्पादक
प्रो. मुरली मनोहर पाठक
कुलपति

लेखक
डॉ. अमलधारी सिंह

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

शोध प्रकाशन विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-16

संस्कृत-विश्वविद्यालय-ग्रन्थमाला का 126वाँ पुष्प

ऋग्वेदीय शाखा-संहिताओं का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रधानसम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठक
कुलपति

लेखक
डॉ. अमलधारी सिंह

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीयविश्वविद्यालय)
नई दिल्ली-16

प्रकाशक
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग,
कटवारिया सराय, नवदेहली-110016

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

प्रकाशन वर्ष : 2023

ISBN : 978-81-966663-6-1

मूल्य : ₹ 350.00

मुद्रक
डी.वी. प्रिन्टर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 120 पुष्पम्

अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः

प्रधानसम्पादकः
प्रो० मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

प्रणेता
महामहोपाध्यायः आचार्यरहसबिहारीद्विवेदी
राष्ट्रपतिसम्मानितः

सम्पादकः
प्रो० रमेशकुमारपाण्डेयः

सहसम्पादकः
प्रो० शिवशङ्करमिश्रः

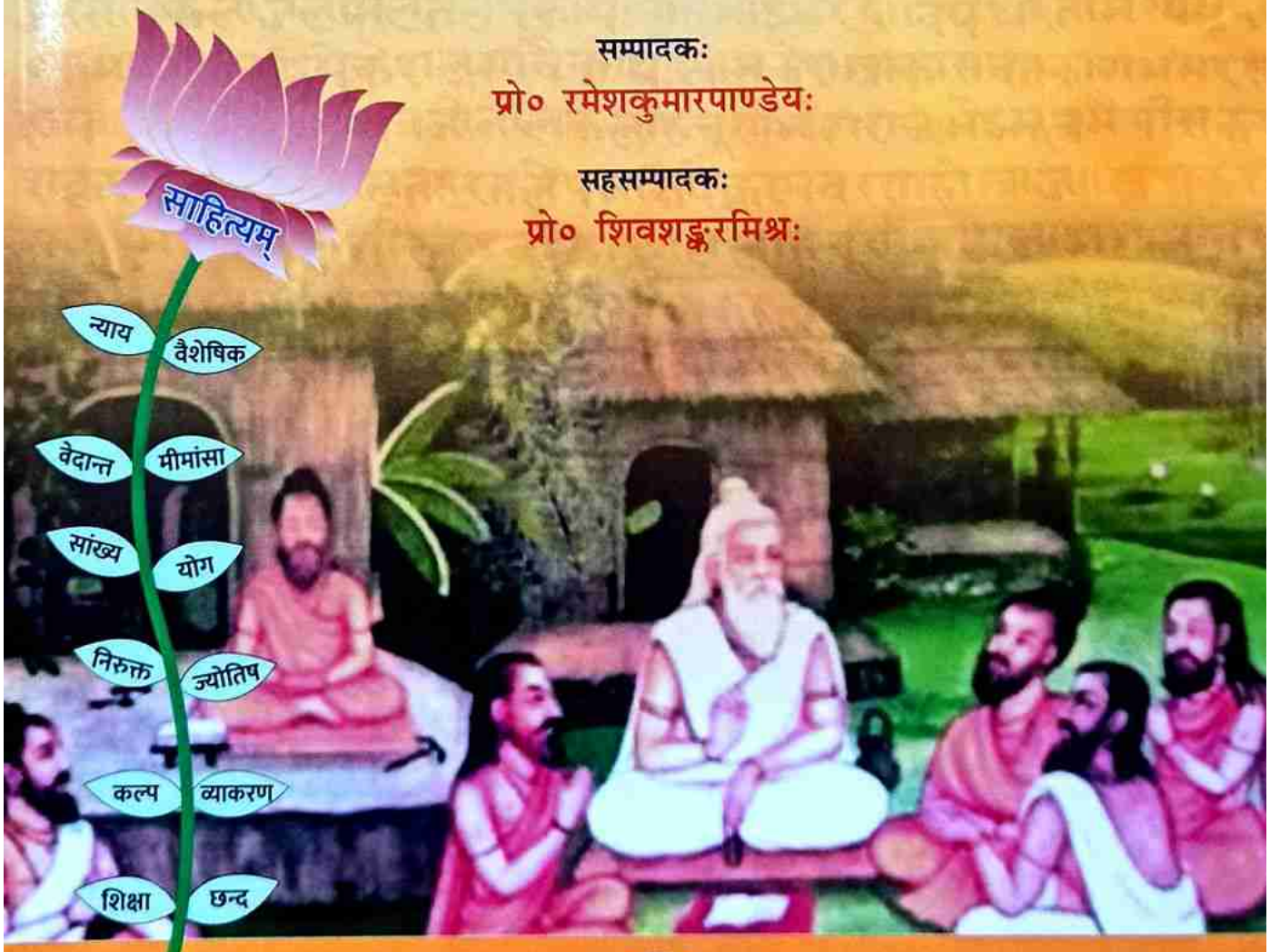

शोध-प्रकाशनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-110016

संस्कृतविश्वविद्यालयग्रन्थमालायाः 120 पुष्पम्

अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः

प्रधानसम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

प्रणेता
महामहोपाध्यायः आचार्यरहसबिहारीद्विवेदी
राष्ट्रपतिसम्मानितः

सम्पादकः
प्रो. रमेशकुमारपाण्डेयः

सहसम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

प्रकाशक:
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालय:
(केन्द्रीयविश्वविद्यालय:)
बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग,
कटवारिया सराय, नवदेहली-110016

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

प्रथमं संस्करणम् : 2023

ISBN : 81-87987-96-0

मूल्यम् : ₹ 500.00

मुद्रक:
डी.वी. प्रिन्टर्स
97-यू.बी., जवाहर नगर, दिल्ली-110007

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशंकर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. विजय गुप्ता

Year : 2023 Vol. 02 Month : December

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक

प्रो. शिवशंकर मिश्र

सह-सम्पादक

डॉ. विजय गुप्ता

Year : 2023 Vol. 02 Month : December

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 08, अंक : 02

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129, ए.डी.ए.
कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)

प्रकाशन वर्ष
दिसम्बर-2023

सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. विजय गुप्ता

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम् एम.आई.जी. II,129, ए.डी.
ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ०प्र०)
मो.-9411171081
ईमेलः vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल

(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स- अ- सं- महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (पूर्वकुलपति)
  श्री ला-ब-शा-रा-सं-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (पूर्वकुलपति)
  उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा)
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

शोधपत्र समीक्षा समिति

(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय, निदेशक
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर
- प्रो. जे. के. गोदियाल
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. दिनेश कुमार गर्ग
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा
  राज.महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक त्रिपाठी
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

विषयानुक्रम.....

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सङ्ख्या
1.	संस्कृतरूपकेषु वर्णित-वर्णव्यवस्था	डॉ.नरेन्द्रकुमारसैनी	01
2.	सिद्धान्तग्रन्थोक्तयन्त्राणां वेधप्रक्रिया	ब्रजेशपाठकः	07
3.	पतञ्जलिकृत-महाभाष्यस्य टीकानां विश्लेषणात्मक.....	श्वेताङ्कभारद्वाजः	14
4.	शास्त्रीयसिद्धान्तसंरक्षणे लोके च परम्परासम्बन्धस्योप...	आलोकसेनः	20
5.	न्यायवैशेषिकदर्शननये मोक्षस्वरूपविचारः	दीपकमण्डलः	29
6.	न्यायशास्त्रे शब्दस्वरूपविवेचनम्	लिपिपात्रः	35
7.	वैदिकवाङ्मये सृष्टिः	अनिलशर्मा	43
8.	न्यायदर्शने मङ्गलस्य सफलत्वविमर्शनम्	मिलनदत्तः	47
9.	अलिविलासिसंलाप का पात्रगत वैशिष्ट्य	डॉ.अंकित सिंह यादव	54
10.	उपनिषद् में जगत् विचार	डॉ.अरविन्द कुमार	64
11.	आदि से अनादि : भगवान् आदिनाथ	प्रशान्त जैन	68
12.	'चार्थे द्वन्द्वः' सूत्र का न्यास एवं बालमनोरमा टीकाओं..	कुसुम लता	73
13.	कर्मयुग प्रणेता : ऋषभदेव	पारस जैन	81
14.	Exploring the Buddhist Perspective on.....	Ven. Dr. Kandegama D. Thero	89
15.	Swami Vivekananda's Vedanta : Concepts...	Anup Mondal	100

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Science)

सम्पादक
प्रो. शिवशंकर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ. विजय गुप्ता

Year : 2024 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

ISSN : 2455-717X

व्युत्पत्ति

व्युत्पत्ति
VYUTPATTI

(A peer reviewed Half yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences)

सम्पादक

प्रो. शिवशंकर मिश्र

सह-सम्पादक

डॉ. विजय गुप्ता

Year : 2024 Vol. 01 Month : June

Published by : **Matrisadanam**, M.I.G - 2, A.D.A Colony, Naini, Prayagraj (U.P.)

पत्रिका
व्युत्पत्ति (अर्द्धवार्षिक)
वर्ष : 09, अंक : 01

प्रकाशन- मातृसदनम्
एम.आई.जी. II, 129,
ए.डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ.प्र.)

प्रकाशन वर्ष
जून -2024

सम्पादक
प्रो- शिवशङ्कर मिश्र

सह-सम्पादक
डॉ- विजय गुप्ता

सम्पादकीय कार्यालय-
मातृसदनम्, एम.आई.जी. II, 129, ए.
डी.ए.कालोनी, नैनी, प्रयागराज (उ.प्र.)
मो.- 9411171081
ईमेल : vyutpatti12@gmail.com
वेबसाइट : www.vyutpatti.in

- पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त चिन्तन से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
- पत्रिका के सम्बन्ध में किसी भी विवाद के निस्तारण का न्यायक्षेत्र केवल प्रयागराज होगा।
- पत्रिका के सम्पादक एवं परामर्शदातृ मण्डल के समस्त सदस्य पूर्णतया अवैतनिक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सेमवाल प्रिंटिंग प्रेस, ऋषिकेश
(उत्तराखण्ड)

परामर्शदातृ-मण्डल

(Advisory Board)

- प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव (पूर्वन्यायविभागाध्यक्ष)
  श्री स. अ. सं. महाविद्यालय, अरैल, प्रयागराज
- प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय (पूर्वकुलपति)
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. गोपबन्धु मिश्र (कुलपति)
  गोपनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात
- प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी (पूर्वकुलपति)
  उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार,उत्तराखण्ड
- प्रो. सविता मोहन (पूर्वनिदेशक-उच्चशिक्षा
  उत्तराखण्ड उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखण्ड

शोधपत्र समीक्षा समिति

(Research Paper Review committee)

- प्रो. रमाकान्त पाण्डेय, निदेशक
  केन्द्रीय सस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर
- प्रो. जे. के. गोदियाल
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. कमला चौहान
  हे. न. ब. ग. विश्वविद्यालय, श्रीनगर
- प्रो. रामसलाही द्विवेदी
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रो. दिनेश कुमार गर्ग
  सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रो. संगीता मिश्रा
  राज.महाविद्यालय, चिन्यालीसौढ़, उत्तरकाशी, उ.प्र.
- डॉ. रामविनय सिंह
  डी. ए. वी. पी. जी. कालेज, देहरादून, उत्तराखण्ड
- डॉ. रामरतन खण्डेलवाल
  उत्तराखण्ड सस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड
- डॉ. अभिषेक तिवारी
  श्री ला.ब.शा.रा.सं.विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अरुणिमा
  राज. स्ना. महाविद्यालय, कोटद्वार, उत्तराखण्ड

विषयानुक्रम.....

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सङ्ख्या
1.	अद्वैतदिशा माया-ईश्वरयोरन्तःसम्बन्धः	प्रो.जवाहरलालः	01
2.	वेदोपनिषद्दर्शितो राष्ट्रबोधः	विष्णुप्रसादसेमवालः	06
3.	ऋक्प्रातिशाख्याष्टाध्याय्योः प्रगृह्यसंज्ञायाः स्वरूपम्	राहुलकुमारसारस्वतः	13
4.	वैदिकवाङ्मयेषु षोडशसंस्काराणां वैज्ञानिकं महत्त्वम्	राजीवकुमारपाण्डेयः	24
5.	पाणिनीयव्याकरणशास्त्रे अतिदेशविमर्शः	सूर्यप्रकाशनौटियालः	35
6.	अद्वैतवेदान्ते मायास्वरूपम्	अमितकुमारयादवः	39
7.	प्राचीन भारतीय परम्परा में सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय...	डॉ. रेणू वत्स	44
8.	शाब्दबोध में तात्पर्यज्ञान की कारणता	डॉ. प्रज्ञा	52
9.	उपनिषदों में जैन अनेकान्त दृष्टि के मूल तत्त्व	आकाश सिंह	60
10.	भारतीय ज्ञान परम्परा में हास्य रस का शास्त्रीय स्वरूप	दीपक मिश्र	68
11.	आचार्य गुणरत्नगणि की दृष्टि से मम्मटीयकाव्यस्वरूप...	मुकुल बडोला	80

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 135 पुष्प

ध्वनिसिद्धान्तमूलम्

प्रधान-सम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

लेखकः
अनमोल शर्मा

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नई दिल्ली-110016

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2024

ISBN : 978-81-972035-4-1

मूल्यम् : ₹ 550.00

मुद्रकः
डी.वी. प्रिन्टर्स
97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

संस्कृतविश्वविद्यालय-ग्रन्थमालायाः 136 पुष्पम्

लक्षणावादः

प्रधान-सम्पादकः
प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः
कुलपतिः

सम्पादकः
प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

लेखकः
डॉ. सौरभदुबे

शोध-प्रकाशनविभागः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
नवदेहली-110016

Scanned with ACE Scanner

प्रकाशकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

बी-4, कुतुबसांस्थानिकक्षेत्रम्, नवदेहली-110016

© प्रकाशकाधीनः

प्रकाशनवर्षम् : 2024

ISBN : 978-81-972035-8-9

मूल्यम् : ₹ 700.00

मुद्रकः

डी.वी. प्रिन्टर्स

97-यू.बी., जवाहरनगरम्, देहली-110007

Scanned with ACE Scanner

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाई-सितम्बर) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त- जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः अष्टचत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्- घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिनङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः एकादशसंख्याकाः शोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तु-जातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. शाब्दिकाभिमतो नामार्थविचारः 1-7
   - डॉ. गोविन्दपौडेलः
2. मम्मटीयगूणीभूतव्यङ्ग्यस्योपजीव्यत्वविचारः 8-20
   - डॉ. राजकुमारमिश्रः
3. निरुक्तमतेन जातिपदार्थविचारः 21-27
   - डॉ.बद्रीनारायणगौतमः
4. इण्डोनेशियायाः वायांगसाहित्ये भारतीयनाट्यपरम्परायाः प्रभावः 28-41
   - डॉ. ललितपाण्डेयः
5. जैनसंस्कृतौ पर्वाणि 42-47
   - प्रो. कुलदीपकुमारः

हिन्दी विभाग

6. भाट्टमत में श्रुतार्थापत्ति प्रमाण का निरूपण 48-54
   - डॉ. ठाकुर शिवलोचन शाण्डिल्य
7. लास्य-स्वरूप निरूपण 55-66
   - डॉ. मुकेश कुमार मिश्र
8. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन 67-74
   - डॉ. सुरेन्द्र महतो

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे चतुर्थोऽङ्कः (अक्टूबर-दिसम्बर) 2023 ई०

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

सम्पादकीयम्

विश्वस्य समेषां राष्ट्राणां भवति काचिद् गौरवभूता स्वकीया राष्ट्रभाषा, यस्यां विराजते राष्ट्रस्य माहात्म्यम्, राष्ट्रीया संस्कृतिः, राष्ट्रीया परम्परा, राष्ट्रीयचिन्तनञ्च। सर्वाण्यपि राष्ट्राणि स्वकीयया मातृभाषया नितान्तं स्निह्यन्ति। स्वभाषासम्भाषणे, स्वभाषालेखने, स्वभाषापठने पाठने च आत्मगौरवमाकलयन्ति। किमधिकं स्वभाषासंरक्षणाय आत्मानमपि समर्पयन्ति, परञ्च पश्चिमचिन्तनप्रभावादस्माकं देशे न दृश्यते तादृशं परिदृश्यं, न वा भारतीयानां यूनां विद्यते तादृक् भाषाप्रेम। ते तु केवलमर्थलाभाय यतन्ते, तदर्थं कापि भाषा भवेत्, कापि विद्या भवेत्, किमपि साधनं भवेत्, किमपि वा आचरणं भवेत् सर्वमौदार्येणोररीकुर्वन्ति। वस्तुतः विश्वऽस्मिन् विश्वे विकसितानि यानि खलु राष्ट्राणि तानि स्वकीयं साहित्यवैभवम्, स्वकीयं ज्ञानविज्ञानम्, स्वकीये संस्कृतिपरम्परे च स्वभाषया प्रकाशयन्ति। जर्मनदेशे जर्मनभाषया, फ्रांसदेशे फ्रेञ्चभाषया, जापानदेशे जापानीभाषया, चीनदेशे चीनीभाषया एवमेव अन्येष्वपि देशेषु स्वभाषया एव व्याख्यायते समग्रं साहित्यं, कलावैभवं, तकनीकिज्ञानविज्ञानञ्च। अत्र भारते न तथा, कियद्दौर्भाग्यमस्माकम्? समासां भाषाणां जननीभूता, विश्ववैर्वन्दिता सती अस्माकं संस्कृतभाषा अस्माभिः नाद्रियते, नास्त्यस्माकं संस्कृतं प्रति समवेतश्रद्धा न वा हिन्दीभाषां प्रत्यैकमत्यम्, अपितु तत्तत्क्षेत्रीयाः तमिल-तेलगु-कन्नड-मलयालम-उडिया-बंग-असमिया-मणिपुरीप्रभृतयो भाषाः तत्तत्प्रान्त- जनैराद्रियन्ते। अतोऽपेक्ष्यते यदस्माकं देशस्यापि काचित् सर्वप्रान्तेषु स्वीकार्या भाषा भवेद्यया अस्माकं समग्रं प्राचीनतममाधुनिकञ्च भारतीयं ज्ञानविज्ञानं व्याख्यायितं भवेत्। अस्याः भावनायाः सम्पूर्तिः संस्कृतभाषया एव सम्भवति यतः संस्कृतं सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, अत्र निहितमनन्तं ज्ञानसम्पत्। विविधधर्म-सम्प्रदाय-भाषाभूषितस्य भारतस्य एकतायाः मूलकारणं संस्कृतमेव। संस्कृतं कस्याप्येकस्य प्रान्तस्य भाषा नास्त्यपितु समेषां प्रान्तानां समग्रस्य च राष्ट्रस्य भाषाऽस्ति। अनयैवानुभूयते अखण्डराष्ट्रैक्यबोधः। संस्कृतस्य राष्ट्रभाषारूपेण संस्थापनं यदि देशे भवेत्तर्हि विश्वस्मिन् विश्वे भाषादृष्ट्या फ्रान्स-जापान-चीनादिदेशवद् भारतस्यापि महत्त्वं नूनमभिवर्द्धेदिति चिन्तयामः।

विश्वविद्यालयानुदानायोगेन स्वीकृतासु सन्दर्भितशोधपत्रिकास्वन्यतमा श्रीलालबहादुरशास्त्री-राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य त्रैमासिकी शोधपत्रिका 'शोधप्रभा'। इयं विगतेभ्यः अष्टचत्वारिंशद्वर्षेभ्यः नैरन्तर्येण मौलिकोत्कृष्टान्वेषणान्वितशोधपत्रप्रकाशनपरायणा अनुसन्धानक्षेत्रे विशिष्टं स्थानं बिभर्ति। पत्रिकेयं संस्कृतविदुषामनुसन्धित्सूनां छात्राणाञ्च चिन्तननिचयोन्मीलनाय अनुद्घाटित-ज्ञानवैभवस्योद्- घाटनाय महोपकारिकेति मे दृढीयान् विश्वासः।

शोधप्रभायाः प्रकृतेऽस्मिनङ्के नैकविधविषयगाम्भीर्यमण्डिताः त्रयोदशसंख्याकाः शोधनिबन्धाः प्रकाश्यन्ते। प्रखरप्राञ्जलप्रतिभासम्पन्नैः नदीष्णैः सुधीभिः अनुसन्धानपद्धतिमाश्रित्य तत्तद्विषयेषु गवेषणापूर्वकं मौलिकमपूर्वञ्च चिन्तनं विहितम्। अनुसन्धानपथि प्रवृत्तानामाचार्याणामनुसन्धातृणाञ्च प्रतिभाप्रगल्भेन शोधप्रभायाः 'प्रभा' सर्वत्र विलसत्विति कामयमानोऽहं निकषधिषणापूरितविषयवस्तु-जातस्य प्रकाममुद्बोधनाय सम्प्रार्थये सरस्वतीसपर्यापरान् शास्त्रसमुपासकान् सुमनसो मनीषिणः।

-प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. **प्रतिपदटीकासमग्रावबोधसम्प्रदायानामवेक्षणम्** 1-8
   - प्रो० रहसबिहारीद्विवेदी

2. **वैदिकदृष्ट्या सृष्टेः समीक्षणम्** 9-13
   - प्रो. रामानुज उपाध्यायः

3. **मीमांसायां नञर्थविचारः** 14-22
   - प्रो. सन्तोषकुमारशुक्लः
   - एवं श्रीप्रवीणसेमवालः

4. **सामान्यवादे नव्यनैयायिकमतम्** 23-25
   - डॉ. विष्णुप्रसाद टी. रावलः

5. **गौतमीयन्यायदर्शने निर्विकल्पकस्य अवधारणा** 26-29
   - प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

6. **निरौपचारिकशिक्षायां प्रौद्योगिक्याः भूमिका** 30-38
   - डॉ. प्रतिष्ठा पुरोहित

हिन्दी विभाग

7. **वातुल की ऐतिहासिक समीक्षा** 39-45
   - प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र

8. **आयुर्वेदान्तर्गत शालाक्यतन्त्र में परिगणित रोगों का ज्योतिषशास्त्रीय अध्ययन** 46-60
   - डॉ. धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

जून, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

संस्कृतं हि भास्वरम्
संस्कृतं हि भारतम्।
संस्कृतं हि जीवनम्
संस्कृताय जीवनम्॥

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 10 अंक : 01 (109)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | वेदाऽर्थे पाणिनीयव्याकरणस्य कृतकृत्यता
- गौरवकुमारः

07 | ज्योतिषशास्त्रदृष्ट्या आयुर्विचारः
- कु. श्रद्धा मिश्रा

10 | तत्त्वमसिमहावाक्ये लक्षणायाः विचारः
(सिद्धान्तबिन्दुवेदान्तपरिभाषासन्दर्भे)
- जूही गर्ग

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

अत्यन्तं क्लान्तं जनयत्यसौ प्रसंगः यत् सन्तोऽपि भारतीयाः वयमसदाचरणे तत्पराः। भारते जन्मलाभः गौरवाय भवति, श्रेयाय भवति अतएव देवा अपि अस्यां भुवि जन्म वाञ्छन्ति। एवं भूता देवैः स्पृहणीया इयं दिव्या भूमिः। यस्मिन् देशे चरित्रमेव सर्वश्रेष्ठं बलं भवति, यस्मिन् देशे गुणा एव पूजास्थानानि भवन्ति। तत्र सदाचरण मकृत्वा असदाचरणे जुगुप्सिते च कार्ये वयं नितरां निरता इति महते दौर्भाग्याय कल्प्यते। प्रसङ्गेऽस्मिन् मनुना लिखितं मनुस्मृतौ -

- **एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
  स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥
- **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु लिङ्गं न च तद् वयः।**

अन्यच्च -

- **वृत्तं यत्नेन संरक्ष्येत् वित्तमायाति याति च।**
  अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥

एवं भूते दिव्यदेशे विलोक्यतां सम्प्रति का दशा? प्रतिदिनं समाचारपत्रं भ्रष्टाचारसूचनाभिः पूरितं भवति, लुण्ठनम्, वञ्चनम्, अपहरणम्, उत्कोचकृत्यं समाचारपत्रस्य मुख्यं वृत्तं भवति। चरित्रबलन्तु सर्वथा दूरे अपगतम्। किमधिकं सर्वत्र सर्वेषु च जनेषु आचारहीनता दरीदृश्यते।

अतः जनानामभ्युदयाय समाजस्य समुन्नत्यै च सम्प्रति चरित्रशिक्षणं नितान्तमनिवार्यमनुभूयते, यतोहि यावच्चरित्रमुत्कृष्टं न भवति, यावज्जीवने अहिंसा-दया-करुणा-परोपकारप्रभृति गुणानामवकाशो न भवति, यावत् सौहार्दं नोदेति, यावत् पापान्न विभेति, यावन्नैतिकाचरणं न भवति तावत् केवलं समग्रस्य विश्वस्य सूचनासंग्रहणामात्रं सर्वथा व्यर्थमेव। केवलमर्थप्रदायिनी शिक्षा उदरन्तु पोषयति परञ्च चित्तं नाह्लादयति, न च शान्तिं प्रददाति, न चात्मकल्याणं जनयति। अतः केवलं पदार्थविषयिणी शिक्षा, केवलञ्च सूचनाप्रदायिनी शिक्षा नास्त्यस्माकं देशाय संस्कृत्यै च श्रेयस्करी अपितु शिक्षा समकालमेव विद्याऽपि अपेक्ष्यते, यया वयं भारतीया इति बोधो जागर्ति, **सर्वे भवन्तु सुखिन** इति भावः समुदेति, या च मुक्तिमार्गमुद्घाटयति सैव विद्या अपेक्ष्यते-**सा विद्या या विमुक्तये।**

विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्ययया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥

अस्त्वस्माकं जीवनं भारतीयसंस्कृत्यनुरूपं मूल्यपरकं च यथा भवेत् तादृशी ज्ञानपद्धतिः अस्माभिरनुकरणीया आचरणीया च भवत्विति भूरिशो विनिवेदनम्।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः,
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः,
नई दिल्ली-110016

15 | मेष राशि
- ब्रजेश पाठक

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

जुलाई, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

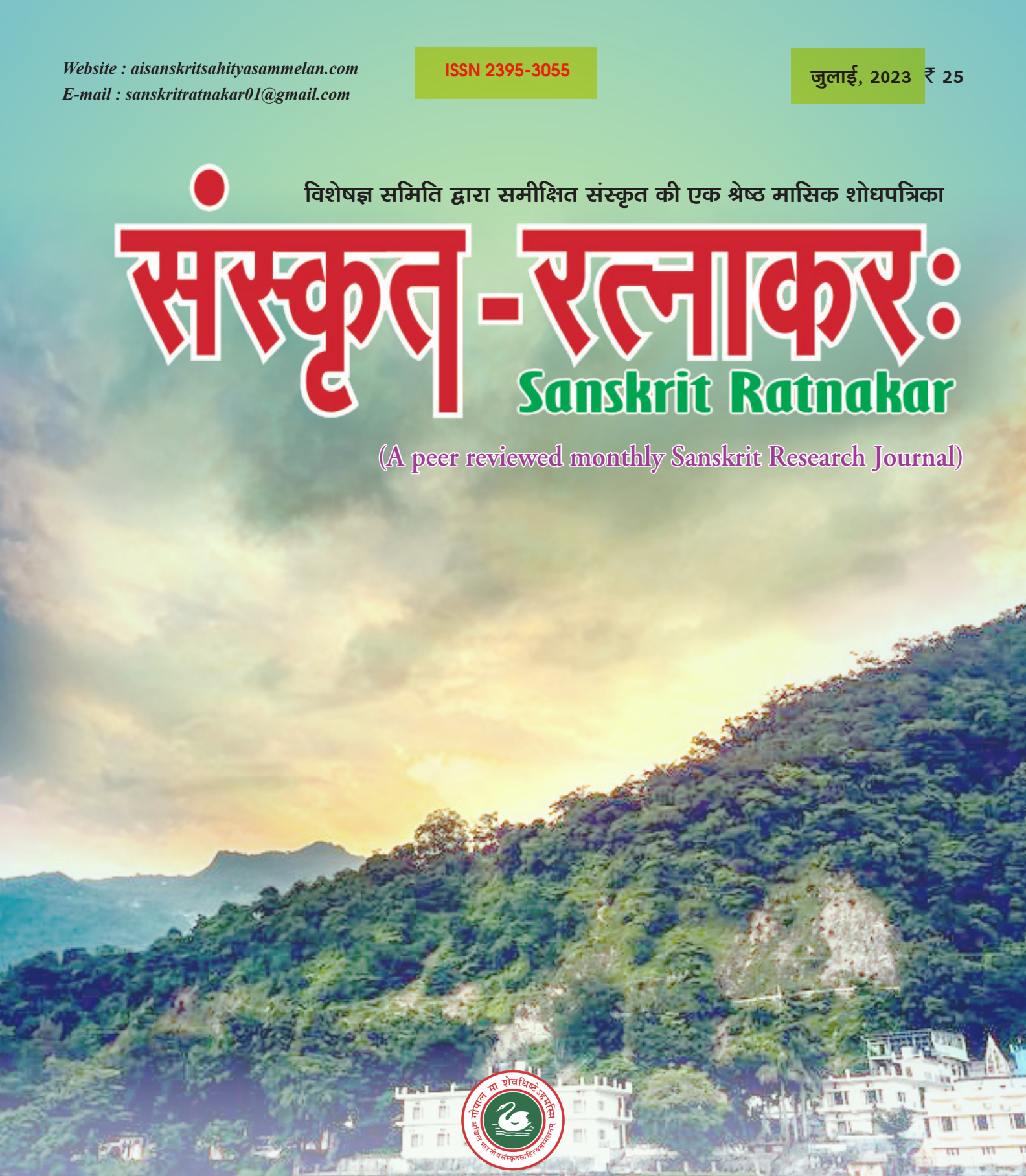

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 10 अंक : 02 (110)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com

E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | अष्टाध्यायीसूत्रस्थ-पञ्चम्यन्तपदार्थविचारः
– चन्दनकुमारपाठकः

06 | महर्षिपाणिनिकृताष्टाध्याय्याः वैशिष्ट्यनिरूपणम्
– संतोषकुमारमिश्रः

09 | बद्धपद्मासन सर्वाइकल, स्पॉन्डिलाइटिस से बचने के लिए करें
– डॉ. रमेश कुमार

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

अत्यन्तं क्लान्तं जनयत्यसौ प्रसंगः यत् सन्तोऽपि भारतीयाः वयमसदाचरणे तत्पराः। भारते जन्मलाभः गौरवाय भवति, श्रेयाय भवति अतएव देवा अपि अस्यां भुवि जन्म वाञ्छन्ति। एवं भूता देवैः स्पृहणीया इयं दिव्या भूमिः। यस्मिन् देशे चरित्रमेव सर्वश्रेष्ठं बलं भवति, यस्मिन् देशे गुणा एव पूजास्थानानि भवन्ति। तत्र सदाचरणमकृत्वा असदाचरणे जुगुप्सिते च कार्ये वयं नितरां निरता इति महते दौर्भाग्याय कल्प्यते। प्रसङ्गेऽस्मिन् मनुना लिखितं मनुस्मृतौ –

- **एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
  स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥
- **गुणाः पूजास्थानं गुणिषु लिङ्गं न च तद् वयः।**

अन्यच्च –

- **वृत्तं यत्नेन संरक्ष्येत् वित्तमायाति याति च।**
  अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः॥

एवं भूते दिव्यदेशे विलोक्यतां सम्प्रति का दशा? प्रतिदिनं समाचारपत्रं भ्रष्टाचारसूचनाभिः पूरितं भवति, लुण्ठनम्, वञ्चनम्, अपहरणम्, उत्कोचकृत्यं समाचारपत्रस्य मुख्यं वृत्तं भवति। चरित्रबलन्तु सर्वथा दूरे अपगतम्। किमधिकं सर्वत्र सर्वेषु च जनेषु आचारहीनता दरीदृश्यते।

अतः जनानामभ्युदयाय समाजस्य समुन्नत्यै च सम्प्रति चरित्रशिक्षणं नितान्तमनिवार्यमनुभूयते, यतोहि यावच्चरित्रमुत्कृष्टं न भवति, यावज्जीवने अहिंसा-दया-करुणा-परोपकारप्रभृति गुणानामवकाशो न भवति, यावत् सौहार्दं नोदेति, यावत् पापान्न विभेति, यावन्नैतिकाचरणं न भवति तावत् केवलं समग्रस्य विश्वस्य सूचनासंग्रहणं सर्वथा व्यर्थमेव। केवलमर्थप्रदायिनी शिक्षा उदरन्तु पोषयति परञ्च चित्तं नाह्लादयति, न च शान्तिं प्रददाति, न चात्मकल्याणं जनयति। अतः केवलं पदार्थविषयिणी शिक्षा, केवलञ्च सूचनाप्रदायिनी शिक्षा नास्त्यस्माकं देशाय संस्कृत्यै च श्रेयस्करी अपितु शिक्षा समकालमेव विद्याऽपि अपेक्ष्यते, यया वयं भारतीया इति बोधो जागर्ति, सर्वे भवन्तु सुखिन इति भावः समुदेति, या च मुक्तिमार्गमुद्घाटयति सैव विद्या अपेक्ष्यते-सा विद्या या विमुक्तये।

अस्त्वस्माकं जीवनं भारतीयसंस्कृत्यनुरूपं मूल्यपरकं च यथा भवेत् तादृशी ज्ञानपद्धतिः अस्माभिरनुकरणीया आचरणीया च भवत्विति भूरिशो विनिवेदनम्।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

11 | वैशेषिकदर्शने गुणवादविमर्शः
– गीताराणी महाण्णा

15 | स्कन्धत्रये संहिताशास्त्रवैशिष्ट्यम्
– प्रिया कौशिकः

18 | न्यायवैशेषिकदर्शने कालतत्त्वविवेचनम्
– लिपिपात्रः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अगस्त, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 10 अंक : 03 (111)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाइनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | आङ्ग्लशासनविरुद्धं विरचितं संस्कृतसाहित्यम्
– प्रो. रमाकान्तपाण्डेयः

15 | आधुनिक संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
– अमित कुमार यादव

18 | भारतीयशिक्षासन्दर्भे अध्यापकशिक्षा
– डॉ. नवीन आर्यः

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

अस्माकं भारतीयज्ञानपरम्परायां शिष्येभ्यो यो वेदमध्यापयति मन्त्रव्याख्यानञ्च करोति स अध्यापकत्वेन परिकल्पितः। अध्यापको नाम अध्यापनकर्ता, पाठगुरुः, अध्यापयिता, संस्कारादिकर्तुर्गुरुराचार्यः, उपाध्यायश्चेति। अद्यत्वे अध्यापकस्यैवाभिधानं शिक्षकत्वेन सुप्रसिद्धम्, अतएव डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन्महोदयानां जन्मतिथिमभिलक्ष्य शिक्षकदिवसः प्रतिवर्षं परिपाल्यते भारतसर्वकारेण। स चाध्यापकः अस्माकं शास्त्रेषु द्विधा सुप्रसिद्धः आचार्यः उपाध्यायश्च। शिष्येभ्यो यो निःशुल्कं शिक्षां प्रददाति स आचार्य इति गीयते-

- **उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद् द्विजः।**
  सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते॥ (मनु. 2/140)
- **यस्तूपनीय व्रतादेशं कृत्वा वेदमध्यापयेत्तमाचार्य्यं विद्यात्।**

आचार्यस्य अन्यापि एका परिभाषा सुप्रसिद्धा-

- **आचिनोति च शास्त्रार्थम् आचारे स्थापयत्यपि।**
  स्वयमाचरते यस्तु स आचार्य इति स्मृतः॥

मोनियरविलियम्सविरचिते कोशग्रन्थे आचार्यविषये एतद्वचनं सम्प्राप्यते- Knowing or teaching the aचार or Rules.

"योऽध्यापयति वृत्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते" इति मनूक्तलक्षणेन सिद्ध्यति यत् शिष्येभ्यो यो शुल्कमादाय शिक्षां प्रददाति स उपाध्यायो भवति-

यस्त्वेनं मूल्येनाध्यापयेदेकदेशं वा तमुपाध्यायमिति। अद्यत्वे शिक्षाप्रणाल्यां शिक्षाकर्मणि संलग्नाः जनाः शिक्षकत्वेन विज्ञायन्ते। वस्तुतः पुरा ये उपाध्यायाः आसन् त एव इदानीं शिक्षका इत्यनुभूयते। शिक्षकविषये शिक्षाविषये चात्यन्तं सुप्रसिद्धमाचार्यचाणक्यवचनम् (भाषायाम्) सम्प्रत्यपि लोकमानसे शिक्षकाणां गौरवसंवर्धनाय अस्मानत्यन्तं सम्प्रेरयति-

- शिक्षक कभी साधारण नहीं होता प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।
- शिक्षा ही सबसे अच्छी मित्र है, शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है। शिक्षा यौवन और सौन्दर्य को परास्त कर देती है।

समाजस्य निखिलेषु प्रकल्पेषु साक्षात् परम्परया वा शिक्षकाणां महती भूमिका अनुभूयते। तत् कामं युद्धं भवेत् शान्तिर्वा भवेत्, ग्रामो भवेत् संग्रामो वा भवेत्, सर्वत्र शिक्षकाः अमूर्ततया विराजन्ते। स्वतन्त्रतासंग्रामेऽपि संस्कृतशिक्षकाणां संस्कृतच्छात्राणाञ्चासीत् महती प्रस्तावना इति प्रकृतेऽङ्के भवन्तः पठितुं प्रभवन्ति।

यथा दृश्यमानं किमपि गगनचुम्बिभवनं मूले आधृतं भवति। यदि मूलं दृढं न भवेत्तर्हि भवनमपि सुदृढं न स्यात्, तद्वदेव सर्वत्र प्रशासकेषु, न्यायाधीशेषु, चिकित्सकेषु, अधिवक्तृषु, अभियन्तृषु, व्यापारिषु, कर्मचारिषु च मूले सूक्ष्मतया शिक्षक एव सन्तिष्ठते। शिक्षकः शिक्षायाः हेतुः, शिक्षा च सकलाभ्युदयस्य हेतुरिति विद्यते कश्चन क्रमः। अतः सकलज्ञानप्रदायकः, परमार्थपथप्रदर्शकः, निखिललोकव्यवहारबोधकः, ज्ञानवैभवस्य, निःश्रेयसाभ्युदयस्य च सम्प्रदायकः शिक्षकः सर्वैस्समादरणीयोऽनुकरणीययश्चेति मे मतिः।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली - ११००१६

22 | 'संस्कृत ज्ञान परम्परा - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' विषय पर आयोजित विशिष्ट व्याख्यानमाला

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

सितम्बर, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

भारत चाँद पर

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब संस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली-110067

वर्ष : 10 अंक : 04 (112)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | चन्द्रयान-3 मिशन ने किया भारत को गौरवान्वित – डॉ. विजय गुप्ता

07 | वैदिकविज्ञानदृष्ट्या स्वप्नविज्ञानम् – अशोक कुमार शर्मा

09 | पल्ली (छिपकली) पतन विचार – साभार: त्रिस्कन्ध-ज्योतिषम् (त्रैमासिक पत्रिका)

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

संस्कृतं नाम वैज्ञानिकी भाषा, तस्याः वाङ्मयोऽतिविस्तृतः विपुलञ्च वर्तते। तत्र भौतिकं, रासायनिकं, जैविकं, आयुर्वैदिकं, अभियान्त्रिकं, खगोलं, वनस्पतीत्यादिविज्ञानानां संयुतिर्वर्तते। वर्तमानकाले प्रवृत्तानामाविष्काराणामनुसन्धानानाञ्च बीजानि संस्कृतवाङ्मये निहितानि सन्ति। संस्कृतेऽस्ति परमाणुवादस्यातिप्रसिद्धिः, सः चाधारो भवति आधुनिकविज्ञानस्य। वैशेषिकदर्शनाभिमतं सृष्टेरुत्पत्तिः परमाणुसंयोगेनाभवत्। परमाणुविज्ञानमधिकृत्य प्रायः प्रतिदिनमाविष्काराः जायमानाः दृश्यन्ते। एतस्मिन् क्रमे अगस्तमासे 'भारतीय-अन्तरिक्ष-अनुसन्धान-सङ्गठन' इत्यनेन 'सतीश-धवन-अन्तरिक्ष-केन्द्र' नामकप्रक्षेपणस्थानात् चन्द्रमसः दक्षिणध्रुवे तृतीयचन्द्रयानस्य प्रक्षेपणे अवतारणे च साफल्यं प्राप्य विश्वे अद्वितीयं कार्यं साधितम्। प्रक्षेपितं प्रज्ञाननामकं चलयन्त्रं प्रतिक्षणं चन्द्रमसः गहनरहस्यानामध्ययनं कुर्वदस्ति, तेन यन्त्रेण सूक्ष्मतत्त्वानां प्रकाशनमपि कृतम्। विज्ञनेनैव मानवजीवनमद्यत्वे सारल्यमानं जायते। विज्ञानेन मानवीयकालस्य मानवीयशक्तेश्च संरक्षणाय बहुविधमनुसन्धानं साधितम्। एतस्माद्धेतोः मानवजीवनं वैज्ञानिकसमुन्नतिश्च संस्कृतस्य सदा सर्वदा आधमर्ण्यं प्रकटयिष्यति।

सितम्बरमासस्य द्वितीये दिनाङ्के भारतेन सूर्यस्य वायुमण्डलस्य चान्वेक्षणार्थम् आदित्य-एल-1 नामकं यन्त्रं प्रेषितमस्ति, तदपि निश्चयेन भारतस्य सुकीर्तिं सम्पूर्णे विश्वे प्रसारयिष्यति। अनेनाभिज्ञायते यत्संस्कृतवाङ्मये विज्ञानस्य महती सम्पदा संरक्षिता विद्यते। अनेनैव प्रकारेण संस्कृतज्ञानविज्ञानमनुसृत्य भविष्यत्कालेऽपि अस्माकं भारतीयवैज्ञानिकाः नैकानि अन्वेषण-कार्याणि सम्पादयिष्यन्ति इति नः द्रढीयान् विश्वासः।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः
शोधविभागाध्यक्षः,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

11 | माण्डूक्योपनिषद्दिशा ब्रह्मस्वरूपविमर्शः – रामेश्वरी शर्मा

14 | श्रीकृष्ण नाम की महिमा – डॉ. योगेश कु.मिश्र

16 | सिंह राशि – ब्रजेश पाठक

19 | Astronomy – Courtesy : Book Pride of India

23 | मन की बात-104 में संस्कृत एवं संस्कृति – डॉ. विजय गुप्ता

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अक्टूबर, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 10 अंक : 05 (113)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | भारतीय सभ्यता की प्रतिनिधि : गौ

07 | दुर्गनिर्माणाय भूमिचयनम्
– प्रियाकौशिकः

10 | Āyurveda

17 | वैयाकरणपरम्परायां त्रिमुनिव्याकरणविषयक..
– सन्तोषकुमारमिश्रः

20 | भारतीय वाङ्मय में पर्यावरण चिंतन
– अमित कुमार यादव

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

● गावो विश्वस्य मातरः ● गावः स्वर्गस्य सोपानम् ● गावः स्वर्गेऽपि पूजिताः ● मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ● गोभिर्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत ● न गोभ्यः परम किञ्चित् पवित्रं भरतर्षभ ● यतो गावस्ततो वयम्, इत्यादि श्रुति-स्मृति-पुराणेतिहास-धर्मशास्त्र-महाकाव्यप्रभृतिग्रन्थेषु गोमातुर्माहात्म्यं सविशदं विवेचितम् । सनातन-जीवनपद्धतौ प्रतिष्ठिताः समेऽपि संस्काराः गोमातुर्सन्निधावेव पूर्णतां प्राप्नुवन्ति । गावः स्वर्गस्य सोपानमिति वदन्तोऽपि भारतीयाः गवामुपरि यादृशमत्याचारमाचरन्ति तदत्यन्तं निन्दितं जुगुप्सितञ्च विद्यते । यासामुपरि अस्माकं जीवनमवलम्बितं, याः कटु-कषायमिश्रितं तृणं खादित्वा अपि अस्मभ्यममृतसदृशं दुग्धं, दधि, घृतञ्च निरन्तरं प्रयच्छन्ति तासामेव हननं न केवलं कार्तघ्न्यमपितु नितान्तमधममाचरणम् । यत्र जनाः गां गोमातरमूचुः तत्रैव विकासव्याजेन आर्थिकोन्नतिप्रवंचनया च ताः निर्ममतया सक्रूरं घ्नन्ति। यत्किञ्चिद् धनलोभाय मातुर्हननं तथैव हास्यास्पदं यथा धनलोभाय क्षुद्रकङ्कणेन महार्घरत्नस्य विनिमयः । गावः परोपकारस्य प्रतिमूर्तयः । तन्निभं नास्ति किञ्चिद् धनं तदुक्तम् -

तृणानि शुष्कानि वने चरित्वा,
पीत्वापि तोयान्यमृतं स्रवन्ति ।
यद्गोमयाद्याश्च पुनन्ति लोकान्
गोभिर्न तुल्यं धनमस्ति किञ्चित् ॥

प्राचीनभारते परिगणितेषु विविधवैभवेषु गोधनं सर्वश्रेष्ठमिति सुप्रसिद्धमत एव गो-गज-वाजिधनेषु गोधनं सर्वादौ परिगणितम् ।

भारते गावो वस्तुतः मातृसदृशाः, यथा माता स्वशिशून् सर्वविधं रक्षयति तथैव गावोऽपि मानवानां सर्वविधं हितं सम्पादयन्ति । अतः सर्वेऽपि गोभक्ताः भारतीयाः हृदयेन निवेद्यन्ते यत् गोमातुर्दिव्यतां विचिन्त्य तस्याः संरक्षणाय संकल्पं संधारयन्तु-

गोषु भक्तश्च लभते यद् यदिच्छति मानवः ।
स्त्रियोऽपि भक्ता या गोषु ताश्च काममवाप्नुयुः ॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवाप्नुयात् ।
धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्माप्नुयात् ॥
विद्यार्थी चाप्नुयात् विद्यां सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम् ।
न किंचित् दुर्लभं चैव गवां भक्तस्य भारत ॥

● मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः ॥
● गाय मरी तो बचता कौन ? गाय बची तो मरता कौन ?

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

नवम्बर, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

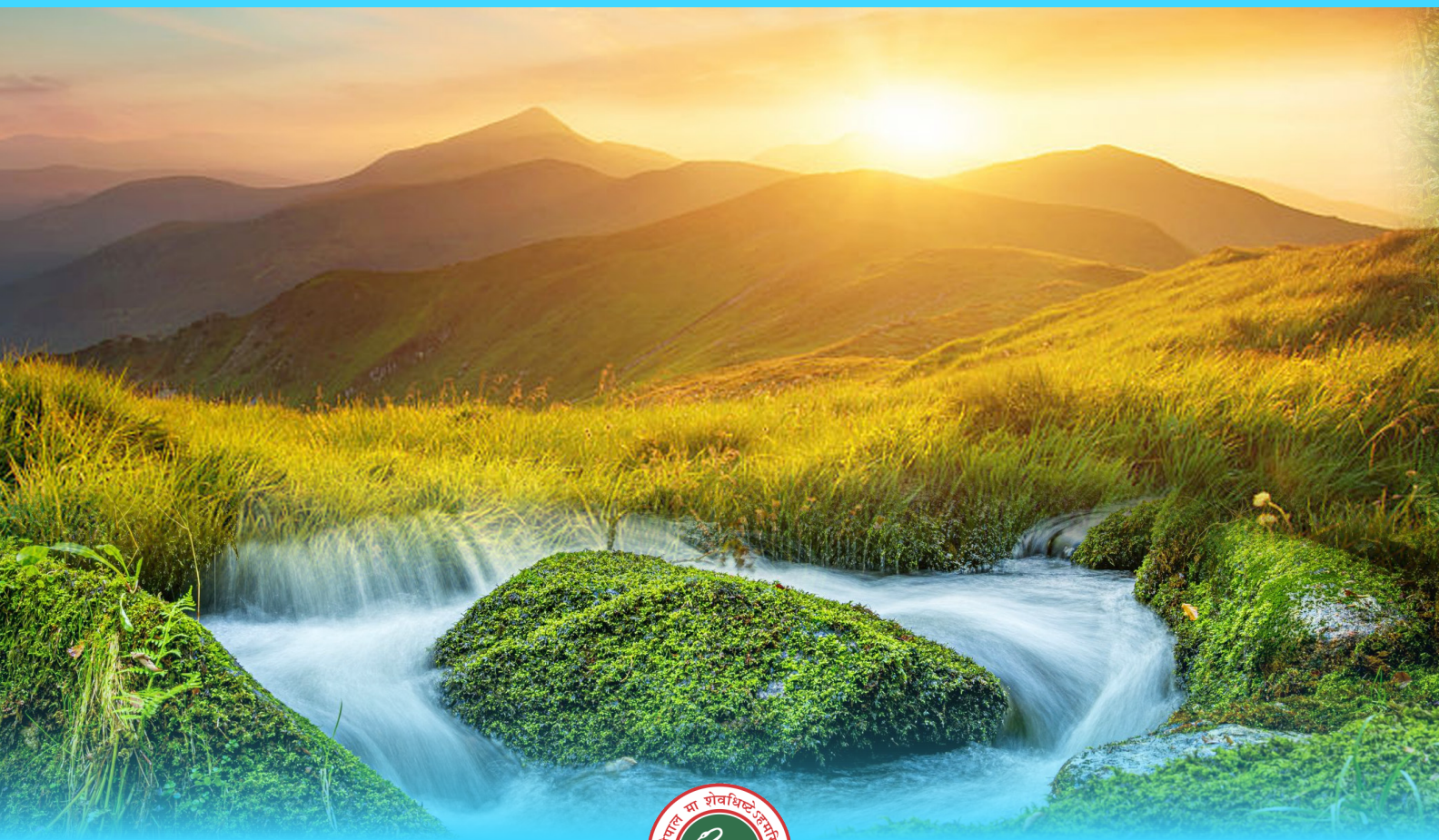

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 10 अंक : 06 (114)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | पुरस्कार वितरण समारोह वर्ष 2023 की वार्ता

07 | 'अनुसन्धानसम्पादनप्रविधिः' ग्रन्थ की समीक्षा
– डॉ. विजय गुप्ता

09 | जल के वैदिक सन्दर्भ : एक समीक्षा

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

"विद्वान् सर्वत्र पूज्यते"

स्वगेहे पूज्यते गेही स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कराचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥

एतदाभाणकमक्षरशः संघटते लोकजीवने । ये खलु सरस्वतीसमुपासकाः विद्यालाभायलब्धक्लेशाः मातरं शारदां सततं समाराधयन्ति तेषां यश-प्राप्तिः जयलाभश्च निश्चयेन जायते। अपरिचितेऽपि देशे ज्ञानवैभवाद् विद्वांसः समाद्रियन्ते पूज्यन्ते च। विद्यायाः भवति कश्चन तथालोकः यस्मिन् सर्वे आलोकिताः चमत्कृताश्च भवन्ति। अयं प्रज्ञालोकरू अत्यन्तं प्रदीप्तः यश्च स्वसत्त्वं स्वयमेव प्रमाणयन्ति तदर्थं प्रमाणान्तरस्यापेक्षा न भवति। यथा कस्तूरीमृगः स्वकस्तूरिकामोदं शयथेन न प्रमाणयत्यपितु तस्य सौरभ एव कस्तूर्याः सत्त्वे प्रमाणभूतो भवति। अत एवोच्यते –

न हि कस्तूरिकामोदः शयथेन विभाव्यते ।

अखिलभारतीयसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनं विगतेभ्यो दशाधिकवर्षेभ्यः प्रतिवर्षं विदुषां शास्त्रसाधनां समवलोक्य, तेषां विद्यावैभवं विलोक्य, अध्ययने, अध्यापने, सर्जने प्रकाशने च तेषां श्रमं परीक्ष्य तान् श्रद्धया सम्मानयति पुरस्करोति च। वर्षेऽस्मिन् पुरस्कारनिर्णायकसमित्या गहनपरीक्षणानन्तरं देशस्य त्रयो विद्वांसः पुरस्काराय चिताः, तेषां विवरणमेवम् –

1. डॉ. नन्दिता शास्त्री 'चतुर्वेदी'
2. प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय
3. डॉ. मधुसूदन मिश्र

एतेषां विदुषामहर्निशपरिश्रमेण संस्कृतमातुः समर्चनेन च अनेके विद्यार्थिनः शोधार्थिनश्च निरन्तरं संस्कृतमातरं सेवन्ते। सम्मेलनसदस्यैः विशेषज्ञैश्च एतेषां संस्कृतसेवाभावनां विभाव्य अस्य वर्षस्य पुरस्कारप्रदानाय एते निणीतः। पुरस्काररूपेण एतेभ्यः प्रशस्तिपत्रं पुरस्काराशिश्च प्रदीयते। नवम्बरमासस्य द्वितीये दिनाङ्के समायोजिते एकस्मिन् सम्मानसमारोहे सम्मेलनसदस्यानां विशिष्टातिथीनाञ्च समक्षमेते पुरस्काराः विद्वद्भ्यः सादरं प्रदास्यन्ते। विदुषां सम्माननेन अस्माकं सम्मेलनमपि स्वस्मिन् गौरवं स्वाभिमानञ्चानुभवति।

जयतु भारतम् । जयतु संस्कृतम्।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

20 | योगदर्शने योगपदार्थमधिकृत्य वाचस्पतिमिश्रमतम्
– सुभाषकुन्तलः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

दिसम्बर, 2023 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 10 अंक : 07 (115)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | जीवन-परिचय - प्रो. भारतेन्दु पाण्डेय

04 | अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रे प्रतिपादितस्य महाकाव्यलक्षणस्य..... – प्रो.भारतेन्दुपाण्डेयः

09 | जीवन-परिचय - डॉ. नन्दिता शास्त्री 'चतुर्वेदी'

10 | वेदों में कृषि विज्ञान – डॉ. नन्दिता शास्त्री 'चतुर्वेदी'

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

"विद्वान् सर्वत्र पूज्यते"

स्वगेहे पूज्यते गेही स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।
विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन्।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।।

एषा सूक्तिः जगति पंक्तिशः अन्वर्थतामाप्नोपि। ये किल वाणीविरुदवाचः ज्ञानलब्धये समवाप्तकष्टाः निरन्तरं मातरं गीर्वाणीं सभाजयन्ति तेषां कीर्तिलाभः विजयलाभश्च निश्चप्रचम् समुपजायते।

विद्यैश्वर्यादपरिचितेऽपि देशे विपश्चितः समादरं प्राप्नुवन्ति। ज्ञानेऽस्ति कश्चित् प्रकाशः यस्मिन् समे प्रकाशिताः चमत्कृताश्च भवन्ति । प्रकाशालोकोऽयं आत्यन्तिकेन आलोक्यमाणः यश्च स्वयमेव स्वसत्वं प्रमाणयति, तस्मै अन्यत्प्रमाणस्य आवश्यकता न भवति। यथा –

कस्तूरीमृगः स्वात्मकस्तूरिकापरिमलं शपथं विना प्रमाणयन्ति। यतो हि परिमल एव कस्तूर्याः गन्धप्रमाणे स्वत्वे च प्रमाणभूतोऽस्ति अत एवोच्यते-

यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्।
न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते।।

पूर्वेभ्यः दशाधिकवर्षेभ्योऽखिलभारतीयसंस्कृतसाहित्यसम्मेलनं प्रतिवर्षं विपश्चितां शास्त्रसाधनां प्रवीक्ष्य तेषां ज्ञानैश्वर्यं ज्ञानभूतिञ्च दृष्ट्वा अध्ययने अध्यापने सर्जने प्रकाशने च तेषां परिश्रमं परीक्ष्य तान् सश्रद्धं सभाजयति पुरुस्करोति च।

वत्सरेऽस्मिन् पुरस्कारनिर्णायकसमित्या गहनपरीक्षणानन्तरं राष्ट्रस्य त्रयो मनीषिणः पुरस्कारार्थं चयनिताः। एवन्तेषां विवरणम्-

1. डॉ. नन्दिताशास्त्री 'चतुर्वेदी'
2. प्रो. भारतेन्दुपाण्डेयः
3. डॉ. मधुसूदनमिश्रः

बुधानामेतेषां सततपरिश्रमेण संस्कृतमातुः पूजनेन च नैके शिक्षार्थिनः शोधार्थिनश्च सततं संस्कृतमातरं समर्चन्ति।

सम्मेलनसभासद्भि विशेषज्ञैश्च एतेषां संस्कृतसेवातत्परां बुद्धिं विभाव्य अस्य संवत्सरस्य पुरस्कृतिप्रदानार्थं अमी निर्णीताः।

पुरस्कृतिरुपेण एतेभ्यः प्रशस्तिपत्रं पुरस्काराशिश्च प्रददे। नवम्बरमासस्य द्वितीये दिनाङ्के एकस्मिन् समायोजिते सम्मानसम्मेलने सम्मेलनसभासदां विशिष्टातिथीनाञ्चोपस्थितौ एताः पुरस्कृतयः बुधैः सादरं प्रदत्ताः। प्राज्ञानामर्चनेनास्माकं सम्मेलनमपि आत्मगौरवं स्वाभिमानिताञ्चानुभवति।

जयतु संस्कृतं जयतु भारतम्

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

13 | जीवन-परिचय - डॉ. मधुसुदन मिश्र

14 | विधाता की विशिष्ट कृति-प्रकृति – डॉ. मधुसूदनमिश्र

17 | चिन्मय : ग्रन्थ समीक्षा – डॉ. विजय गुप्ता

19 | चिकित्सानुसन्धानकेन्द्रनिर्माणस्य प्रमुखसिद्धान्ताः – मुकेशशर्मा

22 | भारतीया वेधपरम्परा – ब्रजेशपाठकः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

जनवरी, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 10 अंक : 08 (116)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मसंयम – ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी

06 | गीता में वर्णित स्थितप्रज्ञ के लक्षण – डॉ. भवानीदत्त काण्डपाल

08 | श्रीमद्भगवद्गीता में श्रेय – प्रेय का आधार कर्मयोग – डॉ. रामभद्रदास श्रीवैष्णव

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

गीता मे हृदयं पार्थ

आनन्दकन्दसच्चिदानन्द-गो-गोपीजनवल्लभयोगेश्वरस्य भगवतः श्रीकृष्णस्य मुखारविन्दात् समुद्भूता सकललोककल्याणकारिणी, चतुर्वर्ग-फलप्रदायिनी अमृतसंजीवनीयं श्रीमद्भगवद्गीता । इयं हि मोह-माया-विषादाद्यविद्यानां विनाशिनी, अकर्मण्य-किंकर्तव्यविमूढ-नैराश्यानाञ्च निराशिनी, ज्ञान-कर्म-भक्ति-भावानाञ्च प्रकाशिनी वर्तते । इतोऽप्यधिकं मोक्षप्रदायिविद्यानां रहस्यमयी जीवनीयङ्गीता। भगवद्गिरेयं भास्करस्य प्रभा, सुधाकरस्य सुधा इव धर्म-जाति-वर्ग-सम्प्रदायमाश्रित्य वा कमपि पूजाविधिमनिरूप्य सर्वेषां मनुष्याणां कृते समानार्थप्रकाशिनी विद्यते। अधर्मपराजयस्य धर्मविजयस्य च (यतो धर्मस्ततो जयः) सार्थकसन्देशः, कर्ममीमांसाया अद्भुतोपदेशश्चाऽस्यां पदे-पदे नितान्तं विलसति। अस्याः वैभवम् अनन्तमपरिमेयञ्चास्ति। एकतासमतयोः ज्ञानप्रदं एतादृग्विलक्षणविवेचनं विश्वविविधसाहित्ये कुत्रापि न दरीदृश्यते। घटे समुद्र इव स्वल्पमपि श्रीकृष्णवचनम् अनन्ततत्त्वरहस्यपरिपूर्णम् अनुपममपूर्वञ्च वर्तते ।

प्रस्थानत्रय्यां परिगणितेयङ्गीता उच्चस्तरीयदर्शनशास्त्रात्मिका विद्यते, अस्याः निरन्तरं श्रवणेन, मननेन च नित्यनूतनरहस्यानां समुद्घाटनं जायते । श्रीमद्भगवद्गीतामाश्रित्य अनेकैराचार्यैः विविधाः टीकाः विरचिताः अद्यत्वेऽपि विरचन्तास्सन्ति। गहनग्रन्थार्णवेऽस्मिन् यथायथं तलस्पर्शं कुर्मः तथातथम् अपूर्वादृष्टास्पृष्टाश्रुतामूल्यमणीन् वयं प्राप्नुमः। मानवानां कृते गीतायाः विद्यतेऽनन्तं माहात्म्यम्, येषां जीवने श्रीमद्भगवद्गीतायाः अवतरणं जायते तेषां जीवनं परमं धन्यम्। ''गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः'' इति वचनेन गीतायाः महद्गौरवं वयमनुभवामः। गीतायाः माहात्म्यमवबोधनाय प्रसिद्धाः केचन श्लोकांशाः प्रदर्श्यन्ते–

- **एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतम्।**
- **सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः।**
  पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीताऽमृतं महत् ।
- **एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्।**
- **गीतागंगोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।**

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

10 | श्रीमद्भगवद्गीता में योगविद्या – प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

18 | विवाहसंस्कारः – पूरन अधिकारी

21 | विधायकों ने संस्कृत में शपथ-ग्रहण की

23 | संस्कृतविश्वविद्यालयस्य प्रथमदीक्षान्तसमारोहः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

फरवरी, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 10 अंक : 09 (117)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | वार्ता-श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में आयोजित विशिष्ट व्याख्यानमाला

05 | अयोध्या जी में श्री राम लला की प्राण-प्रतिष्ठा पर माननीय प्रधानमंत्री का संबोधन

10 | रामादिवत्प्रवर्तितव्यम्
– प्रो. शिवशङ्कर मिश्र

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

रामो विग्रहवान् धर्मः, रामो द्विर्नाभिभाषते, वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि, रामोऽस्मि सर्वं सहे, श्रीरामः शरणं समस्तजगतां रामं विना का गतिः? इत्यादीनि वचनानि परमात्मनः श्रीरामस्य दिव्यतां महनीयताञ्च ज्ञापयन्ति। श्रीरामः साक्षात् परमब्रह्म पूर्णावतारश्चास्ति। प्राणिनां कल्याणाय अधर्मोन्मूलनाय धर्मसंस्थापनार्थाय च मानवशरीरं सम्प्राप्य अशेषसद्गुणानां मर्यादानाञ्च स्थापनां चकार। श्रीरामः समस्तात्मानुकूल-प्रतिकूलपरिस्थितौ कदाचिदपि यत्किञ्चिदपि नाकरोन्मर्यादाया अतिक्रमणम् अपितु तस्याः दार्ढ्यं प्रतिपालनं कृतवान्, अतएव भगवान् श्रीरामः मर्यादापुरुषोत्तम इत्यभिधानेन आत्मनोऽन्वर्थताङ्गतः। मर्यादाया अभिप्रायं शिष्टतया, शालीनतया, गौरवेण, प्रतिष्ठया, सम्मानेन, शिष्टाचारेण, नियमलोकाचाराभ्यां चास्ति, एते समेऽपि अर्थाः भगवतः जीविते अक्षरशः चरितार्थतामाप्नुवन्ति । भगवतः श्रीरामस्य पवित्रे चरित्रे पितरौ प्रति कर्तव्यबोधः, भ्रातॄन् प्रति स्नेहभावः, मित्राणि प्रति सुहृद्भावः, परिकरान्प्रत्यौदार्यं, वचनम् प्रति प्रतिबद्धता, उपकारं प्रति कार्तज्ञभावः, जीवान् प्रति कारुण्यभावः प्रतिपदं द्रष्टुं शक्यते। अपरिमितः पराक्रमी सन् परमशान्तः शरणागतान् परमशत्रूनपि अभयं प्रदाय अखण्डसाम्राज्यं दत्तवान्। वानरान्, भल्लूकान्, ऋक्षान् प्रति आत्मीयतायाः प्रदर्शनं, वचनरक्षणाय प्राणोत्सर्गपर्यन्तं तत्परता, पितुः आज्ञानुपालने लवमात्रमपि नोद्भूता मनसोऽम्लानता, सर्वसमर्थः सन् समुद्रं प्रति मार्गप्रदानाय सविनीतयाचना, प्रजापरिपालनाय समस्तसुखानां परित्यागः एते समस्ताः महनीयगुणाः भगवतः श्रीरामस्य पवित्रचरित्रे महार्घमणिरिव देदीप्यमानाः विराजन्ते ।

मित्राणि! अनुपमं मानवजीवितम् अस्य पूर्णत्वं धन-वैभव-पद-प्रतिष्ठा-यान-मान-सम्मान-पर्यन्तमेव नहि परिसीमितमस्ति, अपितु सद्गुणानां जीवने आधानं, सदाचारस्य सन्निधानम्, अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह-यमानां, शौच-सन्तोष-तप-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधान-नियमानां च विधानमेव जीवनस्य श्रेष्ठतां सम्पादयन्ति। जीवनस्य दिव्यता धन्यता च श्रीरामवदाचरणेनैव सम्भवति अतएव शास्त्रेषूद्घोषितम्- **रामादिवत्प्रवर्तितव्यमिति** ।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

15 | श्रीरामचरितमानस में भगवद्गुणवैभव
– अंकुर नागपाल

20 | वर्तमान परिप्रेक्ष्य में श्रीरामचरितमानस की प्रासंगिकता
– प्रो. संगीता मिश्रा

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

मार्च, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 10 अंक : 10 (118)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः
Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | वसन्तपञ्चममी महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह

05 | अबू धाबी में बीएपीएस हिन्दू मन्दिर के उद्घाटन में भारत के प्रधानमन्त्री का सम्बोधन

10 | गर्गसंहितानये महाकाव्यत्व विमर्शः – अवनीशधरद्विवेदी

13 | प्रधानमन्त्री जी ने उत्तर प्रदेश में श्री कल्कि धाम का किया शिलान्यास

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

रामो विग्रहवान् धर्मः, रामो द्विर्नाभिभाषते, वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि, रामोऽस्मि सर्वं सहे, श्रीरामः शरणं समस्तजगतां रामं विना का गतिः ? इत्यादीनि वचनानि परमात्मनः श्रीरामस्य दिव्यतां महनीयताञ्च ज्ञापयन्ति। श्रीरामः साक्षात् परमब्रह्म पूर्णावतारश्चास्ति। प्राणिनां कल्याणाय अधर्मोन्मूलनाय धर्मसंस्थापनार्थाय च मानवशरीरं सम्प्राप्य अशेषसद्गुणानां मर्यादानाञ्च स्थापनां चकार । श्रीरामः समस्तात्मानुकूल- प्रतिकूलपरिस्थितौ कदाचिदपि यत्किञ्चिदपि नाकरोन्मर्यादाया अतिक्रमणम् अपितु तस्याः दार्यं प्रतिपालनं कृतवान्, अतएव भगवान् श्रीरामः मर्यादापुरुषोत्तम इत्यभिधानेन आत्मनोऽन्वर्थताङ्गतः। मर्यादाया अभिप्रायं शिष्टतया, शालीनतया, गौरवेण, प्रतिष्ठया, सम्मानेन, शिष्टाचारेण, नियमलोकाचाराभ्यां चास्ति, एते समेऽपि अर्थाः भगवतः जीविते अक्षरशः चरितार्थतामाप्नुवन्ति। भगवतः श्रीरामस्य पवित्रे चरित्रे पितरौ प्रति कर्तव्यबोधः, भ्रातॄन् प्रति स्नेहभावः, मित्राणि प्रति सुहृद्भावः, परिकरान्प्रत्यौदार्यं, वचनम् प्रति प्रतिबद्धता, उपकारं प्रति कार्तज्ञभावः, जीवान् प्रति कारुण्यभावः प्रतिपदं द्रष्टुं शक्यते। अपरिमितः पराक्रमी सन् परमशान्तः शरणागतान् परमशत्रूनपि अभयं प्रदाय अखण्डसाम्राज्यं दत्तवान्। वानरान्, भल्लूकान्, ऋक्षान् प्रति आत्मीयतायाः प्रदर्शनं, वचनरक्षणाय प्राणोत्सर्गपर्यन्तं तत्परता, पितुः आज्ञानुपालने लवमात्रमपि नोद्भूता मनसोऽम्लानता, सर्वसमर्थः सन् समुद्रं प्रति मार्गप्रदानाय सविनीतयाचना, प्रजापरिपालनाय समस्तसुखानां परित्यागः एते समस्ताः महनीयगुणाः भगवतः श्रीरामस्य पवित्रचरित्रे महार्घमणिरिव देदीप्यमानाः विराजन्ते।

भारतस्य प्रधानमन्त्रिणा श्रीनरेन्द्रमोदीमहाभागेन न केवलं स्वदेशेऽपितु विश्वस्मिन् विश्वे सर्वत्र भारतीयसंस्कृतेः तत्रापि विशेषतः मन्दिरपरम्परायाः पुष्कलेन प्रतिष्ठापनं विहितम्। क्रमेऽस्मिन् काश्याम् उज्जयिन्यां बद्रीनाथधाम्नि केदारनाथधाम्नि विन्ध्याचले मथुरायाञ्च विशिष्टं कार्यं कारितम्। सउदीअरबदेशे आबूधाबीनगरे अत्यन्तमद्भुतं महार्घं भगवतस्स्वामिनारायणस्य मन्दिरं लोकार्पितम्, सद्य एव उत्तरप्रदेशान्तर्गतसम्भलनगरे भगवतः कल्किमन्दिरस्य शिलान्यासकार्यञ्च साधितम्।

मित्राणि! अनुपमं मानवजीवितम् अस्य पूर्णत्वं धन-वैभव- पद-प्रतिष्ठा-यान-मान-सम्मान-पर्यन्तमेव नहि परिसीमितमस्ति, अपितु सद्गुणानां जीवने आधानं, सदाचारस्य सन्निधानम्, अहिंसा- सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रह-यमानां, शौच-सन्तोष-तप-स्वाध्याय- ईश्वरप्रणिधान-नियमानां च विधानमेव जीवनस्य श्रेष्ठतां सम्पादयन्ति। जीवनस्य दिव्यता धन्यता च श्रीरामवदाचरणेनैव सम्भवति अतएव शास्त्रेषूद्घोषितम्- **रामादिवत्प्रवर्तितव्यमिति ।**

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

17 | पतञ्जलिकृत-योगविभागानां समीक्षणम् – श्वेताङ्कभारद्वाजः

19 | ज्ञानपीठपुरस्कारेण समलङ्कृतानां स्वामिश्रीमद्रामभद्राचार्याणां परिचयः

22 | अखिलभारतीयशलाकापरीक्षा

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अप्रैल, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

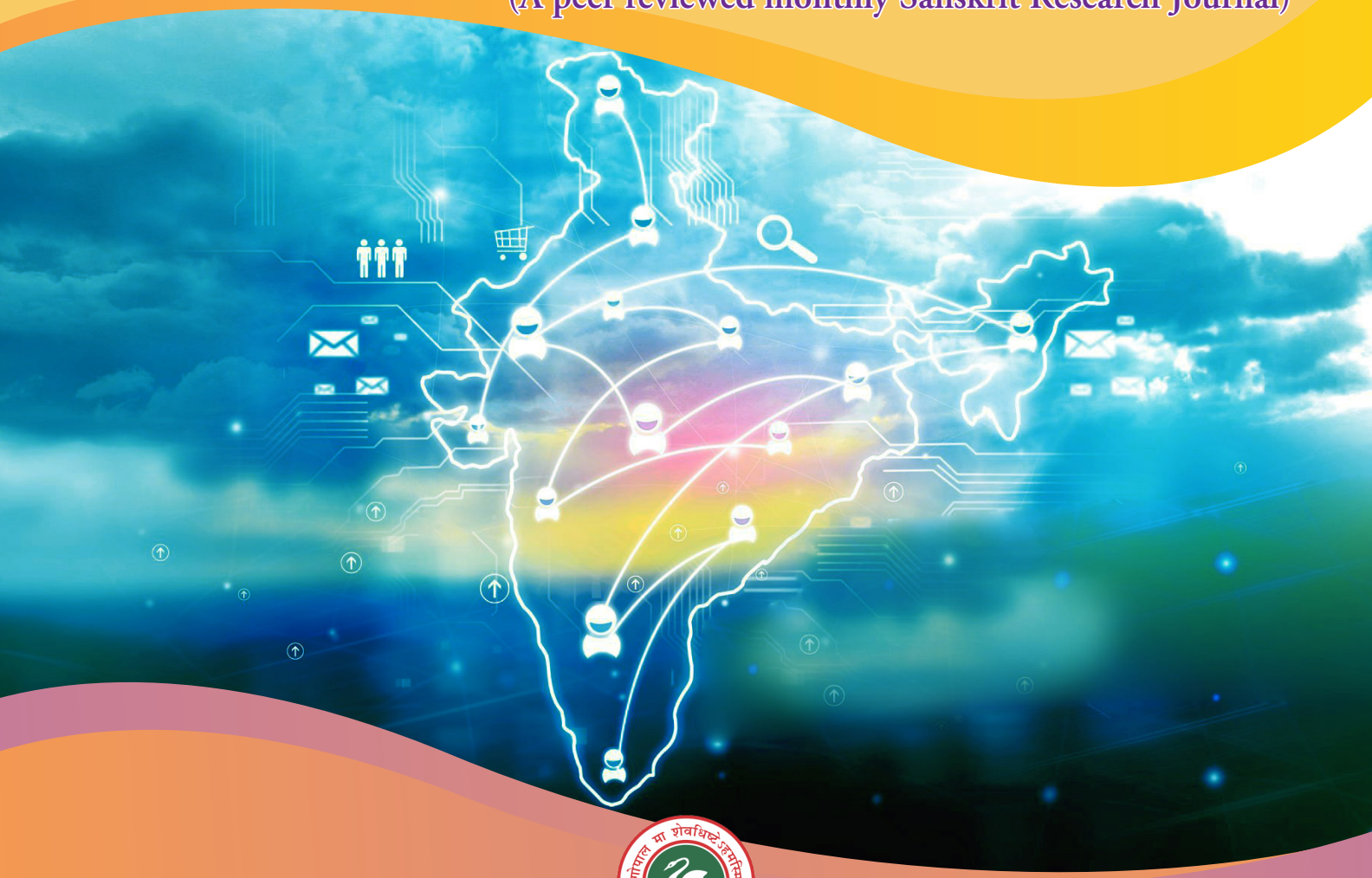

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 10 अंक : 11 (119)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | 'विश्वपथप्रदर्शिका भारतीयज्ञानपरम्परा' विषयिणी अन्तर्राष्ट्रीया संगोष्ठी समायोजिता

05 | जयतु जानकीजानिः रामः –प्रो.बलबहादुरत्रिपाठी

06 | श्रीमतां नरेन्द्रदामोदरदासमोदीमहोदयानां वैज्ञानिकी-दृष्टिः विजयतेतराम्..–प्रो.बलबहादुरत्रिपाठी

07 | उत्तररामायणमहाकाव्यस्य कथावस्तुविमर्शः – डा. अनमोलशर्मा

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भाषया भाषिणां परिचयः सम्प्राप्यते। जनानां संस्कृतिः, जनानां जीवनम्, जनानामाचरणम्, जनानां व्यवहारश्च भाषयैव व्याख्यायते। समेषां राष्ट्राणां काचिद् राष्ट्रभाषा भवति यस्यां राष्ट्रस्य गौरवं, वैभवं, सौष्ठवं च समुदेति। वस्तुतः राष्ट्रस्य शासनदृष्ट्या राष्ट्रभाषा सा एव भाषा भवितुमर्हति या सम्पूर्णे राष्ट्रे व्याप्ता स्यात् अर्थात् राष्ट्रस्य प्रतिकोणं सकलेषु प्रान्तेषु च प्रचलिता परिचिता वा भवेत्। या हि भाषा राष्ट्रभाषापदमलङ्कृता सती सर्वजनैः पक्षपातविरहितेति अनुभूता भवेत्। यस्यां राष्ट्रभाषायां सत्यां राष्ट्रस्य सकलप्रान्तीयाः जनाः एवम्प्रमुदितमनसा अनुभवेयुर्यत् इयम्भाषा अस्मत्प्रान्तीयभाषाजननीत्वेन अस्मत्सहयोगिनी विद्यते।

यस्यां भाषायां जनोपयोगिप्रचुरं साहित्यम्, देशोपयोगिविपुलं साधनम्, रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजुकुटिलनानापथजुषामित्युनक्त्यनुसारेण-राष्ट्रस्य विभिन्नवर्गाणां कृते प्रकामं विविधजीविकाप्रधानसाहित्यं च समुपलब्धं भवेत्। यस्यां भाषायाम्-देशसमृद्धये राष्ट्रसुरक्षायै च प्रचुरम् अन्वेषणीयम् विज्ञानविपुलम् साहित्यम् दृष्टिगोचरं भवेत्। संक्षेपतः यस्यां भाषायां देशस्य निखिलजनानां सर्वविधलौकिकाभ्युदयाय- दण्डविद्या, वार्ता विद्या, भूगोल-खगोल-गणित-चिकित्सा-चित्रकला-मूर्तिकलाप्रभृतिविविध-विद्यानां प्रतिपादनं भवेत्, अथ च पारलौकिककनिःश्रेयसाय नानाविधानि दर्शनसाहित्यानि विपुलमात्रायां जननयनपथगोचराणि स्युः सा एव भाषा राष्ट्रभाषापदमारोहितुं विराजितुं चालम्।

अस्याममरभाषायां वैदिककालस्य प्रत्यक्षफलप्रदा कर्ममीमांसा, उपनिषत्कालस्य ईशावास्यमिदं सर्वं, सर्वं खल्विदं ब्रह्म इति ब्रह्मविषयिणी विवेचना, आरण्यकयुगीना तपःसाधना, रामायणकालिकी नित्यं प्रमुदिताः सर्वे रामे राज्यं प्रशासति इत्यात्मिका प्रजास्वातन्त्र्यधारिणी रामराज्यवर्णना, महाभारतकालिकी शस्त्रास्त्रशक्तिः, गुप्तकालस्य स्वर्णयुगम्, अशोक-कालस्य शान्तिः, विक्रमकालस्य नीतिः, मुस्लिमकालस्य भीतिः एवं व्यास-वाल्मीकि- कालिदास-भासप्रभृतीनां कवीन्द्राणाम् काव्यकालिका, गर्ग-गौतम-कपिल-पतञ्जालि-जैमिनिप्रभृतीनाम्-दर्शनलतिका, भास्कराचार्यप्रभृतिभिः विकासिता गणितसम्बन्धिनी खगोलगतिका, कौटिल्यकामन्दकादीनां विस्थपिता राजशास्त्रार्थशास्त्रसम्बन्धिनी सुमतिश्च निगूहिता विद्यते। अतः इयमेव भारतस्य गौरवध्वजसंवाहिका भारतीयैः समादृता भाषा विराजते। अतीतस्य गौरवम्, उत्थानं, पतनम्, ह्रासः विकासश्चैतत्सर्वमनयैव धारितम् अस्ति। अतः इयमेव भाषा नूनं भारतदेशस्य राष्ट्रभाषापदे सर्वथा विराजमानयोग्या एवं कथने नास्ति संशीतिलेश इति।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

13 | शुक्लयजुर्वेद में वर्णित सूर्य देवता का स्वरूप – आशुतोष भट्ट, श्री अंकित भट्ट

17 | अध्यास का लक्षण और भेद – सत्येश्वर जाना

20 | न्यायदर्शनाभिमतम् अप्रमास्वरूपम् –मिन्टु दे

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

मई, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)

संस्कृत भवन, ए-10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली - 110067

वर्ष : 10 अंक : 12 (120)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | भगवान् महावीर के जन्मकल्याण महोत्सव पर भारत मण्डपम् में माननीय प्रधानमंत्री का सम्बोधन

06 | गंगा अवतरण एवं स्वर्ग की व्यावहारिक अवधारणा – प्रो. संगीता मिश्रा

12 | न्यायशास्त्रे उपाधिविमर्शः –मिलनदत्तः

15 | राजधर्मे राज्ञः षाड्गुण्यम् – सुव्रतकुमारदाशः

17 | अद्वैतवेदान्तपर्यायः शङ्कराचार्यः –अनूपत्रिपाठी

20 | वृतिप्रभाकर ग्रन्थ के सन्दर्भ में जीवस्वरूप का अन्वेषण – तरुण डोभाल

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

जीवने कर्तव्यकर्मणो नितान्तं महत्त्वं वरीवर्ति। कर्तव्यमकुर्वन् कोऽपि जनः केवलमिच्छया न किमपि प्राप्तुं शक्नोति। कर्तव्यकर्मसम्पादनेन लोके सिद्धिं सुखञ्च प्राप्नोति। आमुष्मिकमपि फलं निश्चयप्रचं लभते। अतएव अस्माकं शास्त्रेषु निष्ठया स्वकर्मपालनपरायणतत्परस्य जनस्यैव आर्यपदेन व्यपदेशः-

कर्तव्यमाचरन् काममकर्तव्यमनाचरन्।
तिष्ठति प्रकृताचारे यः स आर्य इति स्मृतः॥ (वशिष्ठस्मृतिः)

The man who controlling his desires performs his duties in accordance with the norms of the Great illusion (Prakruti) and the scriptures, refraining from actions prohibited by the scriptures is called an 'Aryan'.

कर्तव्यस्याभिप्रायः करणीयकर्मसमाचरणम्, अर्थात् शास्त्रदृष्ट्या अस्मभ्यं निर्धारितं यदाचरणीयं कर्म तदेव कर्तव्यम्। प्रत्येकं प्राणिनः कर्तव्यं स्थान-काल-परिस्थित्यनुरूपं सुनिश्चितं भवति। समाजस्य प्रत्येकं जनाः यावत्पर्यन्तं कर्तव्यानुरूपं कर्म समाचरन्ति तावत् न कापि समस्या न वा प्रतिकूलता परञ्च यदेव स्वकर्तव्यपरिधिमतिक्रम्य कश्चन जनः अकर्तव्याचरणे तत्परो भवति तदाचिरमेवाशान्तिः, कलहः, रागद्वेषप्रभृतयो दोषाः समुत्पद्यन्ते, अतः यथाशास्त्रं स्वनिर्धारितं कर्म एव सर्वदा सर्वैस्समाचरणीयम्। भगवता श्रीकृष्णेनापि श्रीमद्भगवद्गीतायामेवमुद्घोषितम्-

स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः। (18.45)

विश्वमिदं कर्मणा नियन्त्रितं दृश्यते, कर्मणः संस्कार एव मानवानां मूलशक्तिः। कर्मणैव मानवानां भाग्यनिर्मितिर्भवति। एतत्प्रभावादेव जीवः विभिन्नासु देव-मानव-पशु-तिर्यक्-सरीसृपप्रभृतियोनिषु नितान्तं परिभ्रमति। लोकलोकान्तरं व्रजति आत्मकल्याणञ्च लभते। कर्मफलभोगार्थं जीवानां तदनुरूपं जन्म जायते। सुखं, दुःखं, लाभः, हानिश्चैतत्सर्वं कर्मनियन्त्रितं भवति। कर्म शुभं भवेत् अशुभं वा भवेत् तस्य शुभम् अशुभं वा फलमवश्यमेव भोक्तव्यं भवति। अस्माकं शास्त्रेषु प्रतिपादितान्येवंविधानि वहुवचनानि-

जो जस करई सो तस फल चाखा ।
कर्मप्रधान विश्व करि राखा ॥
काहु न कोउ सुख दुःख कर दाता।
निज कृत करम भोगु सब भ्राता ॥
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
नाऽभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥
स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते ॥
सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रे ग्रथितो हि लोकः॥

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

जून, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

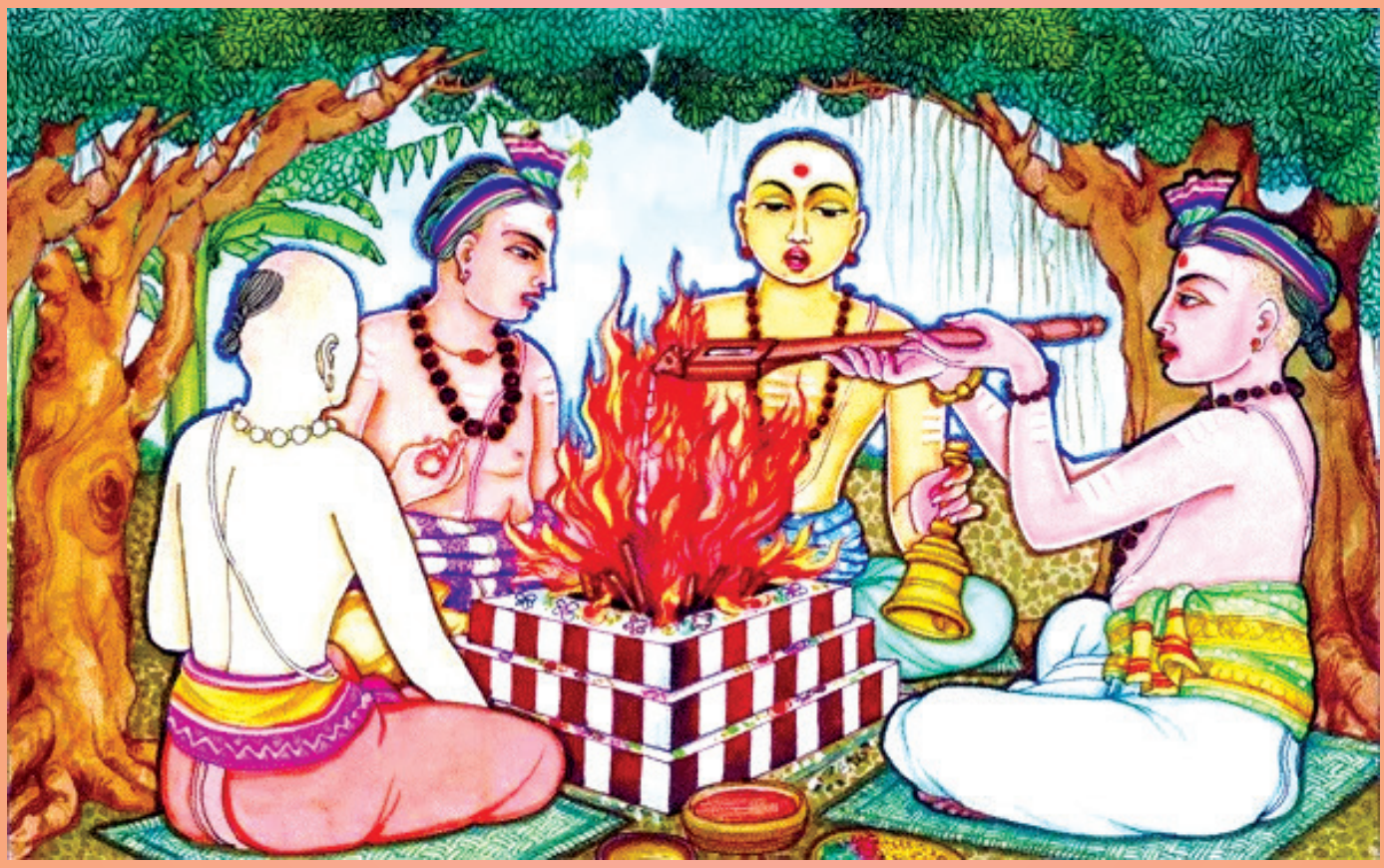

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 11 अंक : 1 (121)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | विशिष्ट व्याख्यान एवं अभिनन्दन समारोह का भव्य आयोजन

06 | पाणिन्यष्टाध्याय्यां कालविमर्शः – सूर्यप्रकाशनौटियालः

08 | वैदिकविज्ञानदृष्ट्या शरीरगतनाडीनां स्वरूपम् – अशोककुमारशर्मा

सम्पादकीयम्

धन्येयं भारतभूमिः, यत्र वैदिकज्ञान-विज्ञानस्य समुद्भवः। तत्रापि विशेषतो यज्ञसंस्कृतेः समुत्पत्तिः। अस्माकं संस्कृतौ चिन्तने च यज्ञस्य महत्त्वं नितरां वरीवर्ति। सनातनजीवनपद्धतौ सन्ध्यावन्दनादिकृत्यकर्म इव यज्ञोऽप्यनिवार्यं कर्तव्यकर्म विद्यते। आत्माभ्युदये यज्ञस्य महती भूमिका विराजते, अतएव येषां जीवने यज्ञस्य प्रतिष्ठा विद्यते तेषां जीवनमत्यन्तं समुन्नतं दरीदृश्यते लोके।

मित्राणि! देशोऽयं श्रुति-स्मृति-पुराणानां पुण्यभूमिः। अस्माकं ऋषिभिः तपश्चर्याबलेन वैदिकमन्त्राणां साक्षात्कारं विधाय विश्वकल्याणं कल्पितम्। अरण्ये निवसन्तः सन् लोकाय यज्ञानुष्ठानस्य सन्देशं विहितवन्तः स्वयमपि जीवने सततमाचरितवन्तः।

ऋषीणां जीवनं यज्ञमयमासीत्, प्रकृत्या सह तेषामन्तःतादात्म्यमासीदतएव तेषां जीवनं नितान्तं निरामयमानन्दमयञ्चासीत्। यज्ञस्य निरन्तरमनुष्ठानेन अस्माकं जीवने दैवीभावः समुदेति तदुक्तं मनुस्मृतौ गीतायाञ्च-

यज्ञशेषं तथाऽमृतम् (मनुस्मृतिः)
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः (गीता)

येन अनुष्ठानेन इन्द्रादयो देवाः सुप्रसन्नाः स्युः, स्वर्गादिलाभो भवतु, जगतः कल्याणं भवतु, निखिलतापत्रयाणां प्रशमनं भवतु तत्कर्मविशेषो नाम यज्ञः। सुस्पष्टतया यज्ञस्य भावः एवं स्पष्टयितुं शक्यते-

- **येन सदनुष्ठानेन इन्द्रप्रभृतयो देवाः सुप्रसन्नाः सुवृष्टिः कुर्युस्तद् यज्ञपदाभिधेयम्।**
- **येन सदनुष्ठानेन स्वर्गादिप्राप्तिः सुलभा स्यात् तद् यज्ञपदाभिधेयम्।**
- **येन सदनुष्ठानेन सम्पूर्णं विश्वं कल्याणं भजेत् तद् यज्ञपदाभिधेयम्।**
- **येन सदनुष्ठानेन आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-तापत्रयोन्मूलनं सुकरं स्यात् तद् यज्ञपदाभिधेयम्।**

'यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म' इत्यादिवचनेन शास्त्रेषु यज्ञस्य माहात्म्यं निगदितमस्ति। यज्ञप्रभावादेव सर्वाः रिद्धयः जायन्ते, सकलाः सिद्धयः समुपलभ्यन्ते, सकलाश्च कामनाः प्रपूर्यन्ते। अतो यज्ञः सकललोकमंगलकारकः, सर्वथा हितसम्पादकः, जडचेतनजगत्समुद्धारकश्चेति सततं विमृश्य यथाशास्त्रं यथासामर्थ्यं सर्वैरपि भारतीयज्ञानपरम्परापरिपोषकैः शास्त्रविद्भिश्च यज्ञोऽयं निरन्तरमनुपालनीयः आचरणीयश्चेति शम्।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

13 | शनिग्रहचारफलविमर्शः – प्रियङ्करमिश्रः

16 | श्रीकुलयशस्विशास्त्रिकृते योगमकरन्दे... – निराली

21 | गृह्यसूत्रे वर्णितपञ्चमहायज्ञानां विमर्शः – आशुतोषमणित्रिपाठी

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

जुलाई, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः,
पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं,
मोक्षमूलं गुरोः कृपा ॥

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 11 अंक : 2 (122)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | लोकसभायां नवनिर्वाचिताः द्वाविंशतिः (22) लोकसभासदस्याः संस्कृतेन प्रतिज्ञानं स्वीकृतवन्तः

05 | भारतीयदर्शनं तद्वैशिष्ट्यञ्च – अमितकुमारयादवः

10 | कर्मेशस्य महादशाफलविचारः – अमितशर्मा

13 | विश्वघस्र पक्ष या तेरह दिनों का पक्ष – ब्रजेश पाठक

17 | हरिनामामृत व्याकरण में समास .....– प्रभाकर सुयाल

21 | नालन्दा विश्वविद्यालय का नया परिसर विश्व को भारत के सामर्थ्य का परिचय देगा : बिहार में पीएम मोदी जी

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

समस्ते भारते सद्य एव सुसम्पन्नं लोकसभा-निर्वाचनम्। अस्माकं देशे पञ्चशतोत्तरत्रिचत्वारिंशत् (543) सदस्याः लोकसभायां लोकस्य जनसमूहस्य च प्रातिनिध्यं भजन्ते। समेऽपि जनप्रतिनिधयः पृथक्-पृथक् क्षेत्रकारणात् विविध-भाषाभाषिणो भवन्ति। एते जननायकाः जनानां समस्या समाधानाय संसदि हिन्दीभाषया, संस्कृतभाषया, आङ्ग्लभाषया, तत्तत्क्षेत्रीयभाषया च भाषन्ते। एकं तथ्यमत्र सर्वैरपि चिन्तकैर्नूनं चिन्तनीयं यदस्य देशस्य मूलभाषा संस्कृतभाषा विद्यते, अर्थात् अस्माकं देशः संस्कृतभाषया भाषते, संस्कृतेनैवास्माकं देशस्य परिचयः समग्रे विश्वे परिज्ञायते। किमधिकं संस्कृतसाहित्यवैभवादेव भारतस्य बोधः, राष्ट्रभावनासम्बोधः, समानजीवनदर्शनस्य परिचयः, पारलौकिकदृष्टेरुन्मीलनम्, भारतस्य सांस्कृतिक-राजनैतिक-आध्यात्मिकसिद्धान्तानां परिज्ञानम्, जीवनमूल्यानां नैतिक-मूल्यानाञ्चावबोधः, एकत्वबुद्धिः, समत्वबुद्धिः, धर्मभावनायाः समादरः जीवने तत्प्रयोगः, सर्वे भवन्तु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्ब-कमित्यादिकल्याणकामनाश्च सञ्जायन्ते।

संस्कृतस्यामुमेवानितरसाधारणमाहात्म्यमुररीकृत्य अस्माकं देशस्य द्वाविंशतिः (22) जनप्रियाः नवनिर्वाचिताः लोकसभा-सदस्याः संस्कृतभाषया प्रतिज्ञानं स्वीकृतवन्त इति वृत्तान्तं संस्कृत-समाराधकानामन्तःकरणमानन्देन प्रपूरयति। एतेन ज्ञायते यन्न केवलं संस्कृतविदुषामेव हृदि इयं भाषा प्रवहत्यपितु सामान्यजनानां जाति-धर्म-लिंग-भेद-शून्यानामाबालवृद्धानाम पि हृदि अस्माकं संस्कृतमाता सततं स्पन्दते। संस्कृतमस्ति चेद् भारतं प्रवर्धते, नास्ति चेत् भारतं कल्पयितुं न शक्यते।

मित्राणि! संस्कृते अस्माकमैतिह्यम्, अस्माकं संस्कृतिः, अस्माकं जीवनपद्धतिः, अस्माकं धर्मः, अस्माकं सदाचारः संरक्षितो विद्यतेऽतः सर्वैरपि भारतसूनुभिः संस्कृतं सततं सेवनीयं संरक्षणीयमनुकरणीयञ्च। संस्कृतकारणादेव भारतस्य 'भारत' इति संज्ञाभिधानमतः भारताय संस्कृतमङ्गीकरणीयमिति निवेदनम्।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

अगस्त, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 11 अंक : 3 (123)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | संस्कृतसाहित्ये काव्यस्वरूपविमर्शः – दीपकमिश्रः

07 | पाणिनीय व्याकरण व भोज व्याकरण... – सोनू दीक्षित

11 | वैदिक तथा पौराणिक वाङ्मय में कर्म सिद्धान्त – डॉ. प्रेम बल्लभ देवली

14 | गान्धिनः एकादशव्रतम् – शिखा मिश्रा

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

भाषया भाषिणां परिचयः सम्प्राप्यते। जनानां संस्कृतिः, जनानां जीवनम्, जनानामाचरणम्, जनानां व्यवहारश्च भाषयैव व्याख्यायते। समेषां राष्ट्राणां काचिद् राष्ट्रभाषा भवति यस्यां राष्ट्रस्य गौरवं, वैभवं, सौष्ठवं च समुदेति। वस्तुतः राष्ट्रस्य शासनदृष्ट्या राष्ट्रभाषा सा एव भाषा भवितुमर्हति या सम्पूर्णे राष्ट्रे व्याप्ता स्यात् अर्थात् राष्ट्रस्य प्रतिकोणं सकलेषु प्रान्तेषु च प्रचलिता परिचिता वा भवेत्। या हि भाषा राष्ट्रभाषापदमलङ्कृता सती सर्वजनैः पक्षपातविरहितेति अनुभूता भवेत्। यस्यां राष्ट्रभाषायां सत्यां राष्ट्रस्य सकलप्रान्तीयाः जनाः एवम्प्रमुदितमनसा अनुभवेयुर्यत् इयम्भाषा अस्मत्प्रान्तीयभाषाजननीत्वेन अस्मत्सहयोगिनी विद्यते।

यस्यां भाषायां जनोपयोगिप्रचुरं साहित्यम्, देशोपयोगिविपुलं साधनम्, रुचीनां वैचित्र्यात् ऋजुकुटिलनानापथजुषामित्युनक्त्यनुसारेण-राष्ट्रस्य विभिन्नवर्गाणां कृते प्रकामं विविधजीविकाप्रधानसाहित्यं च समुपलब्धं भवेत्। यस्यां भाषायाम्-देशसमृद्धये राष्ट्रसुरक्षायै च प्रचुरम् अन्वेषणीयम् विज्ञानविपुलम् साहित्यम् दृष्टिगोचरं भवेत्। संक्षेपतः यस्यां भाषायां देशस्य निखिलजनानां सर्वविधलौकिकाभ्युदयाय- दण्डविद्या, वार्ता विद्या, भूगोल-खगोल-गणित-चिकित्सा-चित्रकला-मूर्तिकलाप्रभृतिविविध-विद्यानां प्रतिपादनं भवेत्, अथ च पारलौकिककनिःश्रेयसाय नानाविधानि दर्शनसाहित्यानि विपुलमात्रायां जननयनपथगोचराणि स्युः सा एव भाषा राष्ट्रभाषापदमारोहितुं विराजितुं चालम्।

अस्याममरभाषायां वैदिककालस्य प्रत्यक्षफलप्रदा कर्ममीमांसा, उपनिषत्कालस्य ईशावास्यमिदं सर्वं, सर्वं खल्विदं ब्रह्म इति ब्रह्मविषयिणी विवेचना, आरण्यकयुगीना तपःसाधना, रामायणकालिकी नित्यं प्रमुदिताः सर्वे रामे राज्यं प्रशासति इत्यात्मिका प्रजास्वातन्त्र्यधारिणी रामराज्यवर्णना, महाभारतकालिकी शस्त्रास्त्रशक्तिः, गुप्तकालस्य स्वर्णयुगम्, अशोक-कालस्य शान्तिः, विक्रमकालस्य नीतिः, मुस्लिमकालस्य भीतिः एवं व्यास-वाल्मीकि- कालिदास-भासप्रभृतीनां कवीन्द्राणाम् काव्यकालिका, गर्ग-गौतम-कपिल-पतञ्जालि-जैमिनिप्रभृतीनाम्-दर्शनलतिका, भास्कराचार्यप्रभृतिभिः विकासिता गणितसम्बन्धिनी खगोलगतिका, कौटिल्यकामन्दकादीनां विस्थपिता राजशास्त्रार्थशास्त्रसम्बन्धिनी सुमतिश्च निगूहिता विद्यते। अतः इयमेव भारतस्य गौरवध्वजसंवाहिका भारतीयैः समादृता भाषा विराजते। अतीतस्य गौरवम्, उत्थानं, पतनम्, ह्रासः विकासश्चैतत्सर्वमनयैव धारितम् अस्ति। अतः इयमेव भाषा नूनं भारतदेशस्य राष्ट्रभाषापदे सर्वथा विराजमानयोग्या एवं कथने नास्ति संशीतिलेश इति।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

17 | भारतीय परम्परा में वास्तुशास्त्र .... – मुकेश शर्मा

21 | प्राचीन भारतीय साहित्य हमारी धरोहर – विभूति नारायण ओझा

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

ISSN 2395-3055

सितम्बर, 2024 ₹ 25

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

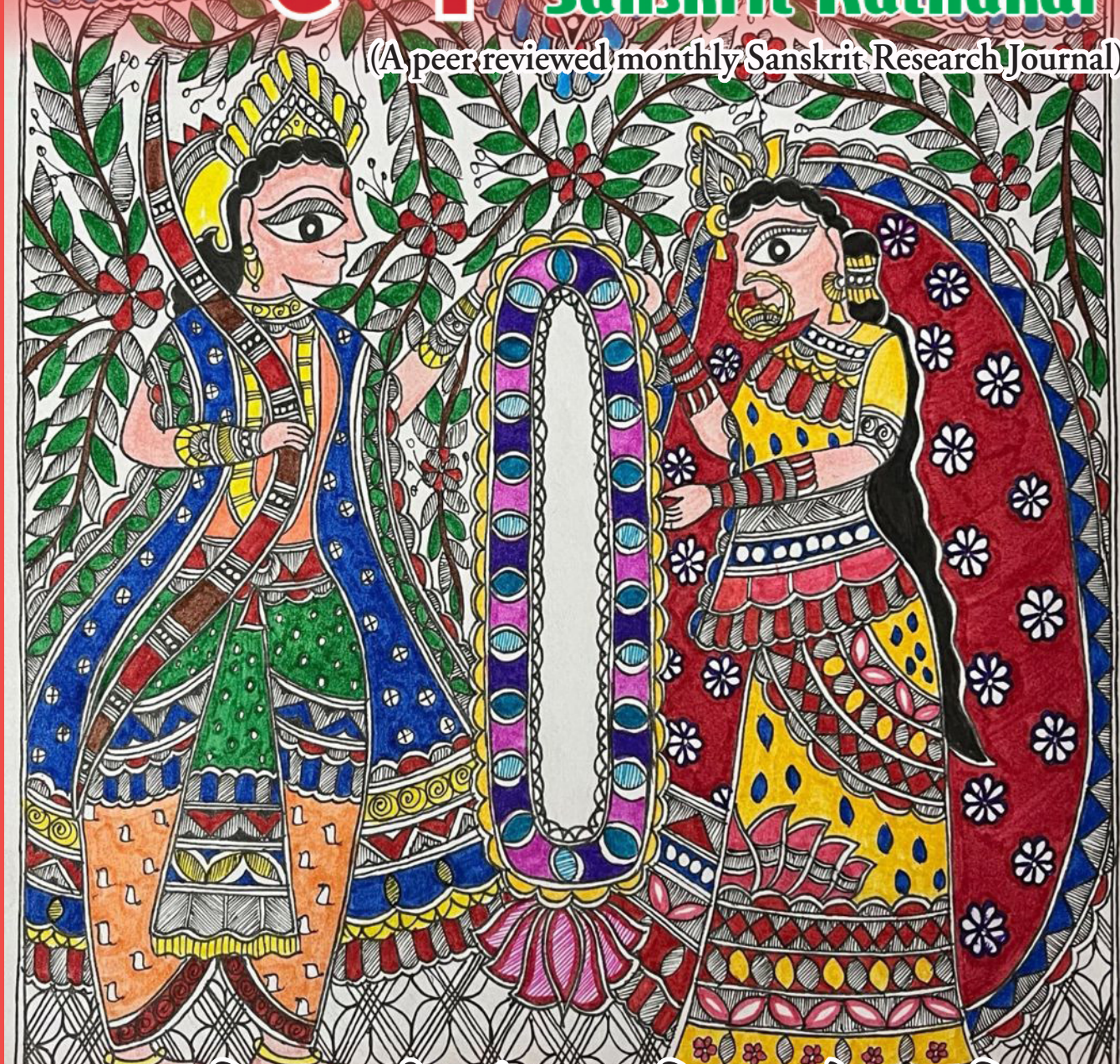

This cover page features a beautiful Mithila painting depicting the Ram-Sita Vivah, designed by Aadya Bhardwaj, an Actuarial Science student at Bayes School, London.

अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि0)
संस्कृत भवन, ए–10, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग,
नई दिल्ली – 110067

वर्ष : 11 अंक : 4 (124)

विशेषज्ञ समिति द्वारा समीक्षित संस्कृत की एक श्रेष्ठ मासिक शोधपत्रिका

संस्कृत-रत्नाकरः

Sanskrit Ratnakar

(A peer reviewed monthly Sanskrit Research Journal)

स्वामित्व	:	अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन (रजि.)
अध्यक्ष	:	प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय अखिल भारतीय संस्कृत साहित्य सम्मेलन
प्रधान सम्पादक (पदेन)	:	रमाकान्त गोस्वामी
सम्पादक	:	प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
सह-सम्पादक	:	डॉ. विजय गुप्ता
शोधपत्रपरीक्षक मण्डल	:	प्रो. केदार प्रसाद परोहा (नई दिल्ली) प्रो. रमाकान्त पाण्डेय (जयपुर) प्रो. रामसलाही द्विवेदी (नई दिल्ली) प्रो. रामनारायण द्विवेदी (काशी) प्रो. विनय कुमार पाण्डेय (काशी)
व्यवस्थापक मण्डल	:	आर. एन. वत्स 'एडवोकेट'
ग्राफिक डिजाईनर	:	विश्वकर्मा शर्मा
संपादकीय कार्यालय	:	संस्कृत भवन, ए-10, अरुणा आसफ अली मार्ग, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-67
संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक	:	रमाकान्त गोस्वामी, महासचिव, अ.भा.सं. सा.स.
दूरभाष	:	011-41552221, मो.- 9818475418

Website : aisanskritsahityasammelan.com
E-mail : sanskritratnakar01@gmail.com

नियम एवं निर्देश :-

- संस्कृत-रत्नाकरः में प्रकाशित लेख लेखकों के अपने व्यक्तिगत विचार हैं। इसके लिए "संस्कृत-रत्नाकरः" जिम्मेदार नहीं है।
- प्रकाशितशोधसामग्री लेखकस्यास्ति अतः लेखस्य मौलिकतादिविषये सम्पूर्णं दायित्वं लेखकस्य भविष्यति न तु सम्पादकस्य न वा प्रकाशकस्य।

विषय-सूची

03 | शिक्षक दिवस – डॉ. विजय गुप्ता

04 | राष्ट्रीय प्रेरणा के स्रोत : महर्षि दयानन्द – श्री पं. वेदप्रकाश विद्यावाचस्पति

07 | दो वर्ष पूर्व की मधुर स्मृति – गिरिवर गिरि गोस्वामी निर्मोही

10 | संस्कृत और प्राकृत भाषा का स्वरूप.. – डॉ. विजय गुप्ता

(कवर सहित पृष्ठ संख्या 24)

सम्पादकीयम्

- संस्कृतं संस्कृतेर्मूलं ज्ञानविज्ञानवारिधिः।
  वेदतत्त्वार्थसंजुष्टं लोकालोककरं शिवम् ॥
- संस्कृतं संस्कृता वाणी सर्वज्ञानमयं हि तत् ।
  संस्कृत इति वाञ्छा चेत् संस्कृतं किन्न सेव्यते ॥
- संस्कृतं संस्कृतिश्चौव श्रेयसे समुपास्यताम् ।

इत्यादि वचांसि प्रतिपदं संस्कृतस्योत्कर्षप्रकर्षं प्रकाशयन्ति। संस्कृतं कस्मै न रोचते? योऽसंस्कृतः, असभ्यः, अकुलीनः, संस्कारहीनः, पशुवृत्तिपीनः विचारविहीनो वा, तस्मै न रोचते संस्कृतम्। अन्यथैतनमृतमयं मधुरातिमधुरं फलं लब्धुं को मतिमान् यत्नं नाचरेत् यतोहि-

- अमृतं मधुरं सम्यक् संस्कृतं हि ततोऽधिकम् ।
  देवभोग्यमिदं तस्माद्देवभाषेति कथ्यते ॥
- येन प्रेयस्तथा श्रेया येन जीवनपद्धतिः ।
  विश्वात्मदर्शनं येन तज्ज्योतिस्त्वेव संस्कृतम् ॥

संस्कृतं भारतस्य प्राणभूतं तत्त्वम्। इयं भारतीयसंस्कृतेर्मातृभूमिः। एतत्प्रभावादेव निखिलेऽस्मिञ्जगति प्रतिष्ठितास्माकं भारतीया संस्कृतिः। संस्कृतं संस्कृतिश्चोभयोः परस्परं सम्पूरकं, संस्कृतं विना न संस्कृतिः न वा संस्कृतिं विना संस्कृतम्।

विश्वस्मिन् विश्वे सर्वभाषाविलक्षणं संस्कृतम्। संस्कृतं न केवलं भाषापितु संस्कृतमस्माकं जीवनम, संस्कृतमस्माकं चरित्रम, संस्कृतमस्माकं जीवनमूल्यम, संस्कृतमस्माकं चिन्तनम्, संस्कृतमस्माकं ज्ञानविज्ञानवैभवम्, संस्कृतमस्माकमैतिह्यम, संस्कृतमस्माकं दृष्टिः, संस्कृतमस्माकं सृष्टिः, संस्कृतमेवास्माकमाध्यात्मिकं भाषामूलम्। किमधिकं संस्कृतमस्मासु संस्कारं जनयति, ऐक्यं सम्पादयति, विश्वबन्धुत्वं बोधयति, मित्रभावमाविष्करोति, संगच्छध्वं संवदध्वमिति भावं दृढीकरोति, सर्वेऽपि सुखिनः सन्त्वित्यौदार्यं सन्दिशति। इयमत्यन्तं लोकोपकारिका, सकलव्यवहारबोधिका, सदाचरण- सद्भावसंवाहिका, लोकलोकोत्तरसंसाधिका, भारतभासिका आह्लादजनिका सती सर्वभाषाशिखरे विद्योतते।

देववाणीति यल्लोके बुधैस्सर्वैः प्रगीयते।
जननी सर्वभाषाणां संस्कृतं तन्महीयते ॥

संस्कृतबलेनैव जगद्गुरुत्वमस्मद्देशस्य एतन्महिम्नैव भारतं वस्तुतो भारतमिति।

- संस्कृतेनैव सुसम्पुष्टं भारतं भारतमुच्यते।
- भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः, शोधविभागाध्यक्षः
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

14 | भारतीयशास्त्रेषु हिन्दूशब्दनिर्वचनम् – श्रीसूर्यकान्तपाण्डेयः

17 | एकोद्दिष्ट-श्राद्धव्यवस्था – रञ्जुक्ता रथ

21 | श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित उत्कर्ष महोत्सव